Regi. No.: MP HIN / 2006 / 16764 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. भोपाल / 632 /2018 - 20

वीर निर्वाण संवत २५४५
माह- जन.+ फरवरी २०१९
अङ्क -१० (१९१)
वर्ष -१३ (१८)

विरागवाणी

मासिक

आशीर्वाद

संत शिरोमणि प.पू. आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

प्रेरक : ब्र. श्री विशल्य भारती जी
निर्देशन : मुनि श्री विवर्धन सागर जी महाराज
सम्पादक : इंजी.आनन्दकुमार जैन, 9425620668
175, एम. गौतम नगर, भोपाल
सहसम्पादक : श्री देवकुमार जैन गुड़ा
४९/सी, कस्तूरबा नगर, भोपाल
मो. 09425608438
परामर्श मण्डल : डॉ. प्रो. सनत जैन, जयपुर
: श्री अनिल सेठिया महुआ (भीलवाड़ा)
: श्रीमति प्रमिला जैन 'पम्मी' कोटा
: प्रो.श्री मयंक जैन, टीकमगढ़
: श्री मुकेश जैन, पथरिया
: श्री कपूरचंद बंसल, जतारा
प्रकाशक एवं प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
कार्यालय : जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३
☎: 0755-2789703, मो.9425016879
Email-viragvani.jain@yahoo.com
(बैंक ड्राफ्ट 'विरागवाणी'के नाम से भेजें) पत्रिका के सम्बंध में पत्राचार एवं रचनाएँ कार्यालय के पते पर भेजें
कार्पोरेशन बैंक : A/c No. 065300201000101
IFSC CODE : CORP0000653
स्वामित्व : श्री सम्यग्ज्ञान दि. जैन विराग विद्यापीठ, भिण्ड (म.प्र.)

इस वेबसाइट से गणा. विरागसागर जी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। www. ganacharyaviragsagar.com

विरागवाणी सदस्यता

परम शिरोमणी संरक्षक	-	५१०००/-
शिरोमणि संरक्षक	-	११०००/-
परम संरक्षक	-	५०००/-
संरक्षक	-	३१००/-
दस वर्ष	-	११००/-
मूल्य	-	१०/-

- **समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा।**
- **प्रकाशित विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं हैं। वह लेखक के अपने विचार हैं।**

पल्लव दर्शिका

❖ **सम्पादकीय :** **पल्लव**
- मोक्ष पथ के उन्नायक : इंजी.आनन्दकुमार ४
- आत्मचिन्तन ५
- जिनोपदेश : श्रमणमुनि विश्वस्तसागर जी ५

❖ **प्रवचन एवं लेख**
- सम्मेद शिखर वंदन...: श्री विरागसागर महाराज ६
- आप दीर्घ रत्नत्रयधारी.... : प.पू.श्री विरागसागर ९
- सन्त जीवन्त शास्त्र हैं,... : आ.विनम्रसागर जी १२
- अजर-अमर आत्मा का...:आ.श्री विमर्शसागर १२
- ये तीर्थंकर मैं केवली...: संभवसागरजी महाराज १३
- माता-पिता के चरण छूना : संस्कार सुरभि से १४
- लघु शान्तिधारा : प.पू.श्री विरागसागर महाराज १६
- सुमतिनाथ अविचल कूट :आ.विबोधश्री माताजी १८
- अभियान को आगे बढ़ाने ..: श्रीमती नीरा यादव १८
- आज के श्रवण कुमार : आर्यि.वियुक्तश्री माताजी १९
- जीव जन्तुओं द्वारा रात्रि...: आर्यि. विसंयोजनाश्री २०
- षडावश्यक और पर्यावरण सन्तुलन २१
- करो वंदना, हरो क्रन्दना : आ. विशुद्धसागर जी २४
- वास्तु में भगवान : २५
- साधुओं की ओर से भावभीनी विदाई एवं उद्गार ३३
- दण्ड भी हो जाता कम... आ. विदूषीश्री माताजी ३६
- आध्यात्मिक शंका-समाधान :श्री विरागसागर जी ३७
- विराग सेतु ... : डॉ. उदयचन्द्र जैन ३९

❖ **कविताएँ**
- राष्ट्र-भावना : गणा. श्री विरागसारग जी महाराज २६
- शिखर जी यात्रा : आर्यिका विकुन्दनश्री माता जी २७
- विराग गुरु का जब यहाँ... श्रीमती ऊषा जैन २८
- ऊँ जिनाय नमः महेन्द्र कुमार जैन २९
- जियो और जीने दो : आ. श्री विशुद्धसागर जी २९
- विराग सिन्धु की महिमा... : कांति कुमार जैन ३०
- विरागसागर नाम अब हमें... : पं. बृजेन्द्र कुमार ३१

❖ **स्वास्थ्य जगत**- घी सर्वोत्तम दवा ३६
❖ **समाचार** ४४
❖ **विराग वर्ग पहेली** ५०

संपादकीय

मोक्ष पथ के उन्नायक

इंजी. आनन्द कुमार जैन

दीक्षा लेते ही संसारी गृहस्थावस्था का नाम, गांव सब बदल जाता है उसका दूसरा जन्म हो जाता है दीक्षा लेने वाला व्यक्ति गृहस्थ जीवन के समस्त अस्तित्व को विसर्जित कर देता है तब त्यागी व्रती दीक्षार्थी सन्यासी कहलाता है। यदि अपने अतीत के संबंध को साथ में लेकर के चलता है तब तक वह त्यागी-व्रती नहीं कहलाता। जब गृहस्थ जीवन से पूर्ण मर जाता है तब त्यागी सन्यासी बन पाता है, प्रार्थना परमात्मा तक पहुँचने का नियामक हेतु है, प्रार्थना के मार्ग को स्वीकार किये बिना आज तक कोई भी व्यक्ति परमात्मा नहीं बना। भक्त भक्ति में लीन होता है तो भगवान स्वयं प्रकट होते हैं। भक्त को भक्ति करते समय कोई और दिखाई दे रहा है तो समझों उसे अभी भगवान दिखाई नहीं दे रहा है। रत्नत्रय की आराधना में वीतरागी संतों को नि:स्पृहता सदैव अनुपमेय रही है पृथ्वी पर जितने धर्म हैं उनके उपासक संतों ने दिगम्बर जैन पंथ की साधना और सिद्धान्तों को उन्मुक्त हृदय से सर्वोपरि सत्य स्वीकार किया है। आप देखिये जब प.पू. चारित्र चक्रवर्ती १०८ आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की समाधि के उपरांत पट्ट परम्परा पर आचार्य पद हेतु समाज के प्रमुख श्रावक आपके पास (श्री महावीर कीर्ति जी के पास) सविनय प्रार्थना करने पहुँचे तो आपने जो उत्तर दिया वह सभी के लिए परम आर्दश तथा अनुकरणीय है आप बोले मेरे पास तो पूर्व से ही गुरुवर श्री आदिसागर जी महाराज का दिया हुआ (पट्ट परम्परागत) आचार्य पद पहले से ही है, में अब आगे और भार नहीं उठा सकता अच्छा हो, आप लोग आचार्य श्री जी के ही शिष्यों में से किसी को यह उत्तरदायी पद सौंपकर जिनशासन की प्रभावना में सहभागी बनें। यह थी उनकी दूर दृष्टि एवं हृदय की विशालता। प्रार्थना चाहे क्षण भर भी करो पर सच्ची करो। झूठी प्रार्थना से कुछ भी नहीं होने वाला। झूठी प्रार्थनाएँ प्रभु से नहीं मिलती जैसे नकली नोटों से व्यापार नहीं होता। नकली प्रार्थनायें स्वप्न की तरह हैं ये केवल मन को बहला सकती हैं मंजिल तक नहीं पहुँच सकती। सभी सत्य प्रार्थना को करें तथा परमात्म स्वरूप को प्राप्त कर सकें।

परम पूज्य १०८ गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ने अपने प्रवचन में कहा कि संसार में वे माता पिता धन्य हैं जिन्होंने अपने बच्चों में सुसंस्कार दिये हैं। इनसे भिन्न माता पिता को साहित्य कारों ने कहा है-**'माता शुत्र पिता बैरी, यत्र बालो न पाठितः'**

अगर माँ, माँ होकर भी बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं देती है और पिता यदि बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं देते, धर्म के चार अक्षर नहीं सिखाते तो माँ और पिता शत्रु और बैरी की तरह कहे गये हैं। बच्चों को केवल जन्म देना ही पर्याप्त नहीं है। यदि आप बच्चों को जन्म देते हैं तो उन्हें अच्छे सांचे में ढ़ालना भी आपका कर्तव्य है। अपने बच्चे को एक ऐसे सांचे में ढाल दीजिये जिससे उसका संपूर्ण जीवन अमृतमय बन जाए। आप यदि थोड़ा सा समय, थोड़ी सी मेहनत बच्चों के लिये करेंगे तो भविष्य में आपका ही परिवार सुसंस्कारवान, सुधरा नजर आयेगा। आपके परिवार की महक सर्वत्र विस्तृप्त होगी और यदि ऐसा नहीं किया गया तो भविष्य में आपका ही परिवार अस्त-व्यस्त संस्कार विहीन होगा। जिन बच्चों में अच्छे संस्कार नहीं होते वे सभ्य पुरुषों की सभा में उठ बैठ नहीं पाते, उन्हें हर जगह शर्मिन्दा होना पड़ता है। भगवान ऋषभदेव जब महाराजा ऋषभदेव थे तब उनके सौ पुत्र और दो पुत्रियां थी। सभी पुत्रों को उन्होंने सभी प्रकार की कला और हर प्रकार विद्या सिखाई थी। उन्होंने पुत्रों के सम्पूर्ण संस्कार अपने हाथ से किये थे।

आत्मचिन्तन

(प.पू. आ. श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की नित्य डायरी से साभार २९.१०.१९८२)

।। ऊँ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ।।

हे आत्मन्! संसारी भव्य गण ही संसारार्णव से पार होने की भावना करता है वही अपनी सम्यक् दर्शन, ज्ञान चारित्र में आस्था रखता हुआ वह कर्म करता हुआ अपनी भावना को मजबूत करता हुआ। संसार शरीर भोगों से विरक्त होकर व्रत संयम धारणकर अपना शेष समय स्वाध्याय पूजन स्तुति वंदना में लगाता हुआ। व्रत संयम धारणकर जीवन यापन करते हैं। प्राणी मात्र से मात्सर्य का त्यागकर मित्र समान अल्हाद कर धर्म ध्यान में ही समय लगाते हैं और अपना ध्येय स्वाध्याय पाठ ध्यान मनन चिन्तन में समय को लगाते हैं और हर क्षण वैराग्य की भावना रखते हैं और समय-समय पर प्रमाद छोड़कर मनन चिन्तन में समय लगाते रहते हैं। शुभोपयोगी बनकर ध्यान द्वारा सर्व रोग शोकों को छोडने के लिए तत्पर रहते हैं अत: हे विमलात्मन तुम भी संसार भोगों से विरक्त होकर व्रत संयम से समय का परिशोवन करते हुए अपनी चर्या को कायम रखते हुए व्रत संयम को दृढ़ता पूर्वक पालन कर आत्म योगियों की सेवाभाव जाग्रत अवस्था में खाते पीते चलते बैठे वीर प्रभु की भक्ति की भावना रखते हुए समय को पूर्ण करते हैं और अपनी भावना जाग्रत रखते हैं।

जिनोपदेश

संकलन- समाधिस्थ श्रमणमुनि विश्वस्त सागर जी महाराज की डायरी से संकलित

पीयूष न हि नि:शेष, पिबन्नेव सुखायते।। १/२।। क्षत्र चूणामणि

अर्थ- सम्पूर्ण अमृत पीने से ही सुख होगा यह बात नहीं किन्तु थोड़ा सा अमृत पीने से भी सुख हो जाता है।

सौभाग्यं हि सुदुर्लभम्।। १/८।। क्षत्र चूणामणि

अर्थ- उत्तम भाग्य प्राप्त होना बहुत कठिन है।

विपाके हि सतां वाक्यं, विश्वसन्त्यविवेकिन:।। १/३५।। क्ष.चू.

अर्थ- विवेक हीन पुरुष सज्जनों के वचन को दु:ख आ पड़ने पर ही विश्वास करते हैं।

न ह्यकाल कृता वाञ्छा सम्पूण्णाति समीहितम्।

किं पुष्पावचन: शक्य: फलकाले समागते।। १/३६।। क्ष.चू.

अर्थ- जिस प्रकार वृक्ष में फल आ जाने पर फूल नहीं मिल सकते, उसी प्रकार असमय में गई इच्छा भी पूर्ण नहीं होती।

आस्था सतां यश: काये, न ह्यस्थायिशरीरके।। १/३७।। क्ष.चू.

अर्थ- सज्जनों का विश्वास कीर्तिरूपी शरीर में ही होता है, नश्वर औदारिक शरीर में नहीं।

जीवितात्तु पराधीना-ज्जीवानां मरणं वरम्।। १/४०।। क्ष.चू.

अर्थ- दूसरे के आधीन जीने से जीवों का मर जाना ही श्रेष्ठ है।

मनस्यन्यद्वचस्यन्यत्, कर्मण्यन्यद्धि पापिनाम्।। १/४३।। क्ष. चू.

अर्थ- पापियों के मन में कुछ और वचन में कुछ और तथा कार्य में कुछ और ही होता है।

गाढा हि स्वामिभक्ति: स्या-दात्म प्राणनपेक्षिणी।। १/४९।। क्ष.चू.

अर्थ- अपने स्वामी के प्रति हार्दिक प्रेम होता है वह उसके प्रति जान तक न्योछावर करने को कटिबद्ध रहता है।

पित्तज्वरवत: क्षीरं तिक्तमेव हि भासते।। १/५१।। क्ष.चू.

अर्थ- मीठा दूध भी पित्त ज्वर वाले को कडुवा ही लगता है।

सम्मेद शिखर वंदना का फल

(प्रवचन- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज)

बन्धुओ! आज हम सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर की पवित्र भूमि पर बैठे हुए हैं। जहाँ से अनंतानंत सिद्ध परमात्माओं ने मोक्ष को प्राप्त किया है। केवल एक मुनिराज जहाँ से सिद्ध हो जाते हैं व्यक्ति उस सिद्ध क्षेत्र की वंदना करता है फिर जहाँ से अनंतानंत सिद्ध हुए हैं वहाँ की तो महिमा ही शब्दातीत है उसे हम शब्दों से नहीं कह सकते हैं।

गौरव की बात है कि यह एक ऐसा सिद्धक्षेत्र है जिसे शास्त्रों में शाश्वत सिद्ध क्षेत्र माना गया। शाश्वत इसलिए है क्योंकि आज तक जितने भी महापुरुष निर्वाण को प्राप्त हुए हैं उनका नियामक नियम है कि उन तीर्थंकर भगवान का जन्म अयोध्या और मोक्ष सम्मेद शिखर जी से ही होता है। आज तक भूतकाल की अनंतानंत चौबीसियों व्यतीत हो चुकी हैं और भविष्य में भी अनंतानंत उत्सर्पिणी-अक्सर्पिणी काल होते रहेंगे तो उनकी भी अंतानंत चौबीसियाँ होगी। शास्त्रों में वर्णन है कि असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल के बाद एक हुण्डावसर्पिणी काल भी आता है जिसमें कुछ न कुछ अनहोनी घटनाये घटती रहती हैं जिससे शाश्वत नियमो में भी परिर्वतन आ जाता है जैसे- तीर्थंकरों की कोई भी पुत्रियाँ नहीं होती हैं फिर भी ऋषभदेव की दो पुत्रियाँ हुई। तीर्थंकर भगवान का जन्म चतुर्थकाल में होता है किन्तु फिर भी तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म तृतीय काल में हुआ और मोक्ष भी तृतीय काल में ही हो गया। चक्रवर्ती का कभी पराजय नहीं होता है लेकिन ऋषभ पुत्र चक्रवर्ती भरत का बाहुवली के द्वारा पराजय हो गया।

बन्धुओ! बहुत सारी बातें है उनमें से ही इस सिद्धान्त में भी अंतर दिख रहा है कि वर्तमान चौबीसी के केवल पांच तीर्थंकरों का ही जन्म अयोध्या से हो सका शेष सभी का अन्य-अन्य स्थानों से जन्म हुआ। उसी प्रकार मोक्ष भी २० तीर्थंकरों का सम्मेद शिखर जी से हुआ शेष ४ तीर्थंकर आदिनाथ अष्टापद से, वासुपूज्य भगवान चंपापुरी के मंदारगिरी से, नेमीनाथ भगवान का गिरनार जी और महावीर भगवान का पावापुर से मोक्ष हुआ।

फिर भी सम्मेद शिखर पर्वत की विशेषता यह है कि यहाँ पर्वत पर पूरी २५ टोंके है। बीस यहाँ से मोक्ष जाने वाले ४ अन्य अन्य स्थानों से मोक्ष जाने वाले तीर्थंकर भगवान इस प्रकार चौबीस और सभी तीर्थंकर भगवान के मोक्ष जाने वाले गणधर परमेष्ठी की भी एक टोंक है। एक बार किसी ने मुझसे पूछा तीर्थंकर भगवान के पहले गणधर की टोंक क्यों है। तो मैंने कहा- राष्ट्रपति से मिलने के पूर्व प्रधानमंत्री से संपर्क करना पड़ेगा। मुख्यमंत्री से मिलने के पूर्व कलेक्टर से मिलना पड़ेगा स्वीकृति लेना पड़ेगी। वैसे ही तीर्थंकर भगवान के पास जाने के पहले गणधर परमेष्ठी से पूछना पड़ेगा इसलिए उनकी टोंक पहले हैं।

आप सभी ने सम्मेद शिखर की वंदना की है एक-एक टोंक पर अर्ध्य चढ़ाये है लेकिन उस समय सोच में जरूर पड़े होगे इतने अरब, इतने खरब, आदि बोलते समय आश्चर्य होता है कि इतने सारे मुनिराजों ने मोक्ष प्राप्त कर लिया।

अभी तक मोक्ष जाने वाले तीर्थंकर भगवानों के साथ अनेकानेक केवली भगवान भी मोक्ष गये हैं। एक-एक टोंक पर अरब, खरब, ही नहीं अनंत का प्रमाण है यदि हम इसकाल के सभी का टोटल करें तो ६६५ कोड़ा कोड़ी, ९ खरब, ९८ अरब, १ करोण ८७ लाख ७३ हजार २५४ मुनियों की संख्या हो जायेगी।

आप सोच रहे होगे कि संपूर्ण विश्व की संख्या ही ८ अरब है तब तो सभी के दिमांग में भूकम्प आ गया होगा, यह कैसे हो सकता है तो इसलिए हो सकता है क्योंकि यह संख्या कोई एक वर्ष या हजार करोड़ वर्ष की नहीं है। जब आप आदिनाथ भगवान की आयु देखोंगे तो ८४ लाख वर्ष पूर्व, आपके दिमांग तो उसमें भी चकरा जायेंगे लेकिन जब दोनों संख्याओं की तुलना करोगे तो संतोष मिल जायेगा कि इतने वर्षों में तो इतने मुनिराज मोक्ष जा सकते हैं।

बन्धुओ! कितनी महिमा है सम्मेद शिखर जी की दिगम्बर जैन परम्परा में इसे सम्मेद शिखर जी और श्वेताम्बर परम्परा में सम्मेत शिखर जी कहा जाता है त, द का अंतर है क्योंकि सौरसेनी प्राकृत में द होता है और मागधी प्राकृत में त

होता है इसलिए व्याकरण की अपेक्षा से शब्दों में अंतर आया है बांकी नाम वही है, क्षेत्र भूमि वही है। सम्मेद का अर्थ है जहाँ पर बहुत सारे हाथियों के समूह निवास करते थे। आज भी यहाँ बहुत हाथी है यहाँ पर आये दिन घटनाएँ सुनने में आती हैं कि हाथी ने मकान गिरा दिया और वहाँ का अनाज खा लिया। हाथियों के समूह इन पर्वतों पर निवास करते थे इसलिए सम्मेद शिखर नाम पड़ा क्योकि सम्मेद यानि हाथी होता है। अब हाथी क्यों निवास करते थे, तो यहाँ से मोक्ष जाने वाले प्रथम तीर्थंकर अजितनाथ थे उनका चिन्ह हाथी था। मुझे ऐसा लगता है कि अजितनाथ भगवान के हाथी चिन्ह के कारण ही यहाँ सबसे अधिक हाथी रहते थे। जब लोग अभिनंदन भगवान की टोक पर जाते हैं तो वहाँ बंदर जरूर मिलते हैं क्योंकि बंदर चिन्ह वाले भगवान अभिनंदन नाथ है इसलिए वंदर भी वहीं बैठकर अपने आराध्य प्रभु की भक्ति करते हैं।

इसी प्रकार हाथियों के आराध्य अजितनाथ भगवान थे इसलिये यहाँ अनेकों हाथी उनकी आराधना करते थे। ऐसा अपना चिंतन (सोच) है अपने विचार से ऐसा अर्थ किया। फिर जो भी हो। जब हम सम्मेद शिखर जी की वंदना करते हैं तो यहाँ की एक-एक टोंक के दर्शन वंदन की बहुत बड़ी महिमा कही गई है करोड़ों उपवासों का फल एक-एक टोंक की वंदना करने से प्राप्त होता है। यदि हम एक-एक के उपवासों का फल गिनेंगे तो बहुत समय लगेगा बस इतना ही संक्षेप में समझें कि सभी टोंकों की वंदना के फल को देखे तो १६८ करोड़ ७० लाख उपवासों का फल एक बार भाव सहित वंदना करने से प्राप्त होता है। ऐसा लगता है अनेकों जन्मों की सफलता मिल गई हो। यूँ तो पंचम काल में मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानी है लेकिन वर्तमान विज्ञान की अपेक्षा आज के जन्में व्यक्ति की आयु ६० वर्ष की रह गई है तो सोच लो कितने भवों के उपवास का फल आपको प्राप्त हो गया मात्र एक वंदना से ऐसा महान ये क्षेत्र है।

आगम तो यूँ कहता है अनंतानंत उपवासों का फल मिलता है। आचार्य लोहाचार्य स्वामी ने सम्मेद शिखर महात्म्य ग्रंथ में लिखते हैं ६६५ कोड़ा कोड़ी ही नहीं अनंतानंत यहाँ से सिद्ध हुए है। यही कारण है जब परम पूज्य गुरुदेव विमलसागर जी महाराज यहाँ वर्षायोग करते थे तो लोग उनसे आशीर्वाद मांगते थे कि हमारी वंदना सानंद सम्पन्न हो। तो गुरुदेव उन्हें ऊँ ह्रीं अनंतानंत परम सिद्धेभ्यो नम: यह मंत्र देते थे। कहते थे इस मंत्र को जपते हुए वंदना करना तो शक्ति प्राप्त होती रहेगी आराम से वंदना हो जायेगी। और सत्य रूप में वृद्ध से वृद्ध लोग हिम्मत बनाकर वंदना कर आते थे। बन्धुओ! मन की बहुत बड़ी शक्ति होती है। आज तो यह पर्वत बहुत छोटा रह गया है शास्त्रों में जब हम देखते हैं तो शिखर जी का पर्वत ९कि.मी. का नहीं था अपितु १२ योजन का था। एक योजन चार कोश का होता है इसलिए ४८ कोश हुए यदि मील में देखें तो २ मील का एक कोश होता है अत: ९६ मील हो गये। लगभग डेढ़ कि.मी. का एक मील होता है इसलिये १५४ कि.मी. का सम्मेद शिखर जी था।

हमारे महाराज कह रहे है इतने सारे मुनि महाराज कहा बैठते होंगे क्या चिपक-चिपक कर बैठते थे तो नहीं चिपक कर और सिकुड़कर नहीं बैठते थे अच्छे से दूर-दूर बैठते थे क्योंकि मोक्ष एक साथ नही हुआ उसमें काल भेद रहा है एक मुनिराज का जहाँ से मोक्ष हुआ वहीं दूसरे, तीसरे आदि मुनि महाराज का भी मोक्ष हुआ और तो क्या एक-एक टोंक से करोड़ ही नहीं कोड़ाकोड़ी तक मुनिराज मोक्ष गये वे एक समय में नहीं अनंत काल में गये है।

एक बार एक यात्री दर्शन करने जा रहे थे बोले-भगवान हम लोगों पर भी तो दया करते। मैंने सुन लिया, मैंने कहा- क्या दया करते? बोले उनके केवलज्ञान में तो झलक रहा होगा कि पंचम काल में लोग कमजोर होंगे तो कम से कम नीचे ही बैठ जाते हमें वंदना में इतनी परेशानी तो नहीं उठाना पड़ती लेकिन वे तो इतनी ऊपर और वह भी एक स्थान से नहीं अलग-अलग टोंको से मोक्ष गये हैं। मैंने कहा- अभी तो पर्वत बहुत छोटा मात्र ९ कि.मी. का रह गया है यदि १५४ कि.मी. का होता तो आप क्या करते।

बन्धुओ! आज तरह-तरह की बीमारी लोगों के अंदर है किसी को कोलस्ट्रोल की, किसी को सुगर की बीमारी है। डॉक्टर कहते हैं पैदल चलो परिश्रम करो दिगम्बर जैन संप्रदायें बहुत अच्छी है। यहाँ मुनिजनों के साथ श्रावकों को भी विहार करने का अवसर मिलता रहता है जिससे उनका संतुलन बना रहता है।

हिन्दू संप्रदाये के जितने भी क्षेत्र होते हैं वे अधिकांशत: नदी, तालाब के किनारे नगरों से जुडे हुए होते हैं और दिगम्बर जैन समाज के जितने भी क्षेत्र होते हैं वे अधिकांशत: पर्वत की चट्टानों पर, ऊचे-ऊचे पर्वत के शिखरों पर घनघोर जंगलों में होते हैं क्योंकि दिगम्बर साधुओं को न कपड़े धोना-नहाना है न खाना बनाना पानी आदि पीना है इसलिए वे आराम से पर्वत के ऊँचे शिखर पर बैठकर ध्यान में लीन रहते हैं। किन्तु वैष्णव संप्रदायों में संतों को बार-बार पानी पीना है कपड़े भी धोना होते हैं तथा रसोई भी बनाना वर्तन मांजना आदि सभी कार्य करना पड़ते हैं अत: गृहस्थ जीवन में हर क्षण पानी चाहिए सारी सुविधाएँ चाहिए इसलिए उनके सभी स्थान नदी समुद्र, तालाब के किनारे होते हैं और यदि आज के समय में कतिपय मंदिर आदि पर्वतों पर पहुँचे हैं तो वे केवल जैनियों के अनुशरण करने से पहुंचे हैं।

बन्धुओ! सम्मेद शिखर का यह पर्वत सभी पर्वतों में ईश्वर की तरह है क्योंकि यहाँ से जितने मुनिराज सिद्ध हुए उतने और किसी पर्वत से नहीं हुए। साथ ही भव्य जीवों की उत्पत्ति के लिए यह पर्वत एक खान की तरह है।

जिन जीवों को नरक तिर्यञ्च आयु का बंध नहीं हुआ हो वही जीव इस पर्वत की भाव सहित वंदना कर सकते हैं। जिसकी नरक तिर्यञ्च आयु का बंध हो जाता है वे व्यक्ति इस पर्वत की वंदना नहीं कर पाते। इसका मतलब आप सभी को एक प्रमाण पत्र तो प्राप्त हो चुका हे कि यहाँ जितने भी लोग हैं उनमें से कोई भी नरक तिर्यञ्च आयु का बंधक नहीं है।

राजा श्रेणिक का नरक आयु का बंध हो चुका था। उसके बाद एक दिन भवागन महावीर स्वामी के समवशरण में सम्मेद शिखर जी की महिमा उसने सुनी कि इतने उपवास का फल मिलता है इतने सिद्ध वहाँ से हुए हैं तो वह बड़े ही ठाठ-वाट के साथ शिखर जी की यात्रा के लिए निकला तो सम्मेद शिखर पर्वत की रक्षा करने वाले भूतक यक्ष ने उसे मार्ग से ही लौटा दिया। आप लोगों को रास्ते में यक्ष नहीं मिला यह अच्छा रहा, नहीं तो आप डरकर भाग जाते। वह यक्ष यहाँ का रक्षक है यद्यपि वह अकारण किसी को परेशान नहीं करता लेकिन जो गड़बड करते हैं उन्हें वह छोड़ता भी नहीं है।

उस भूतक नाम के व्यंतर देव ने जिस मार्ग से राज श्रेणिक की सेना आ रही थी उस मार्ग में घनघोर वर्षा करना प्रारंभ कर दी। काली घटा छा गई। दिन रात्रि जैसा लगने लगा। तूफानी हवा चलने लगी। जिससे घबराकर लोग भागने लगे और अंत में राजा श्रेणिक को भी लौटना पड़ा। लेकिन उसे बहुत दुख हुआ वह पुन: भगवान के समवशरण में पहुंचा और प्रार्थना की हे प्रभु! आपके मुख से सम्मेद शिखर जी का महात्म्य सुनकर में वंदना करने जा रहा था लेकिन मैं वहाँ पहुंच ही नहीं पाया मार्ग से ही मुझे लौटना पड़ा ऐसा क्यों हुआ? तो भगवान महावीर स्वामी ने कहा- हे श्रेणिक यह तुम्हारी यात्रा करने का समय नहीं है क्योंकि तुम्हें नरकायु का बंध हो चुका है इसलिए तुम शिखर जी की वंदना नहीं कर सकते हो।

बन्धुओ! जिनका नरकायु का बंध हो चुका है वह वंदना नहीं कर सकता है यह निश्चित है। दूसरी बात यह भी मैंने सुनी है कि 'भाव सहित बंदे जो कोई ताहि नरक पशु गति नहीं होई' यद्यपि मुझे नहीं मालूम कि कितने लोगों ने भाव सहित वंदना की है लेकिन जिन्होंने भी की है उन्हें नरकगति और पशुगति का बंध नहीं होता है। भगवान महावीर स्वामी ने भी अपनी दिव्यध्वनि में यह बात स्पष्ट कही है। सम्मेद शिखर जी की वंदना करने से उपवास के फल के विषय में दूसरा प्रमाण मिलता है कि ३२ करोड़ उपवास का फल भी सम्मेद शिखर जी की वंदन करने का फल मिलता है।

बन्धुओ! एक बार भाव सहित वंदना करने से हमें कितना लाभ हो गया। प्रथम तो नरक तिर्यञ्च गति में होने वाले दु:खों से बच्चे दूसरी बात इतने उपवासों का फल मिला जितने आज तक कभी नहीं कर पाये होंगे। शास्त्रों में कहा है तपसे निर्जरा होती है तो इतने उपवासों का अर्थ है इतने पाप व्यक्ति के धुल गये नष्ट हो गये। सम्मेद शिखर जी को तीर्थ कहा जाता है तीर्थ यानि जिससे कर्म धुले और व्यक्ति एक घाट से दूसरे घाट तक पहुंच जाये। जिससे तिरा जाये उसे तीर्थ कहते हैं सम्मेद शिखर जी तीर्थ ही नहीं महातीर्थ है। एक बात ध्यान रखिये व्यक्ति आये कैसा भी लेकिन जब यहां से जाए तो मन को पवित्र करके जाये। आप पूरे कर्म नहीं धो सकते तो उसे हल्का तो कर ही सकते है हम जब भी वंदना करके लौटे तो जीवन में एक नियम जरूर लेकर जायें तभी आपकी यात्रा सफल हो सकती है। और जीवन में यादगार बन सकती है।

आप दीर्घ रत्नत्रयधारी महान तपस्वी हैं

(प्रवचन- प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य विरागसागर जी महाराज)

मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ होता है सांगोपांग शरीर और उस सब के साथ-साथ उत्तम कुल में जन्म, धार्मिक परिवार और धार्मिक संस्कार ये सारी बाते अत्यंत दुर्लभ हैं। हमारे लिये देव दुर्लभ मनुष्य पर्याय मिली लेकिन हम मात्र इसी से संतुष्ट न हों। महात्मागांधी जी ने अपने विचारों में लिखा था कि मेरी भावना थी कि मैं निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुद्रा को धारण करूँ लेकिन वह संभव नहीं हो सकी। हमारे देश की पूर्व प्रधानमंत्री इंद्रागांधी जी ने अपने विचारों में कहा था कि- जब मैं अपने देश को देखती हूँ तो सारा मुल्क मुझे जैन नजर आता है। इसी के साथ ही विदेश के वैज्ञानिक आइस्टीन ने अपने विचार में कहा- मुझे पता नहीं कि पुनर्जन्म होता है या नहीं, यदि पुनर्जन्म हो तो मेरा जन्म भारत देश में हो, वह भी जैन कुल में हो, ऐसे विचार उन्होंने प्रकट किये।

प्राय: सभी धर्मगुरु जैनधर्म को चाहते हैं उसे श्रेष्ठ और कल्याणकारी मानते हैं। जब हम तमिलनाडु में थे तो वहाँ हिन्दू संप्रदाये का एक आश्रम था वहाँ के प्रमुख साधु शिवराम जी थे उनके ५०० शिष्य वहाँ पढ़ते थे। जब वे हमारे पास आये तो इतने विद्वल हो गये कि साष्टांग चरणों में गिर गये। उन्होंने अपने दो शब्दों में कहा- कि मैं पूर्व पर्याय में जैन मुनि था ऐसा मुझे स्मरण है। उस समय मेरी साधना में कोई कमी रही जिसके परिणाम स्वरूप में पुन: जैन मुनि नहीं बन सका। आप मुझे आशीष दीजिए कि अब जब भी मैं पुनर्जन्म लूँ तो जैनमुनि बनूँ और साधना करके निर्वाण को प्राप्त करुँ।

हिन्दू संप्रदाय के प्राचीन इतिहास में एक भर्तरी नाम के साधु हुए जिन्होंने अपनी भर्तरी शतक में लिखा-

एकाकी निस्पृहाशांता पाणिपात्र दिगम्बरा:।

कदाशम्भो भविष्यामि कर्म निर्मूलनक्षमा:।।

अर्थात् एकाकी विचरण करने वाले, जिनके कोई पारिवारिक संबंध नहीं होते हैं। माता-पिता, भाई-बहिन, बेटा-बेटी नहीं होते है न कोई पति और नकोई पत्नि होता है। समस्त संबंधों का त्याग करने वाले निर्ग्रन्थ संत होते हैं। जिनकी साधना के पीछे कोई लौकिक आकांक्षाएँ नहीं हैं वे स्वर्ग नहीं चाहते, सम्मान अथवा देवता मेरे ऊपर प्रसन्न हो मेरी सहायता करें। ऐसा जो नहीं चाहते समस्त स्वार्थों से वे निस्पृही होते हैं। शांता-शांत स्वभावी, कषायों को जीतने वाले होते है। वे आत्म साधना करते हैं जिसके बल से अपने अंदर की क्रोध, मान, माया, लोभ आदि जितनी भी विभाव परिणतियाँ हैं उन्हें स्वभाव से जीतने का पुरुषार्थ करते हैं इसलिए संत बाहर से भले कैसे भी नजर आये लेकिन उनकी आत्मा उपशांत प्रगति की होती है। पाणिपात्र अर्थात् हाथ ही जिनका वर्तन (पात्र) है। वे किसी वर्तन में भोजन नहीं करते हैं। एक बार मुझसे किसी ने पूछा था कि आप लोग वर्तन में भोजन क्यों नहीं करते। अगर आपको कोई वर्तन दे तो आपको उसमें भोजन करने में कोई इतराज है क्या? मैंने कहा- हाँ, मुझे इसलिए इतराज है कि- कोई व्यक्ति यदि वर्तन देगा तो संभव है अगर कोई राजा, महाराजा चक्रवर्ती होगा तो सोने का वर्तन देगा और यदि गरीब देगा तो स्टील, पीतल के वर्तन देगा जिन्हें देखकर मन में राग-द्वेष के भाव हो जायेंगे इसलिए निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुद्राधारी मुनि वर्तन को नहीं रखते हैं वर्तन को अपने हाथ से माजेंगे तो आरम्भ सारम्भ का दोष लगेगा। मैने एक बार अपने गुरुदेव से पूछा था कि यदि महाराज को कमण्डल न मिले तो स्ट्रील या पीतल आदि का कमण्डल रख सकते हैं क्या? महाराज ने कहा- नहीं रख सकते पीतल, स्ट्रील के कमण्डलों को मांजना पड़ता है और उसे मांजने में आरंभ सारंभ होगा इसलिए वे धातु का कमण्डल नहीं लकड़ी, नारियल आदि शुद्ध वस्तु का कमण्डल रखते हैं।

बन्धुओ! साधुजन इसी कारण वर्तनों में आहार नहीं करते वे हाथों में करते हैं। एक बार और किसी ने कहा था कि जिस प्रकार क्षुल्लक जी पात्र रखते हैं उसी प्रकार मुनि महाराज एक पात्र रख ले। उसमें आहार कर लिया करें। मैंने कहा- पात्र को संभालने की चिंता उन्हें ध्यान नहीं करने देगी उसकी रक्षा की चिंता करना पड़ेगी और यदि किसी ने मांग लिया

अथवा गुम गया तो किससे याचना करेंगे। इसलिए तीर्थंकर भगवान ने वर्तन रखने और उसमें भोजन करने की कोई छूट नहीं दी वे तो हाथ में ही आहार करते हैं।

दिगम्बर- दिशायें ही जिनका अम्बर हैं उन्हें दिगम्बर कहते हैं। हमारे बीच षट्रस त्यागी समाधि सल्लेखना में संलग्न परम पूज्य स्थविराचार्य श्री संभवसागर जी महाराज विराजमान है। उम्र के अनुसार ठण्डी अधिक लगती है। छोटी उम्र के बच्चे यूँ ही घूमते रहते हैं उनको उतनी ठण्डी नहीं लगती क्योंकि खून में गरमाहट रहती है लेकिन उम्र के ढ़लते शरीर क्षीण हो जाता है फिर उसमें भी षट्रसों का त्याग अन्न का त्याग फिर तो ऐसी कोई वस्तु शेष नहीं रहती जो शरीर में गर्माहट उत्पन्न करें। अन्न का त्याग और षटरसों के त्याग की साधना बहुत बड़ी साधना है। हम लोग अष्टमी, चतुर्दशी को नीरस करते हैं तो लघुशंका बार-बार जाना पड़ता है। दिन में तो कम और जैसे ही ठण्डा मौसम होता है तो रात्रि में चार-चार, पांच-पांच बार लघुशंका जाना होता है। फिर जो हमेशा के लिए षट्रस के त्यागी हों उनके विषय में क्या कहा जा सकता है। धन्य है इनकी समता, शांति कि इतने ठण्डे मौसम में भी बैठे है। मैं सोच रहा था महाराज को ठण्ड लग रही है इसलिए मैं प्रवचन नहीं करूँ लेकिन ये सारी तैयारिया हमारी आर्यिका पुनीत चेतन्यमति और ब्र. भैया प्रदीप जी ने की हैं तो उन्हें फीका लगेगा इसलिए बोलना भी आवश्यक समझा।

मैं बतला रहा था भर्तरी शिव जी से प्रार्थना कर रहे थे कि इस प्रकार के गुणों वाली, कर्मो को क्षय करने वाली दिगम्बर दीक्षा को हे शम्भो मैं कब धारण करूँ।

एक ओर वे भर्तरी थे और दूसरी ओर आचार्य श्री संभवसागर जी महाराज हैं वे भी वैष्णु कुल के थे महाराज भी वैष्णु कुल के हैं वे केवल सोचते रहे लेकिन निर्ग्रन्थ दीक्षा धारण नहीं कर सके, लेकिन आचार्य संभवसागर जी महाराज ने केवल सोचा ही नहीं एक ऐसा पुरुषार्थ किया, पुण्य का भी प्रबल योग आया। परम पूज्य आचार्य तीर्थभक्त शिरोमणी, महातपस्वी अष्टादश भाषाविद (१८ भाषाओं का ज्ञात) आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज जिन्हें अनेकों देव और देवियाँ सिद्ध थी उनकी कृपा इनके ऊपर हुई और निर्ग्रन्थ दीक्षा हो गई और महातपस्वी, महात्यागी स्थविर पद के साथ-साथ आचार्य पद के धारी हुए। और ऐसी वयोवृद्ध उम्र में भी कठोर साधना कर रहे हैं। जो भी दर्शन करने आते हैं वे बोल पायें या न बोल पायें सोचते तो सभी है कि महाराज श्री शरीर पर कुछ तो कृपा कीजिए। और आचार्य श्री कहते हैं शरीर पर अनंतो बार कृपा की लेकिन इस शरीर ने मेरे ऊपर एक भी बार कृपा नहीं की है। इसलिए शरीर कृपा का पात्र नहीं है। कर्म, नोकर्म, भावकर्म ये सभी कर्म है ये कृपा के पात्र नहीं है इन्हें क्षय करने वाले ही अरहंत पद को प्राप्त करते हैं इसलिए कर्मक्षय की साधना में जो अनवरत संलग्न हैं ऐसे आचार्यश्री संभवसागर जी महाराज हैं जिनके अंदर अपूर्व वात्सल्य है। मैं जब भी उनके पास आता हूँ वे गले से लगा लेते हैं। मैंने कहा- महाराज लोग कहते हैं जाते अथवा आते समय मिलन होता है आप तो रोज-रोज गले लगाते हैं। उस समय आचार्यश्री बोले- अनुराग जब अन्तरात्मा से उमड़कर आता है तो उसे रोका नहीं जाता है। ऐसे आचार्य संभवसागर जी महाराज के विषय में मैंने प्रवचन के मंगलाचरण में एक श्लोक बोला था। उसमें यही कहा था कि आप दीर्घ दीक्षित है। लगभग ५० वर्ष से भी अधिक समय आपको दीक्षा लिये हो गये स्वर्णिम जयंति आपकी धूम-धाम से समपन्न हुई। आप दीर्घ चारित्र को (उत्कृष्ट चारित्र को) धारण करने वाले हैं आपके चरणों में हम बार-बार वंदना करते हैं नमस्कार करते हैं। यह सत्य है हम लोग अबोध है, अज्ञानी है थोड़ा ज्ञान है बहुत कुछ चाहते हुए भी जो कुछ करना चाहिए उतना नहीं कर पाते हैं। जितना समय देना चाहिए उतना समय नहीं निकाल पाते हैं। और इसे सभी समझते हैं कि बड़े संघ की व्यवस्था में बहुत कुछ समय जाता है। टायम टेवल भी हमारे पहले से बने रहते हैं फिर भी जितना बना पूज्य आचार्य श्री के चरणों में समय-समय पर उपस्थित हुए उसमें यदि कोई भूल त्रुटी हुई हो तो मैं पूज्य आचार्य श्री के चरणों में विनय, भक्ति सहित प्रार्थना करता हूँ कि हे गुरुदेव आप हमें क्षमा करें और ऐसा आशीष दे कि हम लोग अपने रत्नत्रय की सम्यक् साधना करते हुए निर्वाण की यात्रा को सार्थक और सफल कर सकें।

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि इस वर्ष का चातुर्मास बहुत ही हर्ष, आनंद के साथ सम्पन्न हुआ। त्रियोग आश्रम के बालाचार्य मोक्ष सागर जी महाराज, समयसागर जी महाराज का अच्छा स्नेह रहा जब-जब भी हम आते थे वे अपनी कुटिया से निकल कर बाहर आ जाते थे। और जब भी बुलाते थे तो भी वे तुरंत समय निकाल कर आ जाते थे। हमारी पुनीत चेतन्यमति माता जी ने तो मुझे सम्मेद शिखर जी में जल्दी आने का अच्छा अवसर दे दिया। जब वे प्रार्थना करने पहुँची गाजियाबाद के वर्षायोग में तब उन्होंने कहा- मेरी दीक्षा निश्चित हो गई है जिसे सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई थी। इसके बाद विहार में भी दो बार वे प्रार्थना करने आई कि दीक्षा के मंच पर तो आपको पहुंचना ही है और चमत्कार भी ऐसा हुआ कि कोई शोर्ट रास्ता मिल गया जिससे २०० कि.मी. कम हो गये और संघ उनकी दीक्षा में उपस्थित हो गया। आर्यिका पुनीत चैतन्यमति माता जीकी जो श्रद्धा भक्ति रही है वह तो शब्दातीत है और ऐसी-ऐसी ऊँची भावनाएँ उनकी रहीं। जब कार्यक्रम की बात आई तो मैंने कहा- प्रदीप जी माता जी का जन्म दिन है उसमें अपन उपस्थित होंगे, तो प्रदीप जी बोले नहीं माता जी का जन्मदिन तो एक दिन पहले ही मनाया जा चुका अब तो सारा कार्यक्रम आपके आगमन के स्वागत का ही है। माता जी की जो भक्ति रही वह प्रगाढ़ है उन्होंने जो प्रभावना दीक्षा के पूर्व की वह भी सराहनीय है मेरा उनके लिए बहुत-बहुत आशीर्वाद है। साथ ही आश्रम अधिस्टाता ब्र. प्रदीप भैया जी के लिए भी आशीर्वाद है आप भी शीघ्र मुनि दीक्षा धारणकर आत्मा का कल्याण करें।

प्रश्न सभी के उत्तर गुरुवर के

❖ **नमोस्तु आचार्य भगवन्! आहार में यदि मृत जीव आ जाये तो उसे दूसरे को दिखा सकते हैं क्या?**

❖ **आचार्य श्री**- नहीं दिखाना चाहिए क्योंकि उन्हें ग्लानि आ सकती है। अपना निर्णय स्वयं ले किसी दूसरे के भरोसे न रहें हाँ निर्णय के बाद श्रावक को अवश्य दिखायें ताकि वह यह न कह सके कि कुछ नहीं था यूँ ही अंतराय कर दिया। क्षुल्लक अवस्था में हमें ज्यादा अंतराय आते थे तो आचार्यश्री की आज्ञा से हम अपने स्थान पर लाकर उन्हें दिखाते थे। निर्णय भी सही ले क्योंकि यदि बिना कारण आपने अंतराय किया तो इतने सारे लोगों को दुख होने से असाता वेदनीय कर्म का आस्रव बंध होगा।

❖ **नमोस्तु गुरुदेव! चौके में मुद्रा खोल लेने के बाद यदि मुख में खून, कप आ जाये तो क्या करना चाहिए?**

❖ **गुरुदेव**- पहले से सावधान होना चाहिए फिर भी यदि ऐसी परिस्थिति आ जाये तो उपवास करें या कप थूंक सकते है अथवा खून आदि आने पर फिटकरी से कुल्ला करके आहार शुरु करना चाहिए लेकिन यह राजमार्ग नहीं है। खून बहते हुए आहार नहीं कर सकते।

❖ **नमोस्तु गुरुदेव! माता जी महाराजों के कमरे में बैठ सकती हैं क्या?**

❖ **आचार्यश्री**- नहीं, माता जी माताजिओं के स्थान पर बैठें महाराजों के कमरे में या उनके स्थानों पर नहीं बैठ सकती। गुरुकुल में सामूहिक प्रतिक्रम स्वाध्याय होने पर एक साथ सभी माता जी बैठती हैं। प्रायश्चित की पद्धति में भ अब अंतर आ गया है प्रात: सामूहिक आलोचनाएँ ली जाती और जिन्हें सबके सामने नहीं कहा जा सकता उन्हें लिखकर रखें और प्रायश्चित लें। हाँ मात्र संघ व्यवस्था की महत्वपूर्ण बातें दो-तीन आदि माता जी गुरु को आकार बतलायें वह भी कभी कदाचित, बार-बार राउण्ड न लगायें।

❖ **नमोस्तु आचार्य श्री? मुद्रा खुलने के बाद चौके में यदि ढुल जाये तो क्या करें?**

❖ **आचार्य श्री**- ऐसा प्रसंग कम आता है फिर भी ऐसा होने पर यदि आहार शुरु नहीं हुआ है तो पुन: शुद्धि करके आहार करें बाद में प्रायश्चित लें।

❖ **नमोस्तु आचार्य श्री! माताजिओं को रोना चाहिए क्या?**

❖ **आचार्यश्री**- माता जी हों अथवा महाराज, रोना भी मना है और हँसना भी मना है तत्त्वचिंतन करें तथा ऐसा कोई कार्य न करें जिससे रोना पड़े।

सन्त जीवन्त शास्त्र हैं, मृत नहीं

आचार्य विनम्रसागर जी

हम काफी समय तक शास्त्रों का अवलोकन करने के बाद भी शास्त्र की बातों को समझ नहीं पाते हैं कैसी विडम्बना है हमारी बुद्धि की। मनीषियों ने जीवन को जिया और जीवन की बात को शब्दों में लिपिबद्ध कर दिया ये बातें ही शास्त्र बन गई। उन्हीं ऋषियों की बातों को जब जीवन में सन्त उतार लेता है और उन्हें आचरण बना लेता है तो सन्त का जीवन ही जीवन्त शास्त्र बन जाता है। सच्चे संत की चर्या देखकर हमें यह पता लग जाता है कि शास्त्रों में ऐसा ही लिखा होगा। संत ऊर्जा बिखेरता हुआ एक उपकारी सूरज है। सन्त के पास बैठने पर ही उसकी सुवास हमें महसूस होती है। फूल के पास जब हम जाते हैं, बाग में जब हम जाते हैं तभी हमें सुगन्ध की अनुभूति होती है। सन्त महकता हुआ एक गुलाब का फूल है। सन्त को देखकर कई शास्त्रों का ज्ञान अपने आप सहज ही हो जाता है। सन्त के अभाव में वाणी निर्जीव है।

जैसे एक बूढ़े व्यक्ति के जीवन में अनुभवों का भण्डार होता है उसके जीवन में जिन्दगी के कई उतार चढ़ाव होते हैं ठीक वैसे ही एक सन्त के जीवन में अद्वितीय विलक्षण अनुभव होते हैं। जिन्हें समझ पाना एक ग्रहस्थ के बस की बात नहीं। ग्रहस्थ, साधु की हर बात को अपने स्तर से जानता है क्योंकि हम वही समझते हैं जिससे हम परिचित होते हैं यहाँ तक हम शास्त्रों की बातों को भी अपने स्तर से समझकर उसका अर्थ कर लेते हैं। अत: शास्त्र का अन्तिम निचोड़ सन्त ही बता सकता है शास्त्र को जीवित एक संत ही कर सकता है। ऐसे संत को पाकर हम शास्त्र को समझें और अपना जीवन भी जीवन्त बनायें। तभी हम सभी का जीवन भी जीवन्त शास्त्र बन सकता हैं।

महान् विचारों का उभरना श्रद्धा है तो उन्हें साकार करना है भक्ति।
प्रयोजन रहित किया गया परिश्रम मात्र शारीरिक श्रम है।

अजर-अमर आत्मा का संसार में आवागमन समाप्त हो

मुनिश्री विमर्शसागर जी महाराज

दीनता के साथ जन्म लेने वाला दीनतापूर्वक ही मरण करेगा, यह कोई अनिवार्य नहीं है। दीनता में जन्म लेकर दीनता में ही मरण करना जीव के दीर्घसंसारी होने का परिचायक है। जबकि दीनता में जन्म लेकर दीनता को समाप्त कर देना और वीरतापूर्वक मरण करना मनुष्य के निकट संसारी होने का प्रमाण है। हमें भिखारी के रूप में जन्म मिलने के बावजूद भी गभवत् सत्ता को उपलब्ध कर मरण करना चाहिये, जिससे अजर-अमर आत्मा का संसार में आवागमन समाप्त हो सके।

मनुष्य का जन्म इस कलिकाल में मिथ्यात्व के साथ ही होता है मिथ्यात्व के साथ जन्मा व्यक्ति अनिवार्य नहीं कि मिथ्यात्व के साथ ही मरण करे। अपितु सम्यग्दर्शन के साथ भी मरण को प्राप्त हो सकता है। समाधि की यात्रा भी कर सकता है। सम्यक्त्व के साथ मरण करने वाला जीवात्मा संख्यात-असंख्यात भव धारण कर नियम से मुक्त होता है। देशचारित्र या सकलचारित्र को धारणकर मरण को प्राप्त होनेवाला जीवात्मा नियम से समाधि को प्राप्त होकर सात या आठ भवों में संसार से मुक्त होता है। सम्यक्त्व, देशचारित्र और सकलचारित्र के साथ मरण की प्राप्ति ही दीनता का नाश और वीरता का विकास है।

जिसे निज आत्मा का श्रद्धान होता है, उसे परमात्मा का श्रद्धान होता है। निज आत्मा के श्रद्धान के अभाव में परमात्मा का श्रद्धान मोक्षमार्ग में कार्यकारी नहीं है। आत्म श्रद्धान के लिये आत्मस्वाभाव का ज्ञान होना जरूरी है। आत्मस्वभाव का ज्ञान होने पर आत्मश्रद्धान हो ही यह जरुरी नहीं है। किंतु जो आत्मस्वभाव का लक्षण है, उसे जानकर श्रद्धान होता है, वह आत्म श्रद्धान नियम से आत्मज्ञान का हेतु बनता है।

विदाई की वेला में अपने-अपने हृदय उदगार-

ये तीर्थंकर मैं केवली बनूँगा

(परम पूज्य स्थविराचार्य संभवसागर जी महाराज)

आपने जो उपदेश गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का सुना उसमें उन्होंने अपने अंतरंग का जो भाव था वह प्रकट किया। लेकिन मेरी भावना ये है कि मेरे अंदर जो कमी हो वे मेरे सामने प्रकट करो क्योंकि मेरे सामने बोलने से मेरा और भी सुधार हो जायेगा।

वैसे इन्होंने जो बोला उसमें मेरे को बहुत बड़ा ऊँचा चढ़ा दिया। इतना ऊँचा चढ़ा दिया कि शिखर जी पहाड़ के ऊपर ही चढ़ा दिया। इन्होंने जो कुछ मेरी तपस्या के बारे में कहा- मेरी कुछ भी तपस्या नहीं है। मैं तो जन्म से बिल्कुल भी जैनधर्म जानता नहीं था। ये तो बचपन से ही जैनधर्म जानते हैं। मुझे तो बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था मैं तो मिथ्यात्व में पड़ा हुआ जीव था। लकिन संगति में आ गया। आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज की। उनका भी मुझसे पूर्व का संबंध होगा। उन्होंने जाते ही मुझे आत्मानुशासन और दस भक्ति कन्नड़ भाषा वाली पुस्तक पढ़ने के लिए दी थी और कहा- मात्र मट्ठा और चावल खाकर मेरे पास रहना होगा।

तो वो मट्ठा चावल वो भी एक ही बार दूसरी बार पानी भी नहीं मैंने भी उनकी बात स्वीकार कर ली और ५० दिन सिर्फ मट्ठा चावल पर मंदार गिरि के पहाड़ पर रहे मेरे भी पुण्य का उदय आया जो सहज ही हाँ बोल दिया।

५० दिन में आत्मानुशासन पढ़ते ही आत्मा का श्रद्धान (सम्यग्दर्शन) हो गया दस भक्ति पढ़ने से जैन तीर्थंकर भगवान की भक्ति कैसे करना यह ज्ञान हो गया और मट्ठा चावल से सम्यक्चारित्र हो गया। वहीं १९६४ में तीन रस नमक, तेल, दही का आजीवन त्याग किया था। मुझे पुण्ययोग से ऐसा सहयोग मिला। आप लोग तो जन्म से जैनी हैं आप कम से कम रात में तो अन्य का त्याग करें हमारा तो छहों रस का और अन्न का भी त्याग है समझे। आप जैनी हैं तो आपका भी त्याग होना आवश्यक है। शास्त्र बोलते हैं रात्रि भोजन करने वाले को पशुगति में जाना पड़ता है। आप बड़े पुण्य से जैनी हुए हें तो कम से कम रात्रि भोजन, मद्य, मधु, मांस पांच उदम्बर फलों का त्याग तो होना ही चाहिए।

यद्यपि मुझे इसका कोई अधिकार नहीं है अधिकार तो विरागसागर जी को (इन्हे) है क्योंकि आप सभी के ये गुरु हैं। हम आपके गुरु नहीं हैं। हम तो जैनधर्म के महान तपस्वी आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज को देखकर के इस मार्ग पर आये हैं। मैंने हिन्दू साधुओं को देखा और जैन साधुओं को देखा फिर सोचा साधु ही बनना है तो नग्न दिगम्बर साधु बनना चाहिए भले ही इस साधना में प्राण निकल जायें ऐसी भावना मेरे अंदर थी, तभी आज इतने बड़े संघ के संचालक आचार्य विरागसागर जी महाराज के पास बैठे हैं। नहीं तो हम कहाँ होते पता नहीं। अभी यदि हिन्दू साधु होते तो सीता-राम, सीता राम बोलते होते दुनियाँ में बहुत सीता राम, सीता-राम वाले घूमते हैं हम भी ऐसे ही होते, लेकिन पुण्य ने हमें यहाँ ला दिया जिससे आज हम वीतराग-वीतराग बोल रहे हैं।

आज यदि किसी हिन्दू साधु को बोला जाए वीतराग-वीतराग बोलो, जैन धर्म पालन करो तो वो कहेगा नहीं, नहीं हमारा धर्म सीता-राम-२ बोलने का है समझे। भैया किसी को जैन बनाना कठिन है पूर्व जनम का तीव्र पुण्य हो वही जैन बन सकता है। समवशरण में भगवान महावीर स्वामी की ६५ दिन तक दिव्यध्वनि नहीं खिरी वहाँ बहत से साधु-संत, श्रावक भी बैठे थे लेकिन कोई इतना पुण्यात्मा नहीं था जब वहाँ इन्द्रभूति ब्राह्मण आये जिन्हें देखकर के भगवान महावीर स्वामी की वाणी खिरी। उसी समय एक साधु ने सोचा अरे! हमें देखकर भगवान की दिव्यध्वनि नहीं खिरी हमें धिक्कार है और वे समवशरण से निकल कर चले गये और मुस्लिम मत पैदा कर दिया। इसके बाद अकाल के समय १२ हजार दिगम्बर साधु उत्तर में रहे वहाँ दिगम्बर धर्म का पालन नहीं कर सके तब उन्होंने श्वेताम्बर संप्रदाये बना दिया। लेकिन कोई कुछ भी करें फिर भी पंचम काल के अंत तक दिगम्बर जैनधर्म रहेगा। साधुसंत रहेंगे इसलिए जितना बने उतना अच्छा धर्म

का आचरण करो और जब आचरण नहीं हो सके तो श्रद्धा रखो। प्राय: लोग दूसरों को देखते हैं ये ऐसा करता है वो वैसा करता है ये देखना छोड़ दो।

एक बार हमारे पास लोग आये बोले महाराज हम दीक्षा लेना चाहते हैं हमने कहा- मुझसे ले लो बोले नहीं हम तो विराग सागर जी महाराज से लेंगे। विरागसागर महाराज ने दो सौ तीन सौ दीक्षाएँ दी है। उनमें सम्हालने की अच्छी क्षमता है इसलिए हम वहीं दीक्षा लेंगे। कितने लोग आकर कहते हैं आपको हम आहार नहीं दे सकते विरागसागर जी को देंगे। मेरे पास आने में लोग घबराते हैं इतना त्याग एक साथ नहीं हो सकता लेकिन विराग सागर जी धीरे-धीरे त्याग कराकर एक दिन उन्हें साधु बना देते हैं। मुझे खुशी है कम से कम व्यक्ति त्याग के मार्ग पर तो आता है। विरागसागर महाराज जी समझदार हैं वे जानते हैं काल के अनुसार क्या करना चाहिए।

आचार्य विरागसागर जी महाराज जब शिखर जी में आये तभी मैंने इन्हें देखा उसके पहले नाम तो बहुत सुना था लकिन परिचय नहीं था। इनके अंदर वात्सल्य अंग भरा हुआ है जैसा आचार्य विमलसागर जी में था वैसा ही इनमें हे और इस वात्सल्य अंग के होने से सभी अंग प्राप्त हो जाते हैं समझे। गणाचार्य विरागसागर जी इतनी दीक्षा दे चुके हैं और आगे भी बहुत दीक्षा देंगे, सारे भारत में इनका शिष्य समूह प्रभावना करेगा आचार्य आदिसागर जी की परम्परा में सबसे अधिक दीक्षा देने वाले और सबसे अधिक प्रभावना करने वाले आप रहेंगे ऐसा मेरा आपके लिए आशीर्वाद है।

इन्होंने ११० सल्लेखना समाधि करवाई हैं इसलिए ये समाधि सम्राट बन गये हैं। ये अनेकों भव्यों का उद्धार करते हुए विद्रेह क्षेत्र में जायेंगे और वहाँ तीर्थंकर बनेंगे और में केवली बनूँगा समझे। तीर्थंकर का विशाल समवशरण होता है अनेक शिष्य उनके होते हैं लेकिन केवली की तो गंधकुटी होती है। परन्तु सिद्धालय में जाकर सब बराबर हो जायेंगे। (बात सुन पूज्य गणाचार्य भगवन भक्ति में ओतप्रोत हो बोले- आप थोड़ा ऊपर रहना मैं चरणों में रहूँगा। तब पू. आचार्य संभवसागर जी ने कहा-) अरे! ये छोटे बड़े के सारे विकल्प यहाँ हैं केवलज्ञान होने के बाद सब बराबर हो जाते हैं बड़े छोटे के विकल्प नहीं रहते। वर्तमान में दीक्षा क्रम के कारण हम ऊँचे नीचे बैठे हैं वहाँ तो बराबर पर रहेंगे।

आप का संघ आज मधुवन से विहार कर खण्डगिरि, उदयगिरि की ओर जा रहा है वहाँ की यात्रा कर आप फिर यहाँ आना तब फिर मिलेंगे और स्वर्ग में भी मिलेंगे आपको, आपके सभी संघ को मेरा आशीर्वाद है। संघ के सभी के लिए कहना है कि शरीर में जब तक शक्ति रहे तब तक गुरुभक्ति करते रहना सदैव गुरु आज्ञा में रहना, गुरु जैसा कहें वैसा करना और आपस में हिलमिल कर रहना कभी किसी की बुराई नहीं देखना क्योंकि बुराई करने वाला कितना ही अच्छा हो वह भी एक दिन बुरा बन जाता है समझे, इसलिए बुराई नहीं देखना सभी का सहयोग करना और अपनी साधना करना तभी वह सच्ची साधना तुम्हारा कल्याण करने वाली बन सकेगी। अंत में फिर से सभी मुनिराजों को भावलिंगी मुनिराज मानकर नमोस्तु आशीर्वाद और आर्यिकाओ को भावलिंगी आर्यिकायें मानकर बहुत-बहुत आशीर्वाद।

माता-पिता के चरण छूना

१. हाथ-पैर मुँह धोकर अपने माता पिता के सम्मुख जाना।
२. उनके चरण छूकर उनका आशीर्वाद लेना।
३. मैं आपकी हर आज्ञा का पालन करूँगा।
४. आपको कष्ट नहीं दूंगा।
५. आपकी नित्य सेवा करूँगा।
६. आपके कार्य में यथाशक्त सहयोग दूंगा।
७. अनावश्यक खर्चा नहीं करूंगा।

संस्कार सुरभि से साभार

गुरु विराग पर बरसा आ. संभवसागर जी का आशीष झरना

❖ **आचार्य संभवसागर जी महाराज**– विरागसागर गणाचार्य है बहुत बड़े संघ का संचालक है। मैं तो समाधि सल्लेखना की साधना करने वाला क्षपक हूँ।

❖ अरे! इसके पास तो दीक्षा लेने वालों की लाइन लगी हे मेरे पास कौन आता है। आहार देने वाले भी कहते हैं आपको आहार देने के लिए शूद्रजल का त्याग करना पड़ेगा वो हमसे नहीं होता। हम तो विरागसागर को देंगे वो कम नियम दिलाते हैं। आज के समय में लोग त्याग–तपस्या से घबराते हैं उन्हें विरागसागर ही धीरे–धीरे लाइन पर लाते हैं।

❖ मेरे पास कुछ लोग आये बोले– महाराज आशीर्वाद दो हम दीक्षा लेना चाहते हैं। मैंने कहा– मेरे पास ले लो, बोले– नहीं, हम तो आचार्य विरागसागर जी महाराज के पास लेंगे वो बहुत दीक्षा देते हैं उनमें सभी को सम्हालते की क्षमता है।

❖ मैं तो यहां पर (तेरह पंथी कोठी) में इनसे मिलने आया हूँ। सुबह ये त्रियोग आश्रम आये बोले– एक बार और दर्शन करना है आप प्रवचन सभा में चलें तो जिन्होंने नहीं देखा वो भी दर्शन कर लेंगे। वैसे मैं कहीं जाने वाला नहीं हूँ विराग सागर जी के कारण मैं यहाँ आया हूँ।

❖ आप श्रावकों को कैसे नियम संयम देना है यह तो विरागसागर ही समझते है। आप के गुरु तो येही है मैं तो हिन्दु था, तीर्थ भक्त शिरोमणी आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज की कृपा हो गई इसलिए आज विरागसागर जी के पास बैठा हूँ।

❖ गणाचार्य विरागसागर जी महाराज और भी बहुत दीक्षाएँ देंगे संपूर्ण भारत में इनका शिष्य समूह प्रभावना करेगा ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

❖ आचार्य आदिसागर जी महाराज की परम्परा में सबसे अधिक दीक्षा देने वाले एवं परम्परा को गौरव गरिमा सहित आगे बढ़ाने वाले आचार्य विरागसागर जी है इन्हें मेरा बहुत–बहुत आशीर्वाद है।

❖ इनमें वात्सल्य गुण हैं जिससे सभी गुण प्राप्त हो जाते हैं। आचार्य विरागसागर जी तीर्थंकर बनेंगे इनका बहुत बड़ा समवशरण लगेगा मैं केवली बनूँगा।

❖ अरे! आचार्य विरागसागर जी महाराज ११० सल्लेखना समाधि करा चुके हैं इसलिये वे समाधि सम्राट बन गये हें। अचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज को समाधि सम्राट कहते थे उनकी परम्परा में ये भी समाधि सम्राट हैं।

❖ अभी जा रहे हो, मधुवन का पंचकल्याणक कराने फिर से आना तब फिर मिलेंगे और मेरी समाधि हो गई तो स्वर्ग में मिलेंगे अब तो मिलते ही रहेंगे।

❖ आचार्य विरागसागर जी विदेह क्षेत्र के १६० तीर्थंकरों में २१वें नम्बर के तीर्थंकर होंगे और अपने साथ–साथ अनेकों भव्य प्राणियों को मोक्ष ले जायेंगे इन्हें मेरा आशीर्वाद है।

१. **पू. गणाचार्य गुरुवर**– आचार्य श्री जिसका विजातीय में विवाह हुआ हो वह क्या ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर मुनिदीक्षा ले सकते हैं आहार दे सकते हैं?

❖ **आचार्य श्री संभवसागर जी महाराज**– हाँ, यदि वो ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण करते हैं संबंध छोड़ते हैं तो वे आहार भी दे सकते हैं और मुनिदीक्षा भी ले सकते हैं।

२. **गणाचार्य गुरुवर**– आचार्यश्री! यदि किसी स्त्री ने दूसरी शादी कर ली हो तो उसके पहली शादी के बच्चे क्या आहार दे सकते हैं?

❖ **आचार्य श्री संभवसागर जी महाराज**– यदि स्त्री शुद्ध है तो उसके बच्चे शुद्ध है। पहली शादी में बच्चे, माँ आहार दे सकते हैं दूसरी शादी के बाद न वह स्त्री आहार दे सकती है न उसके बच्चे।

लघु शान्तिधारा

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ऊँ हाँ नमः सर्व अर्हदेभ्यः, ऊ ह्रीं नमः सर्व सिद्धेभ्यः, ऊँ हूँ नमः सर्व आचार्येभ्यः
ऊँ हौं नमः सर्व उपाध्यायेभ्यः ऊँ हः नमः सर्व साधुभ्यः त्रिचत्वारिंशताधिक शत गुण युक्त
पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः श्री वीतरागाय, सर्वज्ञाय, हितंकाराय, जिनाय,
तीर्थंकराय, देवाधिदेव श्री (भगवन का नाम बोलें) मम (अपना नाम बोलें)।

मिथ्यात्वं	मिथ्यादर्शन	मिथ्याज्ञानं	मिथ्यारूचिं
मिथ्याचारित्रं	देवमूढ़तां	लोकमूढ़तां	पाखण्डमूढ़तां
शंकादिदोषं	ज्ञानादिमदं	क्रोधं	मानं
मायां	लोभं	हिंसापापं	अनृतपापं
स्तेयपापं	कुशील पापं	परिग्रहपायं	दुर्व्यसनं
दृष्टिदोषं	शत्रुविघ्नं	सर्व आधिं	सर्व व्याधिं
सर्वदारिद्रं	कुसंगति भावं	वैरं	विसंवादं
ईर्ष्या	विरोधं	विद्वेषं	अन्यायं
भ्रष्टाचारं	अत्याचारं	अनाचारं	दुराचारं
राजभयं	चौरभयं	दुष्टभयं	आतंकवाद भयं
संतवादं	संघवादं	पंथवादं	सम्प्रदायवादं
परम्परावादं	समाजवादं	उग्रवादं	जातिवादं
निन्दवचनं	दुर्ध्यानं	दुःश्रुतिं	नवग्रहपीड़ां
व्यंतरादि देवकृतविघ्नं	परकृतक्षुद्रोषद्रवं	परमंत्रं	सर्वोपसर्गं
आर्तरौद्रध्यानं	सर्ववेदनीयं	सर्वमोहनीयं	सर्वकर्माष्टकं

ऊँ नमो अर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोष- कल्मषाय दिव्यतेजो मूर्त्तये श्री (भगवान का नाम बोलें) शान्तिकराय सर्व विघ्न-विनाशनाय, सर्व रोगापमृत्यु- विनाशनाय, सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय, सर्वक्षामडामर विनाशनाय, ऊँ हाँ ह्रीं हूँ हौ हः अ सि आ उ सा (अपना नाम बोलें) (कार्य का नाम) कार्य सिद्धयर्थं सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जिनदर्शनानन्दनं	गुरु दर्शनानन्दनं	जिनाभिषेकानन्दनं	जिनपूजानन्दनं
शास्त्रस्वाध्यायानन्दनं	जपानन्दनं	स्तुति आनन्दं	तीर्थयात्रानन्दनं
चतुर्विध दानानन्दनं	तीर्थोद्धारानन्दनं	जीर्णोद्धारानन्दनं	तीर्थरक्षानन्दनं
सर्वजन मैत्रीभावं	सद्धर्मवृद्धिं	दीन अनाथ असहाय सहायभावं	परस्परसहयोगभावं
चतुर्विधसंघस्य वैय्यावृत्ति	सम्यक् कर्त्तव्य पालनं धर्म ध्यानं		नित्य प्रवचनलाभं
धर्म प्रभावना सहयोगं	अप्रभावना निरशनं	सम्यग्दर्शनामं प्रपालनं	सम्यग्ज्ञानामं प्रपालनं
सर्वेषा अहिंसाव्यसन मुक्ति	शाकाहाराचरणं	पारिवारिकएकतां	व्यापार वृद्धिं

सर्व कार्य सिद्धिं	विद्या वृद्धिं	स्वास्थ्य लाभं	तनाव मुक्तिं
जीव रक्षां	सकारात्मक भावं	नित्य धर्म मंगलं	नित्य शान्तिं
नित्य सुखं	मनोरथ परिपूर्ण	चतुर्विधसंघानन्दनं	सर्वभव्यानन्दनं
सर्वजीवानन्दनं	सर्व कुटुम्बानन्दनं	सर्व ग्रामानन्दनं	सर्व नगरानन्दनं
सर्व देशानन्दनं	सर्व राष्ट्रानन्दनं	सर्व विश्वानन्दनं	सर्वानन्दनं कुरु-कुरु स्वाहा।

सर्वलोके सुखं यान्ति सर्वविघ्नविनाशनं।
आरोग्यं धनं धान्यं धर्म मंगल सदास्तु मे।।

हे भगवन् (भगवन् का नाम बोले) मम (अपना नाम बोले) श्री धर्मवृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, सुखमस्तु, शान्तिरस्तु, जयोस्तु, नित्यमारोग्यमस्तु, पुष्टिरस्तु, समृद्धिरस्तु अभिवृद्धिरस्तु, दीर्घायुरस्तु, कुल गोत्र धन धान्यं सदास्तु, बलवृद्धिरस्तु, ऐश्वर्याभिरस्तु, मातृ-पितृ-भातृ-भगिन्या-कलत्र-पुत्र-दुहिता-सुहृदयादि-समस्त-बन्धुवर्गाश्च सर्व शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा...।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शान्तिनाथाय जगत् शान्तिकराय सर्व शान्ति कुरु-कुरु स्वाहा-३

मुन्यार्यका- श्रावक-श्राविकाश्च, जिनेन्द्र भक्तं च योगीन्द्र भक्तं।
सुशासकानां व प्रशासकानां, करोति शान्ति महावीर सर्वं।।
जिनपूजकानां गुरु उपासकानां, मुनिनायकानां, तपसाधकानां।
राजा प्रजानां वा प्रतिष्ट्राणां, करोति शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः।।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिन जिननाथमहं यजे।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभादि वर्धमान पर्यंताश्चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो
अभिषेकांते शान्तिधारा अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भावों का निर्मल जल है, विनय भाव का है चन्दन।
गुरु वंदन ही अक्षत है ये, भक्ति सुमन का अभिनन्दन।।
मन वच तन से आत्म समर्पण, मोह क्षोभ का शमन करूँ।
परम पूज्य आचार्य शिरोमणी, विराग सिन्धु को नमन करूँ।।

ॐ हूँ परम पूज्य समता मूर्ति, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर यतिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निवपामीति स्वाहा।

नमनकर्ता- श्री सुभाषचन्द्र, संजय कुमार, नीरज कुमार, संभव जैन, भिण्ड

विज्ञापन दर

रंगीन - फुल पृष्ठ	-	11000/-	ब्लेक एण्ड व्हाईट - फुल पृष्ठ	-	5000/-
रंगीन - हॉफ पृष्ठ	-	6000/-	ब्लेक एण्ड व्हाईट - हॉफ पृष्ठ	-	2500/-
रंगीन - चौथाई पृष्ठ	-	3000/-	ब्लेक एण्ड व्हाईट - चौथाई पृष्ठ	-	1500/-

'विरागवाणी' मासिक पत्रिका की सदस्यता एवं विज्ञापन हेतु संपर्क करें-
प्रबंध सम्पादक : श्री अनूप कुमार जैन
जी-१४१ गौतम नगर, भोपाल-२३ ☎: 0755-2789703, मो.9425016879

सुमतिनाथ अविचल कूट

संकलन- श्रमणी आर्यिका विबोधश्री माता जी

अभिनंदन नाथ भगवान के मोक्ष जाने के नौ लाख करोड़ सागरोपम काल बीतने पर सुमति नाथ भगवान का जन्म अयोध्या नगरी में हुआ था। तथा सम्मेद शिखर के अविचल कूट से एक हजार मुनियों के साथ मोक्ष प्राप्त किया। इस कूट से १ अरब ८४ करोड़ १४ लाख ७८१ मुनियों ने मुक्ति प्राप्त की।

जो मनुष्य इस कूट की वंदना करता है उसे कोटि प्रोषधोपवास का फल मिलता है। जो मनुष्य सर्व कूटों की वंदना करता है उसके समान कौन हो सकता है ?

इस कूट संबंधी एक कहानी आती है कि- जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में मनोहर योध नामक देश है, उसमें पद्मपुर नामक नगर में आनंद सेन नाम का राजा अपनी रानी पद्मावती के साथ रहता था। इनके दो पुत्र थे शुभसेन व मित्रसेन। एक बार राजा वन में गया तो वहाँ चारण ऋधि धारी मुनि के दर्शन किये।

राजा ने मुनि महाराज से प्रश्न किया कि हे स्वामिन! मेरी आयुष्य कितनी है ? मुनिराज ने कहा राजन् तुम्हारी केवल तेरह महिने की आयुष्य शेष है। यह सुन राजा ने दीक्षा लेने की इच्छा व्यक्त की, किन्तु महाराज के मना करने पर राजा ने पुन: निवेदन किया नाथ! तब इस भव से मुझे मुक्ति कैसे प्राप्त होगी ? पुन: मुनिराज बोले- सम्मेद गिरि की यात्रा करने से। राजा यह सुन आनन्दित हुआ।

शुक्ल वस्त्र धारण कर राजा शीघ्र ही बत्तीस हजार भव्यों के साथ यात्रा को निकल पड़ा। मन में मोक्षाभिलाषा धारण करके ससंघ नगाड़ों की आवाजों के साथ बहुत आनंद व उत्साह से सम्मेद गिरि के अविचल कूट की वंदना की। अष्ट द्रव्यों से पूजन की व पुन: पुन: नमस्कार करके अपने पुत्र को राज्य सोंपकर, शीघ्र ही दीक्षा धारण कर ली। उग्र तप से शीघ्र ही केवलज्ञान प्राप्त कर लिया व सम्मेद गिरि की यात्रा के पुण्य से मोक्ष प्राप्त किया।

अविचल कूट के ध्यान करने से मनुष्य को अविचल सिद्धि की प्राप्ति होती है। इसलिए भव्य जन अविचल सिद्धि के लिए, अविचल भाव से, अविचल कूट का स्मरण करें।

अभियान को आगे बढ़ाने का प्रण लेती हूँ

सबसे पहले महाराज एवं सभी साधुवृंदों को मेरा प्रणाम मेरा बड़ा सौभाग्य है कि आज इतने महाराज एवं माताजिओं के दर्शन प्राप्त हुए। मेरे बड़े भाई सुरेश जी को मैं धन्यवाद देती हूँ उन्होंने मुझे यह अवसर दिया एवं गुरुदेव के आगमन की सूचना दी।

यहाँ इतने महान संत के सामने कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाना है। सूर्य अपनी किरणों से प्रकाश फैलाता है उसके होते हुए दीपक के प्रकाश की आवश्यकता नहीं एवं कोई अस्तित्व भी नहीं होता। फिर भी मैं कुछ कहना चाहती हूँ।

अक्सर लोगों ने वृक्ष के ऊपर पक्षियों के घोषलों को देखा होगा। पक्षी यत्र-तत्र परिभ्रमण कर तिनका लाते हैं और उन्हें बच्चों के मुख में चुगाते हैं। उन्हें विशेष बुद्धि शक्ति प्राप्त नहीं है। मानव जीवन प्राप्त नहीं है। फिर भी वे इतना कार्य करते हैं। लेकिन हम यदि मानव होकर भी घर परिवार के पालन तक ही सीमित रहे तो यह कोई समझदारी नहीं है। हमारा कर्त्तव्य है कि- हम अधिकारों को पाकर उसका अभिमान किये बिना अपने कर्तव्यों का पालन करें। अपने परिवार से बाहर सृष्टि के दीन दुखियों की भी रक्षा करें। देश वासियों के हित में कार्य करें।

मैं शिक्षामंत्री के नाते बच्चों के पाठ्यक्रम में आपकी आज्ञानुसार कुछ सुधार करूँगी ताकि निश्चित रूप से हमारे बच्चे आजीविका के साथ नैतिकता एवं धार्मिकता से जुड़ सके। आपके तथा परमात्मा के आशीर्वाद से मैं इस कार्य में अवश्य सफल होऊँगी ऐसा विश्वास रखती हूँ और आपके व्यसन मुक्ति अभियान को आगे बढ़ने का प्रण लेती हूँ।

श्रीमती नीरा यादव (शिक्षामंत्री) झारखण्ड

आज के श्रवण कुमार

श्रमणी आर्यिका वियुक्तश्री माता जी

श्रमणों को भी भारी पड़ते, आज तो वृद्ध पुराने युवा पीढ़ी अब क्या सीखेगी, जाने या अनजाने इस युग के या वृद्धजनों के भाग्य कमल खिले हैं श्रमणराज गुरु विराग में ही, श्रवणकुमार मिले हैं।

'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'- जीव परस्पर में उपकार करते हैं। चाहे माँ-पुत्र के रूप में, पिता-पुत्र के रूप में या अन्य किसी रूप में। घर-गृहस्थी के रिश्ते तो फिर से स्वार्थ से बंधे होते हैं पर दुनियाँ में सबसे प्यारा और नि:स्वार्थ रिश्ता गुरु-शिष्य का होता है। गुरु के मन में कभी ये भावना नहीं जगती कि आज मैं शिष्य को दीक्षा-शिक्षा दूँगा तो कल वह भी मेरा नाम लेता रहेगा अथवा मेरी खूब सेवा प्रशंसा, व्यवस्था होगी। न कभी शिष्य सोचता है कि जिस दिन गुरु मुझे शिक्षा आदि नहीं देंगे उस दिन से मेरा रास्ता अलग हो जाएगा।

संप्रति विचारणीय तथ्य यह है कि आज बाकी तो ठीक है पर श्रमण संघों में ये विचारधारा अधिक आ गयी है कि संघ में युवा, पढ़े-लिखें योग्य शिष्य आएँ, वृद्ध नहीं। सोचने की बात है कि वृद्धों के बिना ये युवा कहाँ से आए और युवा भी कल वृद्ध होंगे। दीक्षाप्रदाता भी कल वृद्ध होंगे फिर वृद्ध सेवा नामक महान गुण संघ में कैसे आएगा। वृद्ध भी तर सकते हैं। गुरुवर का कहना है-

'अनपढ़ भी तर सकते हैं और कम पढ़े लिखे भी, समस्या उनकी है जो अधिक पढ़ लिख जाते हैं और गुरु को ही पढ़ाने लगते हैं।'

वृद्ध कम से कम माला तो फेरेंगे और जितना बनेगा ज्ञान-ध्यान-तप करेंगे। पूज्य गुरुवर वृद्धों को भी यूँ ही दीक्षा नहीं देते, उनमें भी दृढ़ता से अनुशासन, वैराग्य समता आदि के ठोस संस्कार दे देते हैं। परिणाम स्वरूप इस संघ में युवा ही नहीं, वृद्ध भी २४ घंटे ज्ञान-ध्यान-तप में लीन देखे जाते हैं और तो क्या हर कक्षा के बाद वे भी परीक्षा देते हैं और उत्तीर्ण ही नहीं, फर्स्ट आदि डिवीजन पा लेते हैं।

संघ में ९५ वर्षीय श्रमण मुनि श्री १०८ विश्वज्योति सागर जी तो गुरु सेवा हेतु भी सुबह शाम तत्पर रहते थे व प्रवचन इतने जोश से करते कि स्पष्ट समझ में आते व लगता कि कोई युवा बोल रहा है।

श्रमण मुनि श्री १०८ विश्वधर्म सागर जी की सल्लेखना समाधि के समय किन्हीं श्रावकों ने उन्हें नेपकीन देना चाहा कि लीजिए नयी है, आपको सर्दी हो गयी है, पोछ लीजिए। लेकिन गुरुवर द्वारा दिये गये वे संस्कार कहाँ जाएँगे जो उन्होंने माँ की तरह दीक्षा के समय शिष्य को दिये थे। मुनिश्री ने मना कर दिया और कहा- जो भी लेंगे गुरु से लेंगे। अपनी वस्तु वासप ले जाइए। श्रावक भी खुश हुआ। धन्य है संघ के अनुशासन को।

गुरुवर स्वयं कहते हैं- माँ अपने बालक को आंचल और काजल द्वारा बुरी नजर से बचा लेती है। पर हमारे पास न आंचल है न काजल, मात्र अनुशासन है जिसमें हम अपने शिष्य को अंतेवासिन के रूप में रखते है ताकि बाहर की ख्याति आदि का प्रदूषण उसे न लगे।

लोग प्राय: श्रवण कुमार का बहुत उदाहरण दिया करते हैं। देना भी चाहिए ताकि आज भी श्रवण कुमार उत्पन्न हों अथवा उनसी सेवा भावना उत्पन्न हो। लेकिन प्रक्टिकल में देखें तो पूजय राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज को देखें जिन्होंने अपने गृहस्थिक जीवन के माता-पिता क्रमश: श्रीमती श्यामा जी को क्षु. आर्यिका दीक्षा व समाधि तथा श्रीमान कपूरचंद जी को क्षुल्लक मुनि दीक्षा देकर समाधि कराकर बहुत बड़ा कीर्तिमान स्थापित किया है। अब बोलो क्या ये श्रवण कुमार नहीं हैं, जो माता-पिता को सारी तीर्थ यात्रा कराने के साथ-साथ ज्ञान, ध्यान, तप में भी यथाशक्य जोड़े

हुए हैं और अपने ही माता-पिता को नहीं सारे वृद्ध माता-पिताओं को दीक्षा से समाधि तक की सफल यात्रा करा रहे हैं। गुरु जी ने अब तक ११० समाधि कराके समाधि सम्राट का गौरव पाया है।

एक बार श्रवण बेलगोला में क्रांतिकारी संत पू. श्रमण मुनि श्री १०८ तरुण सागर जी ने पूछा- आचार्यश्री! इतनी शिष्य मंडली कहाँ से जोड़ ली। आचार्य श्री बोले- जोड़ी नहीं है, जुड़ गयी है।

बात सर्वथा सत्य है। संघ में रहकर देखो गुरु को एक मिनट भी फुर्सत नहीं है, पर प्रभावना जोरों से चली है। चाहे आत्म प्रभावना हो या धर्म प्रभावना, वैसे दोनों एक है। जो आत्मा को धर्म से प्रभावित करेगा वही तो सबको धर्म से प्रभावित कर सकेगा। न उन्हें युवा शिष्य चाहिए न वृद्ध न चाह है न दिखावा है। गुरु के यहाँ जो है वहीं उनके जैसा सादा है।

संघ में वृद्ध सेवा की भावना गुरुवर ने इस तरह से जोड़ दी है कि युवा पीढ़ी भी देखकर हाथ जोड़ लेती है धन्य है यह संघ। वह सोचती है- हम भी माता-पिता की कुछ तो सेवा करेंगे। यह है साक्षात् प्रेक्टिकल शिक्षा। जो युवा पीढ़ी चाहती है।

कहते नहीं, करके दिखाते हैं, वादा नहीं करते, वादा निभाते हैं।
ऐसे गुरुवर को शत्-शत् नमन है, हम भी उन्हें हृदय से बुलाते हैं।।

जीव जन्तुओं द्वारा रात्रि भोजन की उपेक्षा

संकलन-श्रमणी आर्यिका विसंयोजनाश्री माता जी

पशु-पक्षी जब कभी अस्वस्थ होते हैं तो वे भोजन का त्याग कर देते हैं और अधिकांश पक्षी रात्रि में चलना, फिरना व भोजन करना पूर्णत: बन्द कर देते हैं। शाकाहारी पशु-पक्षी अभी तक इस नियम का पालन करते आ रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि शाकाहार प्राणियों के लिए रात्रि भोजन प्रकृति के प्रतिकूल है। मनुष्य शाकाहारी प्राणियों की श्रेणी में गिना जाता है। अत: मनुष्य को अस्वस्थ होने पर गरिष्ठ तामसिक और रात्रि भोजन का त्याग करना चाहिए और आवश्यकतानुसार उपवास करना चाहिए।

इस प्रकृति में मक्खी सबसे ज्यादा निकृष्ट मानी जाती है क्योंकि वह गंदगी पसन्द करती है। एक कहावत भी है 'दुर्जन व्यक्ति कलह चाहता है, ज्ञानी व्यक्ति शांति चाहता है और मक्खी गंदगी चाहती है।'

ऐसी निकृष्ट गंदगी पंसद करने वाली मक्खी भी रात्रि भोजन करना पसंद नहीं करती। वह इतनी समझदार होती है कि दिन में भी मिष्ठान्न से भरे हुए पात्रों को खाने के लिए रख दिये जाये ओर अंधेरा कर दिया जाय तो उस अंधेरे में एक कण भी खाना पसन्द नहीं करती, परंतु मानव ऐसा प्राणी है जो मक्खी से भी गया गुजरा हो गया है। मनुष्य को इस मक्खी से शिक्षा लेनी चाहिए कि वह रात्रि भोजन ना करे।

पेड़ पौधों का रात्रि भोजन त्याग- प्राकृतिक जीवन जीने वाले पेड़ पौधे भी रात्रि में भोजन निर्माण नहीं करते। वे सूर्य प्रकाश की उपस्थिति में पौधें के हरितलवक (क्लोरोफिल) के साथ वायु मण्डल से कार्बन डाई ऑक्साइड गैस ग्रहण करके काबोहाइड्रेट (ग्लूकोस, फ्रक्टोस) एवं आक्सीजन का निर्माण करते हैं। अत: हे मानव प्राणी जरा विचार करो कि जब पेड़ पौधे भी रात्रि भोजन का निर्माण कर ग्रहण नहीं करते तो फिर तुम क्यों रात्रि भोजन करते हो? ये पेड़ पौधे स्वयं उपदेश देते हैं कि रात्रि भोजन नहीं करना चाहिए।

षडावश्यक और पर्यावरण सन्तुलन

पर्यावरण के व्युत्पत्तिजन्य अर्थ के प्रति जैन दर्शन का दृष्टिकोण कभी भी सरक्षणवादी नहीं रहा क्योंकि 'परि समन्तात् आत्मा येन आव्रियते तदेव पर्यावरण कर्मावरणमिति वा' इस सीमित व्याख्या के अनुसार तो कर्मावरण ही आत्मा को सर्वत: आवृत किये हुये है। तथा जैन दर्शन का तो मूल उद्देश्य ही कर्म विनाश पूर्वक आत्म मुक्ति का रहा है। अत: इस रुढ अर्थ में जैन दर्शन का दृष्टिकोण पर्यावरण विनाशक तो कहा जा सकता है, पर्यावरण संरक्षक नहीं। किन्तु आज के प्रचलित एवं अभिप्रेत सन्दर्भो में पर्यावरण की यह व्याख्या सभवत: न तो किसी को इष्ट है और न ही प्रस्तुत प्रसंग में अपेक्षित है। सम्प्रति पर्यावरण के प्रचलित अर्थो एवं परिभाषाओं को संक्षिप्त रूप से कहा जाये तो प्राकृतिक तत्वों के सन्तुलन की वह स्थिति जिसमें समष्टि का हित संरक्षित हो, वही हमारे चारों ओर विद्यमान वातावरण पर्यावरण है तथा उसके निमित्त जैन दर्शन के सिद्धान्त विशेषत: आचार परम्परा के प्रतिमान रुप में संरक्षणवादी ही है, और यही तथ्य षडआवश्योको के परिप्रेक्ष्य में यहाँ विवेच्य एवं विचार्य है।

जैन दर्शन में आचार परम्परा का प्रवर्तन पर्यावरण संरक्षण या पर्यावरण सन्तुलन की दृष्टि से किया गया है- यदि ऐसा सोचा या कहा जाये, तो नि: सन्देह यह अत्युक्ति ही होगी। किन्तु उसमें वर्णित नियम और उपनियम पर्यावरण की दृष्टि से निर्मित न होते हुए भी पर्यावरण के हित में सदा से सहयोगी रहे है। तथा आज के दिनों दिन विकराल होते जा रहे पर्यावरणीय संकट की स्थिति में उनकी भूमिका पर विचार करना अपेक्षित ही नहीं अनिवार्य हो जाता है। क्योंकि ये नियम हानि रहित एवं व्यापक हित के नियामक है तथा कई नियमों में तो पर्यावरण के प्रति कल्याण के स्वर स्फुट रूप से मुखारित है। जैन दर्शन की आधार परम्परा प्राय: धार्मिक दृष्टि कोण से देखी जाने के कारण उसका क्षेत्र बहुत सीमित रहा है, किन्तु वह अति गम्भीर एवं सूक्ष्म वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है। इसके नियम हमारे आन्तरिक एवं बाह्य उभविध पर्यावरण के संरक्षण एवं परिष्कार के लिए अत्यन्त वस्तु परक एवं मनोवैज्ञानिक है।

इस आधार परम्परा के प्रमुख दो पक्ष है- श्रावकाचार एवं श्रमणाचार। उक्त दोनों ही परम्पराओं में पर्यावरण के प्रति अत्यधिक उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार जैन आचार शास्त्रों में प्राप्त होता है। विशेषत: प्रकृत सन्दर्भित पर्यावरण के प्राकृतिक स्वरूप के प्रति जैन श्रमणाचार का दृष्टि कोण पूर्णत: संरक्षणवादी है जबकि श्रावकाचार इसके विकास एवं संरक्षण दोनों के लिए समर्पित है, जबकि श्रावकाचार इसके विकास एवं सरंक्षण दोनों के लिए समर्पित है। वैसे तो जैन श्रमणाचार एवं श्रावकाचार के अनेकों ऐसे पक्ष है, जो कि पर्यावरण के प्रति उदार एवं अनुकूल दृष्टि कोण रखते हे, तथापि चूकि यहाँ षडआवश्यक सिद्धान्त की परि सीमा में ही सीमित रहकर प्रकृत विषय का प्रस्तुतीकरण अपेक्षित है, अत: इसी मर्यादा का पालन प्रस्तुत निबन्ध में किया जायेगा।

षडआवश्यक जैन आधार परम्परा का ऐसा विशिष्ट पद है जो कि जैन श्रमणाचार एवं श्रावकाचार दोनों में प्रयुक्त होता है। यद्यपि दोनों के षडआवश्यकों के अंगों तथा परिपालन स्तर में पर्याप्त भिन्नता है, तथापि उनमें दृष्टिगत साम्य भी प्रभूत है। इन दोनों की पर्यावरण के सम्बन्ध में उपयोगिता रेखाकिंत करने के लिए विश्लेषण निम्नानुसार प्रस्तुत है।

श्रावकाचार के षट् आवश्यकों में पर्यावरणीय चिन्तन-

देवपूजा गुरुपास्ति-स्वाध्याय: संयमस्तप:।
दानञ्चेति गृहस्थाणां षट कर्माणि दिने-दिने।।

अर्थात्-

१. जिनेन्ददेव की पूजा करना।
२. सच्चे गुरु की उपासना करना।
३. स्वाध्याय करना।
४. संयम पालन करना

५. तपश्चर्या करना।

६. दान देना।

ये छह कर्तव्य श्रावकों को प्रतिदिन नियमित रूप से करने चाहिये।

यद्यपि जैन आचार शास्त्र के अनुसार उक्त छह आवश्यक कर्मों की विशद व्याख्या प्राप्त होती है। किन्तु वह मुख्यतया आत्मा के 'अवश' अर्थात् स्वाधीन बनाने के मूल उद्देश्य से है परन्तु यहाँ पर इनके पर्यावरणापेक्षी बिन्दुओं का विवेचन ही अपेक्षित है।

१. देव पूजा- जैन श्रावकाचार के अनुसार यह श्रावकों को प्रतिदिन करने योग्य आवश्यक कार्य है। इनमें श्रावक प्रति दिन जिन मंदिर जाकर जिनाभिषेक से यह कार्य प्रारम्भ करता है तथा शान्ति पाठ के उच्चारण पूर्वक इसे पूर्ण करता है। जिनाभिषेक के समय जो मन्त्रोच्चारण बताये गये है, उनमें कामना की गई है कि जिनाभिषेक एवं पूजन के प्रसाद से वृक्ष, लता, पत्र, फल, पुष्प आदि की व्याधियां नष्ट हो तथा ग्राम नगर खेडा, कर्डव, द्रोण मुख वन उपवन, नदी, पर्वत, वायु, आकाश आदि सभी आनन्दित हो, अर्थात् उनमें कोई विरुपता या विकृति न आवे। इसी प्रकार शान्तिपाठ में कहा जाता है- वर्षा समय पर एवं समूचित हों, कहीं भी अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि न हो। मंगलपाठ में कहा गया है कि ऊँचे पर्वत शिखरों आदि पर भी प्रभूत वर्षा हो। ये सारे कथन पर्यावरण की शुद्धि संरक्षण एवं समृद्धि से सम्बन्धित है। धरती, नदी, पर्वत, वनस्पति एवं वायु मण्डल आदि की शुद्धि के साथ साथ सर्वत्र पर्याप्त एवं समयोचित वर्षा होती आदि शुद्ध एवं सन्तुलित पर्यावरण के ही लक्षण है। पर्यावरण की शुद्धि एवं संरक्षण के प्रति उत्तरदायी हुए वगैर ये सारे कार्य सम्भव ही नहीं है।

२. गुरु की उपासना- जैन श्रमणों की जीवनचर्या प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति अनन्य श्रद्धा एवं समर्पण का भाव व्यक्त करती है। सृष्टि के प्राणी मात्र को किसी भी प्रकार पीडा न पहुंचाने एवं दयाभाव मिट्टी एवं जल आदि का भी अत्यन्त सावधानी पूर्वक उपयोग करना ये सब पर्यावरण के प्रति समर्पित भाव है। ऐसे गुरु की उपासना करने वाला श्रावक स्वत: इन पर्यावरणीय तत्वों के प्रति सावधान एवं संरक्षाणार्थ सचेष्ट रहता है।

३. स्वाध्याय- पृथ्वी, जल, अग्नि वायु एवं वनस्पति आदि में आज का विज्ञान जीवन नहीं मानता है तथा यदि मानता भी है तो हमारे आपके जैसे जीव तत्व का सन्निधान उनमें नहीं मानता है। किन्तु जैन शास्त्रों में इन सबसे मनुष्यों के समान ही जीव तत्व की उपस्थिति बतायी गई है तथा अहिंसा प्रधान दृष्टिकोण से उनके प्राणों का पीडन न हो ऐसा उपदेश दिया गया है। जब तक अनिवार्य न हो इनके कार्य कलापों में हस्तक्षेप न करने की प्रेरणा दी गई है। इतना ही नहीं चींटी से लेकर हाथी तक प्रत्येक प्राणी के संरक्षण एवं अवध का उपदेश जैन शास्त्रों के है क्योंकि प्राणी संरक्षण के बिना पर्यवरणीय सन्तुलन कदापि सम्भव ही नहीं है। ऐसे संस्कार हमें स्वाध्याय से प्राप्त होते हैं।

४. संयम- जैन श्रावकाचार में संयम के दो स्तर है- इन्द्रिय संयम और प्राणी संयम। आज के तथा कथित वैज्ञानिक आविष्कार जो वर्षा की सतव एवं गम्भीर मेहनत पर आधारित कहे जाते है इन्द्रियों के विषयों की सुविधा को लक्ष्य में रख कर बनाये जाते हैं वे पर्यावरण के लिए घातक प्रदूषण विसर्जित करते हैं जिसके फलस्वरूप आज वायु की विषाक्तता ओजोन, क्षीणता, अनावृष्टि एवं विनाशकारी भूकम्प जैसे भयावह दृश्य आज आम बात हो गये है। इन्द्रिय संयम की भावना इन भौतिक आर्कषणों के प्रति जीव की आसक्ति को रोकती है जो कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति एक विनम्र श्रद्धाभाव है।

प्राणी संयम के सभी छोटे बड़े जीवों (एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक) के प्रति दयाभाव तथा बुद्धि पूर्वक उनकी सुरक्षा की भावना समाविष्ट है। आज के कीटनाशक जैसे भयंकर प्रयोग अन्न जल एवं वायु को विषाक्त बनाकर प्रकृति एवं पर्यावरण को घातक बना रहे हैं, जो वस्तुत हमारे जीवन रक्षक है।

५. तप- आन्तरिक एवं बाह्य पर्यावरण के प्रति 'तप' का महत्वपूर्ण योगदान है। श्रावकाचार के दो व्रत अनर्थ दण्ड एवं परिग्रह परिणाम व्रत इस दृष्टि से विशेषत: विचारणीय है। अनर्थ दण्ड व्रत में पृथ्वी, जल, वनस्पति एवं वायु आदि के प्रति प्रमाद पूर्ण आचरण एवं इनके दुरुपयोग को रोकने का संदेश है जो कि प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण में अत्यन्त उपयोगी उपादान है। इसके साथ ही श्रावकों के लिए परिग्रह परिमाणुव्रत जो विधान है, तदनुसार यह निर्देश किया जाता है कि बाह्य

भौतिक संसाधनों का संग्रह व्यक्ति अपनी परिहार्य कावश्यकताओं के अनुसार करें, न कि वैभव प्रदर्शन या अनावश्यक वृत्ति के कारण। यह वृत्ति व्यक्ति को सन्तोषी बनाती है, जिससे कि प्रकृति एवं पर्यावरण के अन्धाधुन्ध दोहन के दुष्प्रभावों को रोकने में इसकी प्रभावी भूमिका सिद्ध होती है।

६. दान– मनुष्य प्रकृति से समस्त सुख साधन ग्रहण करता है, किन्तु बदले में उसे क्या देता है ? दान भाव उसे यह प्रेरणा देता है कि तुम मात्र लेना ही नहीं, देना भी सीखों। वृक्षों से फल, छाया, आक्सीजन आदि लेते हो तो जल, खाद व संरक्षण उन्हें प्रदान करो। वनों से अपने उपयोग के लिए लकड़ी एवं वनौषधि लेते हो तो नवीन वृक्षारोपण द्वारा उनकी क्षति पूर्ति करते रहो। इस प्रकार दान भाव हमें प्रकृति एवं पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराता है।

उपरोक्त यह षडआवश्यक व्यक्ति की आन्तरिक पर्यावरण शुद्ध होना अर्थात् क्रोधादि कषायों एवं विषयैषणा की क्षीणता/मदता भी अपेक्षित होती है अत: इनके प्रति इन षड आवश्यकों का विशेष योगदान होने से इनका पर्यावरण सन्तुलन में महत्वपूर्ण योगदान सुस्पष्ट है।

श्रावकाचार के उपरान्त श्रमणाचार के षडआवश्यकों का भी विवेचन प्रकरण प्राप्त है।

श्रमणाचार के षडआवश्यक–समदाथओ य वंदण, पाडिवकमणं तहेवणादव्वं।
पच्चक्खवाण विसग्गो करणीया सया छाप्पि।।

अर्थात्

१. समता या सामायिक २. चतुर्विंशतिस्तव ३. वंदना ४. प्रतिक्रमण ५. कायोत्सर्ग एवं ६. प्रत्याख्यान– ये छह करने योग्य आवश्यक कर्तव्य है।

श्रमणाचार के आवश्यक कर्तव्यों में आन्तरिक पर्यावरण शुद्धि ही मूल लक्ष्य रहा है। साथ ही प्राणी मात्र के संरक्षण के प्रति सतत सचेष्ट रहकर इन षड आवश्यकों का बाह्य पर्यावरण के प्रति भी अतुल्य योगदान है।

१. सामायिक– मैं सर्व सावद्य योगों का त्याग करता हूँ। ऐसी प्रतिज्ञा सामायिक में की जाती है तथा योग शब्द मन, वचन, काय की चंचलता से होने वाला आत्म प्रदेश परिपन्दन का सूचक है। मन, वचन ओर कर्म से हिंसादिक पाप कर्मो का त्याग करने वाला पर्यावरण सन्तुलन का महत्वपूर्ण सहयोगी तत्व है जो विश्व ग्राम, की परिकल्पना आज प्रस्तुत की जा रही है, उसमें सामायिक का महत्वपूर्ण योगदान होगा, क्योंकि स्व पर में राग द्वेष रहित होना, शत्रु मित्र, मान अपमान में समभाव रखना ही सामायिक माना गया है।

२. चतुर्विंशविस्तव– समय समय पर आध्यात्मिक एवं बाह्य पर्यावरण जागृति सन्देश दिव्यता से प्रसारित करने वाले वृषभदेवादि चर्तुविंशति तीर्थ करों का स्तव भी इसी दिशा में एक योगदान माना जा सकता है। क्योंकि तीर्थकर ऋषभदेव ने आत्मिक विद्या के साथ–साथ असि मसि कृषि वाणिज्य आदि कलाओं का विकास किया था, पञ्च महाव्रत रूपी धर्म का प्रवर्तन किया था, जो भौतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण उपादान बनें।

वन्दना– आन्तरिक निर्मलता आदि गुणों के प्रति विनय भाव जगाती है, जो वय, जाति, वर्ण आदि की संकीर्णताओं से ऊपर होता है। वन्दना में इन सभी भावों का उदात्त परिपालन दृष्टिगत होता है प्राकृतिक एवं पर्यावरण सम्बन्धी सन्तुलन के लिये यह एक श्रेष्ठ आदर्श भावना है।

४. प्रतिक्रमण– सामायिक में जिन सावद्य योगों का त्याग किया था यदि पुन: उन्हें जीवन प्राप्त हो जाये, तो उनका पुन: विधि पूर्वक त्याग करना प्रतिक्रमण हैं। प्रतिक्रमण में दुक्कडं कहकर प्रकृति एवं पर्यावरण के अंगभूत किसी भी जीव मात्र को अज्ञान या प्रमादवश कोई कष्ट पहुंचा हो तो उसका दुष्यप्रमाण नष्ट होने के लिये उसके मिथ्या होने की भावना करते हैं। प्रकृति एवं पर्यावरण के मूलभूत जीव राशि के प्रति इतना सचेष्ट एवं संयत व्यवहार करने वाले श्रमण पर्यावरण के संरक्षण की सुनिश्चितता के प्रतीक कहे जा सकते है।

५. कार्योत्सर्ग– चूंकि शरीर की सुविधाओं के लिए ही व्यक्ति अनेक विद्य ऐसे दुष्कर्म करता है जो कि प्रकृति एवं

पर्यावरण के लिए घातक होते हैं। देहे ममतवनिरास: कार्योत्सर्ग इस परिभाषा के अनुसार जब शरीर में ममत्व घटाया जायेगा, तो तन्निमित्तक दुष्कर्म भी स्वत: ही घटेंगे। भक्तपान, गोचरी आदि क्रियाओं में हुए दोषों के निवारण के लिये श्रमण कायोत्सर्ग करते है अर्थात् इन कर्मो से भी यदि पर्यावरण के अंग जीवराशि को कोई पीड़ा या बाधा पहुँचती हो तो उसके प्रति भेदभाव कायोत्सर्ग में निहित होता है।

६. प्रत्याखान- द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के निमित्त से अपने शरीर में लगे दोषों का त्याग करना प्रत्याख्यान है। यह भी आत्मिक पर्यावरण एवं बाह्य पर्यावरण के सन्तुलन के लिए एक उपयोगी उपादान है।

उक्त विवेचन से सुस्पष्ट है कि श्रावकाचार एवं श्रमणाचार के षड आवश्यकों में आत्मिक एवं बाह्य पर्यावरण संबन्धी सन्तुलन एवं संरक्षण के लिए अनेकों महत्वपूर्ण सन्देश निहित है, जिन्हें व्यापक सन्दर्भों में सोचने एवं अपनाने की अपेक्षा है।

करो वंदना, हरो क्रन्दना

(कृतिकार- आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज)

हे निरंजनस्वरूपी आत्मन्! कर तू वन्दना, यदि नहीं चाहता है संसार के बन्धनों से बंधना। क्योंकि वन्दना ही हरती है क्रन्दना। जो नहीं कर पाता श्री जिनेन्द्र की वन्दना, उसके जीवन में अहर्निश बनी रहती है क्रन्दना और उसकी भी नहीं होगी कभी वन्दना। हाँ, यदि चाहता है स्व की वन्दना, तो पहले कर वीर प्रभु की वंदना। भो साधक! वंदना भी तेरी एक आवश्यक क्रिया है। इसे छोड़ मत देना, क्योंकि यह क्रिया जीवनोत्थान, आत्मोकर्ष की परम-प्रक्रिया है। ऐसी वन्दना करना जिससे पुन: न करने पड़े। सच्ची वंदना सीख लेता है, उसी के निश्चय वंदना संभव है। बिना व्यावहार वंदन के विश्चय वंदना वही है, जिससे कर्मों का बन्ध नहीं होता और आत्म-प्रभु का दर्शन बंद नहीं होता। अत: वंदना ऐसी करो जिससे बन्ध न हो और आत्मावलोकन बंद न हो। वंदना को आगम में दो धाराओं में वर्णित किया है, निश्चय एवं व्यवहार। जो व्यवहार-वंदना संभव नहीं। एक तीर्थंकर के गुणों का स्मरण करना, एक तीर्थेश की प्रधानता से नमस्कार करना, वंदना है। आलस्य/प्रमाद को छोड़कर निर्दोष भक्ति-पूर्वक जो गुण-कीर्तन किया जाता है, वही वंदना वास्तविक रूप से बन्धन से बचा सकती है। किन्तु लोकरंजन के रस से रंगकर की गई वन्दना बन्ध का ही कारण होगी, संवर-निर्जरा-मोक्ष का नहीं। अत: वन्दना को निरालस्य भाव से करो, तभी व्यवहार-वंदना फलितार्थ होगी। व्यवहार-वंदना ही निश्चय-वंदना की साधक है। यानी व्यवहार-वन्दना जब तक प्रस्फुटित नहीं होगी तब तक निश्चय वंदना कैसे हो सकती है? जिसके जीवन में व्यवहार-वंदना ही नहीं चल रही, वह निश्चय-वंदना क्या करेगा? व्यवहार से तीर्थंकर जिन-देव की वंदना की जाती है, निश्चय से निजशुद्धात्मा की एवं परमशुद्ध निश्चयनय से न कोई वन्दक है और न कोई वन्दनीय। लेकिन यह दशा परम साधक, निर्विकल्प, गुप्ति में गुप्त परम योगी की ही होती है। अत: हे आत्मन्! उसी की ओर अपनी दृष्टि रख, वही तेरा चरम लक्ष्य, चरमोत्कर्ष बिन्दु है।

-'निजात्म तरंगिणी' से साभार

आवश्यक सूचना

आजीवन (ग्यारह वर्षीय) एवं त्रिवर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता अवधि समाप्त हो गई है या होनेवाली है। अत: सदस्यता नवीनीकरण करा लें जिससे पत्रिका निरन्तर भेजी जा सके।

प्रबन्ध सम्पादक : विरागवाणी

वास्तु में भगवान

भारत देश एक धार्मिक देश है। यहाँ जो भी कार्य किया जाता है उसमें धार्मिक अंश गर्भीत रहता है। हर धर्म को मानने वाले धर्म में आस्था रखते हैं वास्तु शास्त्र को मानव साधारणत: भूखण्ड के बारे में जानकारी देने वाला शास्त्र समझते हैं मगर ऐसा नहीं। यह विज्ञान मानव को जीवन जीने की कला सिखाता है मानव को जीने के लिए तीन चीज अति आवश्यक है। रोटी, कपड़ा और मकान। रोटी, कपड़ा तो किसी तरह से व्यवस्था कर लेते हैं। पर अपना घर बनाने में काफी पुरुषार्थ और मेहनत करनी पड़ती है, तभी संभव होता है।

समरांगण सूत्रधार में वर्णित है-

देश: पुरम् निवासश्च समवेश्मासनानि च, यछदी दृशमन्यद्य ततच्छ्रेयस्करम् मतम्।
वास्तुशास्त्रावृत्ते तस्य न स्याल्लक्षणनिश्चय:, तस्माल्लोकस्य कृपया शास्त्रमेव दुदीर्यते॥

सम्पूर्ण विश्व, नगर, सदन, मकान, महल और व्यापारिक स्थल या किसी तरह का निर्माण कार्य एवं पलंग, सोफा, आलमारी, टेबल, कुर्सी इत्यादि वस्तुओं में वास्तुशास्त्र के नियमों का पालन करना मानव मात्र के लिए लाभदायक होता है।

भारत वर्ष में जब भी भगवान शब्द का उच्चारण किया जाता है प्राणी मात्र नतमस्तक हो जाते हैं। भगवान शब्द क्या है, इस शब्द रूपी नाम का अर्थ क्या है ? आज हम अल्प बुद्धि इसे जानने का साहस करते हैं।

भ- भूमि

ग - गगन (आकाश)

व - वायु

आ - अग्री

न - नीर (पानी) पाँच तत्वों से प्रकृति, मानव शरीर या प्राणी मात्र की रचना हुई है।

नारायण श्रीकृष्ण ने भगवत् गीता में (७/४)

भूमिरापोनलो वायु: खं मनो बुद्धिरेव च। अहंकार इतीयं में भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥

नारायण श्रीकृष्ण ने प्रकृति को आठ भागों में विभाजित किया है - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार। प्राणी मात्र इस संसार रूपी महासमुद्र में रहते हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की कामना करते हैं और खुशयाली, समृद्धि, सफलता, संपन्नता पाने की इच्छा रखते हैं वास्तु विज्ञान के नियमों का पालन करें यह विज्ञान उपरोक्त कार्यों में सफलता दिलाने में आपका सहयोगी रहेगा।

वास्तु विज्ञान आपको क्या देता है, आपसे क्या लेता है ? भूखण्ड का आकार, दिशाएँ, भूखण्ड के अंदर की रचनाएँ, भूखण्ड के अगल-बगल की रचनाएँ, नकारात्मक और सकारात्मक ऊर्जा पैदा करने में सहायक होती है। अज्ञानतावश रचनाएँ प्रतिकूल बनी हो तो नकारात्मक ऊर्जा का वास होता है मानव के अन्दर आत्म विश्वास की कमी आ जाती है। हर चीज में गलतियाँ खोजते रहते हैं गलतियाँ खोजते-खोजते स्वयं गलतियों का पिटारा बन जाते हैं। अमृत रूपी वाणी भी विष के समान लगती है। ये सब नकारात्मक ऊर्जा का खेल है। ईशान में लेट्रीन, कीचन, सेफ्टीक टैंक, सीढ़ियाँ, ओवरहेड टैंक, जेनेरेटर, पहाड़ इत्यादि नकारात्मक ऊर्जा लाने में सहायक हैं। रचनाएँ अनुकूल बनी हो सकारात्मक ऊर्जा का वास होता है। मानव में आत्मविश्वास दृढ़ हो जाता है। हर चीज में अच्छाई खोजते हैं अच्छाई खोजते-खोजते वह आदर्श पुरुष बन जाते हैं। सफलता उनके कदम चूमती है। ईशान में मंदिर जल का स्थान, बगीचा, अंडरग्राउण्ड पानी की टंकी, स्वच्छ वातावरण, खुला स्थान आदि सकारात्मक ऊर्जा लाने में सहायक है।

नकारात्मक ऊर्जा भावना भववर्द्धिनी, सकारात्मक ऊर्जा भावना भवनाशिनी

सुजान मानव को आदि ब्रह्मा नारायण श्रीकृष्ण के बताये हुए उपचार को या व्यवस्था को अपने भूखण्ड की रचनाओं में सम्मिलित करके अपने मानव जीवन को सफल बनायें।

राष्ट्र-भावना

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

देश हमारा भारत प्यारा, सब देशों से न्यारा।
न्यारा! हाँ न्यारा!! भारत देश हमारा।।

बच्चे अच्छे पढ़े लिखें नित, उच्च श्रेणि में आवे,
सुखी रहें सब जीव जगत में, वर्षा शांति की पावे।
पावे! हाँ पावे!! वर्षा शांति की पावे।।
भारत देश हमारा ।। १।।

सदाचारी हों देश के नेता, न्यायशील नीतिज्ञ,
शासक वा प्रशासक नित हों, कर्तव्यों के पालक।
पालक! हाँ पालक!! कर्तव्यों के पालक।।
भारत देश हमारा ।। २।।

कृषक कृषि से इस धरती को, हरी-भरी लहरायें,
हर फसलों से भरा देश हो, शाकाहार अपनायें।
अपनायें! हाँ अपनायें!! शाकाहार अपनायें।।
भारत देश हमारा ।। ३।।

भारत के वे नोजवान जो, सरहद पर खड़े हैं,
संरक्षित हों सदा सभी वे, देश की रक्षा बढ़ावें।
बढ़ावें! हाँ बढ़ावें!! देश की रक्षा बढ़ावें।।
भारत देश हमारा।। ४।।

परमाणु की खड़ी मिशालें देश की शोभा बढ़ावे,
शक्तिशाली में भारत प्यारा प्रगति चहुदिश होवे।
होवे! हाँ होवे!! प्रगति चहुदिश होवे।।
भारत देश हमारा ।। ५।।

अहिंसा सत्य सदाचारमय, मैत्री सभी में जागे,
नशामुक्ति हो, स्वच्छ धरा हो, विराग भावना भायें।।
भायें! हाँ भायें!! विराग भावना भायें।।
भारत देश हमारा ।। ८।।

हंसना मना हैं

1. **चंदा**- मम्मी आप काली साड़ी क्यों पसंद करती हो?
   मम्मी - काले रंग से नजर नही लगती।
   चंदा - तब तो काली साड़ी की आपको जरूरत नही, क्योंकि आपका रंग वैसे ही काला है।
2. **दुकानदार**- मैडम, इतनी देर से आप बहुत कुछ देख रही है पर लिया कुछ नही, आखिर आपको चाहिए क्या?
   भुलक्कड़ महिला- यही याद करने की कोशिश कर रही हूँ।
3. **पत्नि** - अगर मैं 3 दिन तक कुछ न बोलूँ तो तुम क्या सोचोगे?
   पति - यही कि ये 3 दिन कभी पूरे न हो।
4. **पत्नि** - तुम रोज-रोज देर से क्यों आते हो।
   पति- दुर्घटना से देर भली।

शिखर जी यात्रा

श्रमणी आर्यिका १०५ विकुन्दनश्री माता जी

सूरज की थी तेज तपन
चलता था चिंतन और मनन
मन ही मन दिखता था मधुवन
दूर से ही करते थे प्रभु वन्दन
इस तरह पहुचे हम, सिद्ध क्षेत्र मधुवन।।
गुरु विराग के छाँव तले-चलते थे
आ जाए अन्तराय तो हंस-हंस कर सहते थे
पू.श्री कहते थे घबराना नहीं, साथ है हम
इस तरह पहुंचे हम सिद्ध क्षेत्र मधुवन।।
पारस चरणों में लागी है लगन
हर मन रहता था भक्ति में मगन
रास्ता था टेड़ा-मेड़ा वन-सधन
गुरु आशीष पा मन हेाता ये प्रसन्न
इस तरह पहुंचे हम सिद्ध क्षेत्र मधुवन।।
मधुवन में छाये बादल
रिमझिम-रिमझिम बरसा-सावन
गुरुवर के पग रुके नहीं
करते रहे सिद्धों का वन्दन
इस तरह पहुंचे हम सिद्ध क्षेत्र मधुवन।।
आत्मबल जगाते रहे हम
भगवान को मनाते रहे हम
शीघ्र करें सिद्धों का वन्दन
मन में साहस बनाते रहे हम।।
गुरु कृपा से वन्दना की
सिद्ध प्रभु की अर्चना की
रत्नत्रय की साधना की
पूरी मन की भावना की
इस तरह पूर्ण हुई मधुवन की यात्रा
हर बार बुलाना बाबा मधुवन।।

सर्वोदया/ रत्नत्रय वर्धिनी टीका

प.पू. आचार्य कुन्दकुन्द देव की महान कृतियाँ बारसाणुपेक्खा एवं रयणसार पर प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा अत्यन्त ही सरल एवं सहज संस्कृत भाषा में हिन्दी अनुवाद सहित अनुपम टीका जो आगम, अध्यात्म एवं सिद्धान्त की प्रमाणिकता से ओत प्रोत, क्रमशः शोध पूर्ण ग्रन्थ, ११०० पृष्ठीय सर्वोदया एवं १३०० पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी- दो दो भागों में भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित हो चुकी हैं। मंदिर जी, साधु-संघों तथा विद्वानों ने स्वाध्यायार्थ स्वपर ज्ञान वृद्धि हेतु सर्वोदया टीका ४९०/-रूपये प्रत्येक भाग एवं रत्नत्रय वर्धिनी टीका ६५०/- प्रत्येक भाग के मूल्य पर विक्रय हेतु उपलब्ध है-

प्राप्ति स्थान- १. **भारतीय ज्ञान पीठ (विक्रय केन्द्र)**
४४०५/५ अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली पिन को. ११०००३
सं.सूत्र श्री संजय दुवे मो. ८५०६८६२९५४ फोन नं. ९१-०११-२३२४१६१९

२. **श्री सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ**
चैत्यालय मंदिर बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
सं.सूत्र पं. वीरेन्द्र जैन, भिण्ड मो.९७५४८०३२२०

३. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र विरागोदय धर्मधाम,**
पथरिया, जिला- दमोह (म.प्र.)
सं. सूत्र कपिल सिंघई पथरिया, मो. ९८९३७५३२२३

विराग गुरु का जब यहां समवशरण आया

श्रीमती ऊषा जैन, गया

खिल खिलाकर जीते है, खिलखिलाकर खाते हैं,
जिंदगी का ये गीत गुन गुनाकर जीते हैं।
जबसे देखा गुरु विराग सागर महाराज को,
हे गुरुदेव! आपको हम सभी भक्त, दिल से बसाकर जीते हैं।।

वे खुदी को उभार देती है बिगड़ी दुनियां संवार देती है।
वो तागत है गुरु भक्ति में जो जिंदगी में निखार लाती है।।

आज त्रियोग आश्रम में जब गुरुओं का मिलन हुआ तो रोम-रोम पुलकित हो गया। लगता है आज ये त्रियोग आश्रम की धरती पावन हो गई। यूँ तो सम्मेद शिखर जी की धरती अपने आप में अत्यंत पावन पवित्र है लेकिन गुरु विराग का जब यहाँ समवशरण आया तो ऐसा लगता है।

आज का दिन कोई केहमान सा दिख रहा है,
वरदान या कोई चमत्कार लग रहा है।
कोई अजीव सी बहार उड़ी है इस प्रागण में,
यहाँ की धरती पर तो गुलिस्तान खिल रहा है।।

आज पुनीत चेतन्यमति माता जी बार-बार बोल रही थी हे गुरुदेव! मैं अज्ञानी हूँ, मुझे कुछ नहीं आता आप मुझे ज्ञान दो। जिसे सुन मुझे तो ऐसा लग रहा है मानों गुल्लिका की लुटिया का कमाल ही हुआ हो अर्थात् माताजी की भक्ति ने आचार्य श्री विरागसागर जी के पूरे संघ को त्रियोग आश्रम बुला लिया है। कहते हैं-

गंगा के जल में नहाने से सिर्फ पाप का
चंद्रमा की किरणों में बैठने से सिर्फ ताप का
और कल्पवृक्ष अभिशाप का नाश करता है

लेकिन गुरुओं के दर्शन से पाप, ताप, अभिशाप तीनों का नाश हो जाता है ऐसे हैं हमारे गुरुदेव संभव और विरागसागर जी का सान्निध्य।

चांद ने मुझसे पूछा- तेरा गुरु कैसा है
मैंने कहा- बिल्कुल तेरे जैसा है।
हवा बोली- क्या वह खिलता कमल है
मैंने कहा- नहीं, वो तो प्रेम का महल है
खुशबू बोली- क्या वह फूल है
मैने कहा- अरे! फूल तो उनके चरणों की धूल है
नदी बोली- क्या वह जल में रहते हैं
मैने कहा- नहीं, वो तो भक्तों के दिल में रहते हैं
परी बोली- क्या वह जादू की छड़ी है
मैने कहा- उनकी मुस्कान ही जादू की छड़ी है।
सूरज ने कहा- क्या वह देव है।
मैने कहा- नहीं, वो तो देवों से बड़े गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज, आचार्य श्री संभवसागर जी महाराज मेरे गुरुदेव है। अंत में मैं, वीर प्रभु से यही प्रार्थना करती हूँ-

हे भगवन्! तेरी अदालत में मेरी एक जमानत जरूर रखना,
मैं रहूँ या नहीं रहूँ मेरे गुरुदेव को सलामत रखना।।

ॐ जिनाय नमः

ॐ नमः सिद्धेभ्य, ॐ नमः सिद्धेभ्य, ॐ नमः सिद्धेभ्य

ॐ नमः चिन्दानन्दै करु पाय, जिनाय परमात्मा नमः।

ॐ नमः परमात्म प्रकाशय, नित्यं सिद्धात्मै नमः

परम पूज्य १०८ आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज (जो वर्तमान में अनादिकाल से शाश्वत से सिद्ध तीर्थ क्षेत्र में सम्मेद शिखर जी में विराजमान है) के परम पावन चरणों में मन, वचन और काय से नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु और आपके परम पावन चरणों का परम पावन आशीर्वाद का अभिलाषि हूँ।

तन-मन-धन से पूर्ण दिगम्बर रखे दूर सारे आडम्बर।
वना अंजुलि जीव करते भोजन, सोते धरती ओढ़े अम्बर।।
सूक्ष्म जीव की रक्षा हेतु, रखें बस पिच्दी कमण्डल।
क्या बतलाये कैसे है ? बिलकुल भगवान जैसे है
मेरे गुरुवर करूणा के सागर जैसे प.पू. आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ऐसे है।।

हे गुरुवर आचार्य विरागसागर जी महाराज आपकी हस्ती से नूर मिलता है,
गमे दिल को सरुर मिलता है।
तेरे दर पर जो सिर झूकाते है,
उन्हें कुछ न कुछ जरूर मिलता है।
आचरण हमारे शुद्ध न हो, कल्याण हमारा कैसे हो।
जब हमें आत्म परवाह न हो, उत्थान हमारा कैसे हो।।

कभी फूलों से, कभी काँटों से जिन्दगी खिला करती है।
गुरुवर आचार्य विरागसागर वाणी से अमृत घुला रहती है।
रख दो माथा गुरुवर के परम पावन चरणों में
गुरुवर की चरणों की धूल बड़ी मुस्किल से मिलती है।।
आपके परम पावन चरणों में दर्शनभिलाषी

महेन्द्र कुमार जैन, भगत जी, राजनगर, गाजियाबाद

जियो और जीने दो

आ. श्री १०८ विशुद्धसागर जी

वीर का उपदेश
जियो स्वयं
और
जीने दो सभी को,
प्रत्येक मन की
यही भावना
मुझे मारे न कोई
तो
हे ज्ञानी!
तुम भी न सताओ
किसी को।
निरीह-मूक-प्राणियों
को भी
प्यारे है प्राण अपने,
उन्होंने भी
देखें है सुनहरे सपने,
पर नहीं सुना पाते
अपनी व्यथा-कथा
किसी को।
विपाक है
पूर्वकृत कर्मो का,
अन्दर तो सभी के
शक्तिरूप भगवान है।

विराग सिन्धु की महिमा न्यारी

रच. कांति कुमार जैन 'करुण' खिमलासा

विराग सिन्धु की महिमा न्यारी, वे तो है समता के धारी।
धर्म साधना करते भारी, जग के है वे करुणा धारी।।

कैसे गाये महिमा तुम्हारी
इतना ज्ञान नही है मुझमें।
कितना संघ बनाया तुमने,
कैसे आये शक्ति मुझमें।।

धन्य धन्य है जीवन तुमरा, शक्ति तुम में कितनी भारी।
विराग सिन्धु की महिमा न्यारी, वे तो है समता के धारी।।

नगर पथरिया में जन्म हुआ,
माता पिता वह धन्य हो गये।
कैसे त्यागा परिवार तुम्ही ने,
राग द्वेष से दूर हो गये।।

आये हम गुरुशरण तुम्हारी, तुमने कैसे दीक्षा धारी।
विराग सिन्धु की महिमा न्यारी, वे तो है समता के धारी।।

तुमने जगत जगाया गुरुवर,
औं अपना कल्याण किया।
निर्मलता अंतर में आर्पू,
कितना धर्म का ध्यान किया।।

हमें सन्मार्ग बताओं गुरुवर, मोक्ष मार्ग की है तैयारी।
विराग सिन्धु की महिमा न्यारी, वे तो है समता के धारी।।

अंत समय आया है गुरुवर,
कौन संमालेगे मुझको गुरुवर।
हम चलने में असमर्थ हो गये,
हम से कितने दूर हो गये।।

तुम्ही वलाओ 'करुण' है जीवन, आये अब तो शरण तुम्हारी।।
विराग सिन्धु की महिमा न्यारी, वे तो है समता के धारी।।

प.पू. आचार्य रत्न, चर्या चूड़ामणी राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के परिचय फोटो एवं अन्य जानकारी हेतु-

1. **www.ganacharyaviragsagar.com**
2. **Facebook : viragvani**
3. **Email : viragsagarji@gmail.com**
4. **youtube : Ganacharya Viragsagarji**
5. **सं. सूत्र what'sapp no 9009462216**

विरागसागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है

पं. बृजेन्द्र कुमार जैन, देवेन्द्र नगर

ग्राम पथरिया धन्य हुआ जब गुरुवर ने अवतार लिया,
विमल गुरु से दीक्षा पाकर निज पर का उपकार किया।
हम पर भी उपकार करो हम सबने यही पुकारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

दिनकर के भी तेज पुंज को जो फीकी कर देते हैं,
शशि की शीतलता से बढ़कर शीतलता को देते हैं।
नभ के तारों से बढ़कर जो तेज चमकता तारा हैं,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

रवि शशि तारों की उपमा भी जिनको फीकी लगती है,
आत्मध्यान में लीन सदा ये अनुपम छवि झलकती है।
ज्ञानामृत को बांट रहे जो अविरल बहती धारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

हे गुरुवर जो भक्तिभाव से चरणों में आ जाते हैं,
वे आपस के बैर मिटाकर सुखशांति पा जाते हैं।
गुरुवर स्वस्थ्य चिरायूँ होते कहता ये जग नारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

इतना सुंदर कंठ नहीं कि मधुर मधुर गुणगान करूँ,
पर लज्जा को त्याग के गुरुवर जोर जोर से गान करूँ।
भक्तिभाव से स्तुति करते आ गया भव का किनारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

मैं गरीब कुछ द्रव्य नहीं जो बना वही वह लाया हूँ,
गुरुवर तेरी पूजन करने पैदल चलकर आया हूँ।
तह आशीष हमें भी दो जिसने लाखों को नारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

इधर उधर मैं भटक रहा था पाना था कुछ ऐसा ज्ञान,
जिसके आलोकिक प्रकाश में हो जाता सब जग का भान।
मैं अज्ञ अंधेरे में था दिया ज्ञान उजियारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

भूल चुका था अपना पथ मैं याद नहीं थी सही डगर,
च्युत हो जाता अपने पथ से गुरुदेव न होते अगर।
मोक्ष महल में आगे बढ़ने गुरुवर का ही सहारा है,
विराग सागर नाम हमें अब प्राणों से भी प्यारा है।।

बुंदेलखण्ड के प्रथमाचार्य चर्याशिरोमणि परम पूज्य युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक सूरिगच्छाचार्य, गणाचार्य आचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन चरणों में समर्पित- गुरु का हाथ सदैव हमारे सिर पर रहे नमोस्तु-३।

वात्सल्य दिवाकर गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज चातुर्मास २०१८

अहो भाग्य है कि तीर्थ राज सम्मेद शिखर की पावनधरा पर ऐतिहासिक वर्षायोग २०१८ राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज ससंघ (१०८ पिच्छी) का तेरह पंथी कोठी में सम्पन्न हुआ। हमें आपकी अनन्य गुरु भक्ति को निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ।

आप इतने वात्सल्य स्वभावी है कि आप की शरण में सभी साधक आश्रय चाहते हैं। प्रतिदिन शास्त्रीय शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा भी देते है। यही कारण है कि जो एक बार समर्पित हो गया, वह आपसे पृथक नहीं रहना चाहता है। आपके संघ में सभी साधु-तयागियों के मध्य तीन बार स्वाध्याय, प्रवचन होता है विभिन्न आगम ग्रंथों की कक्षा भी लगती है। आप गूढ़ विषय को भी सरलतम तरीके से समझाते हैं।

आपके विशाल संघ के अनुशासन को देखकर समोशरण कहना सही चलता-फिरता विश्व विद्यालय कहें तो ज्यादा उचित होगा। आपके असीम स्नेह और अपरिमित बात्सल्यमयी सान्निध्य की अनेकानेक स्मृतियाँ उचित व हृदय पटल पर अंकित है जो मेरे जीवन की अनमोल निधि है। सत्य की साधना, आगम की आराधना, श्रुति अनुसार आचरण, गुरु परम्परानुसार सन्तों को गढ़नेवाले आप महासन्त है। आपके रोम रोम में स्नेह करूणा, अनुकम्पा एवं वात्सल्य...। आपकी दिव्य चेतना, विचारधारा जन-जन को आकृर्षित कर रही है। आपका व्यक्तित्व जितना विषद है उससे कहीं विराट आपका कृतित्व है।

धरती के चलते-फिरते चेतना निर्ग्रन्थ देवताओं में एक सान्य एवं विश्वविख्यात नाम है गणाचार्य श्री विरागसागर जी का। आप पन्थों के दायरें से परे अभिनव प्रयोग्यता और धर्म के दिवाकर है।

आपकी दूरदर्शिता भविष्य के पैमाने में झलकते दृश्यों को वर्तमान के पट्ट पर अंकित कर देती है। ऐसे दूरदृष्टि व वात्सल्य के धनी ने शाकाहार व व्यसन मुक्ति अभियान से देश में नई पीढ़ी को सही दिशा प्रदान कर देश के उत्थान में अमूल्य योगदान दिया है।

आपकी निष्पृहता, वैराग्य ही जिनका श्रंगार है, आपकी मुद्रा साक्षात् मोक्षमार्ग का निरुपण करती है। ऐसे गुरुवर को क्या कहें- वज्र की तरह कठोर होकर भी आप क्षमा पुरुष पाँखुरी की तरह मृदुल, आध्यात्मिक शक्ति के धनी होकर भी अनन्त करूण के धाम है। नित नूतन आकर्षक से भरा आप का जीवन है। ऐसे गुरुवर के चरण कमलों में कोटि-कोटि नमन्।

ब्र. राजकुमार जैन, मधुवन (शिखर)

चलते-फिरते तीर्थ

साधुसंत चलते फिरते तीर्थ होते हैं, जिनकी आगमिक परिचर्या मुख मण्डल की आभा रत्नत्रय का तेज आत्मविशुद्धि और प्रसन्नता को देख, श्रावकों के मुखमण्डल पर भी सौभाग्य के सथ प्रसन्नता के झरने, झरने लगते हैं। हर्ष होता है। पर याद रखें, यदि हम साधु रहें और हमारे अन्दर साधुता के लक्षण न रहें, परिचर्या व्यवस्थित न रही, तो श्रावक की श्रद्धा भक्ति में अन्तर आ सकता है। वे फिर दूर से ही चले जायेंगे कि अरे, ये महाराज व्यवस्थित चर्या वाले नहीं। श्रावक भी साधु के अन्दर साधुता को देखना चाहता है यदि परिचर्या व्यवस्थित दिखती है तो वह गर्व से कहता है कि ये हमारे महाराज है परन्तु यदि परिचर्या व्यवस्थित नहीं तो उसे अन्य जैनेत्तरों के समक्ष लज्जित होना पड़ता है धर्म की भी अप्रभावना होती है। जिनकी परिचर्या ही व्यवस्थित नहीं, उनके उपदेशों का भी दूसरों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ता, सुनने वाला यही कहेगा ये स्वयं तो व्यवस्थित नहीं और हमें शिक्षा देते है जबकि व्यवस्थित परिचर्या वाले साधकों से सभी सहज मात्रा में प्रभावित हो जाते है। व्यवस्थित साधुओं को परिचय की आवश्यकता नहीं होती है। व्यवस्थित परिचर्या ही उनका परिचय करा देती है। तभी तो संत जिस रास्ते से गुजर जायें वहाँ धर्म की गंगा बहने लगती है। वह स्थान स्वयमेव तीरथ बन जाते हैं।

सामायोजित शिक्षाएँ के साभार से

गुरु संघ के विहार के अवसर पर मधुवन स्थित साधुओं की ओर से भावभीनी विदाई एवं उद्‌गार-

समवशरण देखा

आचार्य तन्मयसागर महाराज जी, मधुवन

बन्धुओ! आप और हमने चौबीस तीर्थंकरों में से एक भी तीर्थंकर भगवान का समवशरण नहीं देखा लेकिन गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का प्रत्यक्ष समवशरण हम सभी ने देखा है। आचार्य श्री से मैं औरंगाबाद में मिला था उसके वाद मधुवन में भी मैंने पहले आकर उनकी आगवानी की ६ माह सान्निध्य प्राप्त किया, कई कार्यक्रम में आचार्यश्री ने मुझे बुलाया बहुत कुछ सीखने को मिला। यद्यपि आज आपके विहार की बात सुन मन खेदखिन्न हो रहा है लेकिन मुझे पता है कि आपका विशाल संघ जब विहार करता है तो उसे देख जैन ही नहीं अजैनों के मस्तक भी श्रद्धा से झुक जाते हैं। दिगम्बरत्व की अभूतपूर्व प्रभावना आपके विहार से होती है इसलिए आपका विहार भी प्रभावना का एक अंग है उससे निरंतर जिनशासन की प्रभावना होती रहे ऐसी मैं प्रार्थना करता हूँ।

जिनशासन के सूर्य

आचार्य धर्मभूषण जी महाराज

आप जिनशासन के सूर्य है। आपके दर्शन कर मुझे लगा कि ऐसे ही प्रभावक साधु संतों से कलिकाल में भी धर्म की प्रभावना होती रहेगी। आप त्याग-तपस्या की मूर्ति हैं। आप इसी प्रकार निरंतर धर्म प्रभावना और मोक्ष की साधना करते रहें। मैंने समय-समय पर आपके सान्निध्य में आकर जो पाया है वह कहीं नहीं पाया। मेरे शरीर में जब तक ये चोका रहेगा तब तक हम आपके गुणगान करते रहेंगे।

हृदय में बसाकर रखूँगा

आचार्य निरंजन सागर जी महाराज

एक वह दिन था जब मधुवन में जगह-जगह वेनर लगे थे और उनपर लिखा था कि गणाचार्य विरागसागर जी महाराज का भव्य मंगल प्रवेश इतनी-इतनी तारीक को होना है। वह शुभ दिन आया १०८ साधुओं के विशाल संघ का चातुर्मास सानंद सम्पन्न हुआ, और आज विहार का समय आ गया है। आपका विहार बाहर से हो सकता है लेकिन मैं तो आपको हृदय में बसाकर रखूँगा। आप मधुवन से तो जा सकते हैं लेकिन मेरे हृदय से कहीं नहीं जा सकते हैं। मैं भी आचार्य विमलसागर जी महाराज का शिष्य हूँ और आप भी उन्हीं के शिष्य हैं। आप जैसे बड़े भाई का मुझे जो प्रेम, वात्सल्य, स्नेह मिला उसे में जिंदगी में कभी नहीं भुला सकता।

आपके आने से मधुवन में सोना-सोना हो गया था लेकिन आज आप मधुवन को सूना-सूना करके जा रहे हैं। आपसे एक ही प्रार्थना है कि कृपाकर हमें पुन: जल्दी दर्शन देना।

मुझे मार्ग दर्शन दीजिए

श्रमण मुनि मनोज्ञसागर जी

गुरुदेव आप हमारे गुरु के गुरु हैं। आपकी निर्दोष महान साधना देखकर हम गौरवान्वित है संपूर्ण भारत में आपके द्वारा जो धर्म की प्रभावना हो रही है वह सदा होती रहे। हमारे महापुण्य से हमें इस वर्ष शाश्वत तीर्थराज सम्मेद शिखर जी में आपके साथ चातुर्मास करने का सुयोग प्राप्त हो सका। निश्चित ही हम धन्य हो गये हैं लेकिन अब विहार की बेला में क्या कहूँ कुछ भी समझ में नहीं आ रहा। विगत छह माहों में आपने हमारी साधना देखी उसमें कही कोई कमी हो, तो मार्ग दर्शन दे साथ ही हमारी सभी त्रुटियों को क्षमा करें आपके चरणों में बारम्बार नमोस्तु-३।

मुनि मनोज्ञसागर जी के लिए पूज्य आचार्य भगवन् ने निर्देशन देते हुए कहा- आप यद्यपि बीसपंथी धर्मशाला में रूके

थे फिर भी प्रतिदिन संघ की सामूहिक क्रियाओं में सामिल हुए यह बहुत ही कर्तव्यनिष्ठ का परिचय दिया। आपकी चर्या अच्छी है लेकिन आगे भी यथावत् बनी रहे। संसार में बहुत तरह के लोग होते हैं कहीं किसी कि मिस्टेक त्रुटि में अपन लपेट में न आ जाये इसमें सदैव सावधान रहना हम अपना अध्यात्मिक जीवन जिये बाहरी वातावरण का प्रभाव हमारे ऊपर न पड़े ऐसा प्रयास करना। अब आपके साथ यहां मुनि श्री विश्वलोकेश सागर जी महाराज भी हैं इसलिए अकेले हैं ऐसा कोई टेन्शन नहीं रखना मेरा आशीर्वाद है।

अनेक उपकार हैं आपके

श्रमण मुनि विश्वलोकेशसागर जी महाराज

हे परम उपकारी, आराध्यनीय श्रद्धेय, परम पूज्य गुरुदेव विगत १८ वर्षों में आपके चरणों में रहा। आपने मुझे दीक्षा, शिक्षा दी समय-समय पर मार्ग दर्शन दे सम्हाला। रोग-बीमारी में बच्चों की तरह पाला, अच्छा चिंतन दे अहर्निश धर्मध्यान में संलग्न रखा आदि अनेक उपकार आपने हमारे ऊपर किये हैं। जिन्हें मैं कभी नहीं भुला पाऊँगा। मैं सदैव आपका शिष्य हूँ और रहूँगा। भगवन् यद्यपि आपके तारण तरण चरणों को कोई नहीं छोड़ना चाहता किन्तु मेरी असमर्थता हैं। मेरे शरीर में इतनी क्षमता नहीं रही कि वे आहार के लिए दूर चौके तक भी चल सकें। यद्यपि परिस्थिति को समझते हुए आपने मुझे ठेले में चलने की सुविधा दी किन्तु उसमें भी चढ़ना, उतना, रूकने के स्थान तक पैदल चलना आदि में भी मुझे परेशानी है अत: अपनी इच्छा एवं आपके आशीर्वाद से मैं तीर्थराज सम्मेद शिखर जी में स्थाई रूकना चाहता हूँ। अभी तक मैं संघ में रहा मुझसे अगर कोई त्रुटि हुई हो तो आप मुझे क्षमा कीजिए। सभी मुनिराज, आर्यिका माता जी, ऐलक, क्षुल्लक भैया, बहिनों से भी मैं क्षमा मांगता हूँ सभी मुझे क्षमा करें। हे पूज्यवर! आप कितने भी दूर शरीर से जायें लेकिन मेरी श्रद्धा के देवता आप मेरे मन मंदिर की वेदी पर सैदव विराजमान रहेंगे और मैं सदैव आपकी भक्ति, पूजा, आराधना करता रहूँगा। मेरी समाधि सल्लेखना अच्छी हो ऐसा आप मुझे आशीर्वाद देते रहना, सदैव अपनी कृपादृष्टि इस शिष्य पर बनाये रखना। तथा समाधि सल्लेखा अच्छी हो ऐसा उपाय बतलायें।

पूज्य गणाचार्य भगवन्- मुनि विश्वलोकेश सागर महाराज जी सम्मेद शिखर जी से ही संघ में जुड़े थे दीक्षा के बाद उन्होंने औषधि आदि व्यवस्था सम्हाल कर संघ की काफी सेवा की आपके सरल स्वभावी होने से संघ में किसी को कोई सिकायत नहीं है यद्यपि आप ठेले पर विहार करते रहे उसी भांति आगे भी कर सकते हैं किन्तु शारीरिक असमर्थता के कारण आपने सम्मेद शिखर जी में रहने की इच्छा व्यक्त की है। आप अपनी निर्विघ्न व अच्छी सल्लेखना समाधि के लिए प्रतिदिन एक माला जरूर फेरें साथ ही अपने मूलगुणों का निर्दोष रूप से पालन करें। अन्य किसी की देखा सीखी से कोई दुर्गण अपने अंदर न लाये। चंदा-चिट्ठा से दूर रहते हुए अपने श्रमण जीवन का पूर्ण ध्यान रखें मुनि मनोज्ञसागर जी का साथ सहयोग हैं अत: आप भी ज्यादा चिंता न करते हुए अपनी साधना करें ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

कैसे क्या करेंगे

आर्यिका विश्वधर्म श्री माता जी

आचार्य श्री आपने आर्यिका दीक्षा दे मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है अब हम कैसे क्या प्रायश्चित करें ? कलश स्थापना आदि कैसे क्या कराना है इसकी जानकारी दें। आप दूर जरूर जा रहे हैं लेकिन मेरी नजर में आप सदैव मेरे पास रहेंगे मैं यहाँ अच्छी तरह से रह सकूँ ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें।

आचार्य भगवन- अभी तक आप मात्र धर्म श्री थी लेकिन आर्यिका दीक्षा के बाद विश्वधर्म श्री बन गई हैं। आप पहले से ही मधुवन में स्थाई रूकी हैं अत: आपको सारी जानकारी है। अब रही बात प्रायश्चित की तो अभी तक अपने जो उपसंग रहे हैं उनमें दैवसिक रात्रिक व पाक्षिक प्रायश्चित गुरु इतना देते हैं ऐसा सोचकर कर लिया जाता है। चातुर्मासिक वार्षिक एवं अन्य प्राश्चित के लिए पत्र भोजन होता है। उसके माध्यम से प्रायश्चित किया जाता है। यहाँ दो महाराज भी है

स्थापना आदि के समय उनके साथ सारी क्रियायें कर वहीं कलश स्थापना हो जायेगा। आप निर्दोष अपने आर्यिका व्रतों का पालक करती हुई सल्लेखना समाधि की अच्छी साधना करें ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

विमल बाबा की तरह हैं

श्रमणी आर्यिका सुरत्नमति माता जी
(संघस्थ आ.धर्म सागर जी माहराज)

श्रमण संस्कृति के महान उद्योतक, वात्सल्य के प्रखर पुञ्ज परम, पूज्य राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री १०८ विरागसागर जी महाराज, वात्सल्य रत्नाकर, जन-जन के उपकारी परम पूज्य आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के अत्यंत प्रिय, अनुशासित एवं प्रभावक शिष्य हैं। मैंने जबसे आपके दर्शन किये तब से मुझे ऐसा लगा मानों मुझे फिर से वात्सल्य रत्नाकर आचार्यश्री विमलसागर जी महाराज मिल गये हों। आप दूसरे विमल बाबा हैं। चातुर्मास में आपका मुझे जो वात्सल्य मिला वह जीवन पर्यन्त अविस्मरणीय रहेगा। आपके अंदर पू. आचार्य विमलसागर जी महाराज के संपूर्ण गुण लवालव भरे हैं। आपने मधुवन में आकर आचार्य विमलसागर जी महाराज के अधूरे कार्यों को पूरा किया है। हर कार्यक्रम में हमें व सभी साधुओं को बुलाया है। आपसे पूज्य आचार्य आदिसागर जी महाराज की परम्परा आगे बढ़ रही है। आप जितने ज्ञानी व महान हैं उतनी ही लघुता, सरलता, आपके अंदर समाई है आपके चरणों में मेरा बारम्बार नमोस्तु आप जल्दी फिर से सम्मेद शिखर जी आकर दर्शन लाभ प्रदान करें।

निर्यापकाचार्य बनें

(संघस्थ आ. संभवसागर जी) आर्यिका पुनीत चेतन्यमति माता जी

मेरे जीवन में प्रथम गुरु आचार्य संभवसागर जी महाराज हैं जिन्होंने मुझे धर्म के संस्कार दिये दीक्षा प्रदान की। अभी तक मैंने लगभग सभी आचार्य मुनियों के दर्शन किये हैं लेकिन किसी को दूसरा गुरु नहीं बनाया आज में परम पूज्य गणाचार्य भगवन को अपने दूसरे गुरु के रूप में स्वीकार करती हूँ। आपने मेरी दीक्षा में आकर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। आपकी हर एक बात जीवन में कल्याणकारिणी प्रतीत हुई है। यूँ तो मधुवन में अनेकों संघों के चातुर्मास होते हैं लेकिन आपसे मुझे जो मिला है वह कहीं से नहीं मिल सका। दूसरी बात आपके अंदर संघ सम्हालने के साथ, समाज को दिशा-निर्देशन, कब कहाँ कौनसा कार्य करवाना है, किससे कौन सी बात कहना है एवं किसको क्या पढ़ाना हैं आदि कार्यों के साथ इतनी बड़ी-बड़ी टीकायें लिखने तथा सामाजिक कार्य करने की जो स्टेमिना पावर है वो शायद ही किसी अन्य में हो मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ मुझे भी आप जैसी समता प्राप्त हो। मेरी भावना है आप आचार्य संभवसागर जी महाराज की समाधि सल्लेखना के निर्यापकाचार्य बनें एवं हमें दिशा-निर्देशन प्रदान करें। आपके श्री चरणों में त्रय भक्ति पूर्वक बारम्बार नमोस्तु-३।

जिव्हा और दांत के बीच शक्ति को लेकर विवाद हुआ दांत कहते हैं कि तुम क्या हमारी शक्ति को जानों तुम अकेली हो और हम बत्तीस है और तुम हमारे बीच से ही आती और जाती हो यदि हम तुम्हें धर दबोचे तो तुम्हें पता चले कि हम शक्ति कितनी है। जिव्हाने उनकी बातों को शांति से श्रवण कर कहा सुनों भाई तुम मेरी शक्ति नहीं पहचानते मुझ में अमृत भी है और विष भी इसलिए सुनो-

तुम बत्तीस में अकेली तुम में आऊँ जाऊँ में
एक बात ऐसी कह दूं बत्तीसी तुड़वाऊ में

दांत जिव्हा की बातों को सुनकर निरुत्तर हो गये।

घी सर्वोत्तम दवा

घी को गोरस (दही) का उत्तम सार माना जाता है। मलाई में से निकाला हुआ घी मक्खन में से बने घी के सदृश पर्याप्त गुणोंवाला नहीं होता। सब प्रकार के घी में गाय का घी श्रेष्ठ माना जाता है। घी के सेवन से घातु की वृद्धि होती है। फलत: बल बढ़ता है, मस्तिष्क शांत रहता है, गर्मी दूर होती है और रक्त शुद्ध होता है। अतिशय शारीरिक श्रम करने वालों के लिए घी का सेवन अत्यन्त हितकर है।

- ❖ खाने में ताजा घी अधिक गुणकारी और रूचिकारक माना जाता है। औषिध के रूप में पुराने घी का उपयोग होता है। यह अधिक गुणकारी एवं तीनों दोषों को दूर करनेवला, मूर्छा, कोढ़, उन्माद, हिस्टीरिया तथा आँखों में धुंधला पन लाने वाले तिमिर-रोग को मिटाता है। जले हुए व्यक्ति के लिए घी जख्म में लगाने से लाभ मिलता है।
- ❖ औषिध के रूप में हर प्रकार का घी ज्यों-ज्यों पुराना होता है त्यों-त्यों अधिक गुणकारी माना जाता है। दस वर्ष पुराना घी तिमिर, श्वास, जुकाम, ज्वर, खांसी, मूर्छा, कोढ़, विष, उन्माद, ग्रही और अपस्मार को दूर करता है तथा किटाणुओं को नष्ट करता है।
- ❖ घी को लगातार सौ बार पानी में धोने से 'शतधौत' घी बनता है। यह घी खाने हेतु नहीं अपितु फोड़े व चमड़ी के रोगों पर लगाने से उसका उपयोग होता है।
- ❖ भैंस का घी मधुर, शीतल, कफकारक, रक्तपित्त नाशक, भारी, पाक में मधुर, एवं पित्त, रक्त विकार और वायु का नाशक है।
- ❖ बकरी का घी अग्नि प्रदीप्त करनेवाला, नेत्र के लिए हितकारी, बलवर्धक, पाक में तीखा एवं खांसी, श्वास और क्षय में हितकारी है।
- ❖ भेड़ का घी पाक में हल्का, सर्व रोगों का नाशक, अस्थियों की वृद्धि करने वाला पथरी मिटाने वाला, नेत्र के लिए हितकारी, अग्नि को प्रदीप्त करनेवाला और वायु-दोष का निवारक है। टूटी हुई अस्थियों को जोड़ने के लिए विशेष रूप से उसकी मालिश की जाती है।
- ❖ सौराष्ट्र के गाँवों में सगर्भा स्त्री को प्रथम महीने से ही शुद्ध घी का आहार दिया जाता है, जिससे गर्भ का पूर्णरूप से पोषण हो और प्रसूति सरलतापूर्वक हो जाय। प्रसूति के पश्चात् प्रसूता को घी से तर बतर सुखड़ी दी जाती है।
- ❖ गाय का कुनकुना घी पीने से हिचकी बंद होती है।
- ❖ गाय का घी और दूध मिलाकर पीने से तृषा रोग मिटता है।
- ❖ गाय के घी की कुछ बूंदे नाक में डालने में नाक में से निकलने वाला रक्त को बंद करने में लाभ मिलता है।

दण्ड भी हो जाता कम- सरलता से

संकलन- आ. विदूषीश्री माता जी

भीलों की एक नगरी थी। वहाँ सभी तीर-कमान के साथ चलते-फिरते थे। लड़ाई-झगड़ा होने पर भी उसी का प्रयोग करते थे। एक बार एक भील ने किसी कारण से दूसरे भील को मार दिया। अदालत में केस चला प्रत्यक्षदर्शी के अभाव के कारण सबूत नहीं था। मारने वाले को वकील की सहायता मिली। वकील ने समझाया कि- देखो, कोर्ट में तुझे इतना ही बोलना है कि 'मैने नहीं मारा है' चाहे जैसा पूछा जाये, कबूल नहीं करना है। उसने मान लिया। कोर्ट में बहस हुई। उसने एक ही बात कही कि, 'मैने नहीं मारा' पर जब सरकारी वकील ने प्रश्न करना शुरु किया तो वह गड़बड़ा गया- घबरा गया। क्या बोला जाये, यह उसकी समझ में नहीं आया। और उसने अपने मन की बात कह दी। 'मारा तो मैंने ही है, मर जाने तक मारा है'। लेकिन वकील की ओर अंगुली करके कहता है कि, यह मुझे नहीं मारा ऐसा बोलने को कहता है। तभी सारी अदालत हँस पड़ी। उस भील ने बुरा काम तो किया पर सरल मन से। इसलिए उसकी सजा कम कर दी गई।

आध्यात्मिक शंका-समाधान

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

वर्तमान भौतिक वादी युग में संसारी प्राणी भोगों की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिये दिनरात पैसा कमाने में लगा है। जैन कुल में जन्म लेकर भी छः आवश्यक कर्त्तव्यों को भूलता जा रहा है। संस्कारित परिवारों में देवदर्शन पूजन तो फिर भी व्यक्ति करता है पर स्वाध्याय के लिये उसके पास समय नहीं और जो स्वाध्याय भी करते हैं वे आर्ष परम्परा के आचार्य प्रणीत ग्रन्थों का स्वाध्याय या तो करते ही नहीं या करते हैं तो उसके सही अर्थ भावार्थ को न समझ पाने के कारण ये उन लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अपनी पंथ, आम्नाय विचारधारा या ख्याति लाभ प्रशंसा का कारण कुछ का कुछ बताकर भ्रमित कर देते हैं।

प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ने मोक्षमार्ग में आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त नहीं किया बल्कि वर्तमान समय के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक हैं। ज्ञान की असीम गहराईयों में डुबकी लगाकर सर्वोदया, रत्नत्रय वर्धिनी, श्रमण प्रबोधनी, श्रमण सम्बोधनी आदि संस्कृत टीकाओं के अलावा १५० से भी अधिक आलेखों द्वारा जन मानस के कल्याण के लिये जिनागम को दुर्लभ रत्न प्रदान किये हैं। चारों अनुयोगों को समझाने हेतु जन सामान्य की शंकाओं के समाधान हेतु क्रमिक प्रस्तुति-

शंका **वीतराग चारित्र के अविनाभावीभूत निश्चय सम्यग्दृष्टि साधु ही होते हैं ऐसा कोई प्रमाण है?**

समाधान- हाँ, देखिये (मो.पा.गा.१४)

सद्दव्वरओ सवणो सम्माइट्ठी हवेइ णियमेण।
सम्मत्त परिणदो उण खवेइ दुट्ठट्ठ कम्माणि।।

अर्थ- जो साधु अपनी आत्मा में लीन हैं, वे सम्यग्दृष्टि हैं। वे सम्यक्त्व भाव से युक्त होते हुए अष्ट कर्मों का क्षय करते हैं।

शंका- **प्रशमादि की प्रकटता को ही सम्यक्त्व क्यों नहीं कहते हो?**

समाधान- **प्रशम संवेगानुपास्तिक्याभिव्यक्ति लक्षणं सम्यक्त्वम्। सत्येव असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थानाभावः स्यादिति चेत्सत्यमेतत शुद्धनये समाश्रीयमाणे। (ध.पु. १/१, १, ४/१५१/२)**

अर्थ- प्रशम, संवेग, अनुकंपा ओर आस्तिक्य की प्रकटता ही जिसका लक्षण है उसको सम्यक्त्व कहते हैं।

प्रश्न- **इस प्रकार सम्यक्त्व का लक्षण मान लेने पर असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान का अभाव हो जायेगा?**

उत्तर- यह कहना शुद्ध निश्चय नय के आश्रय करने पर ही सत्य कहा जा सकता है।

अथवा- तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्। यस्य गमनिकोच्यते आप्तागमपदार्थ-स्तत्त्वार्थस्तेषु श्रद्धान मनुरक्तता सम्यग्दर्शन मिति लक्ष्य निर्देशः। कथं पौरस्तेयेन लक्षणेनास्य न विरोधश्चेन्नैष दोषः शुद्धाशुद्ध समाश्रयणात्।

अथवा तत्त्वरूचि सम्यक्त्वम् अशुद्धतर नय समाश्रयणात्। (ध.पु.१/१,१,४)

अर्थ- अथवा तत्त्वार्थ के श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहते हैं इसके अर्थ यह है कि आप्त, आगम और पदार्थ को तत्त्वार्थ कहते हैं। और इनके विषय में श्रद्धान अर्थात् अनुरक्ति करने को सम्यग्दर्शन कहते हैं। यहाँ पर सम्यग्दर्शन लक्ष्य है और आप्त, आगम और पदार्थ का श्रद्धान लक्षण है।

प्रश्न- **पहिले कहे हुए (प्रशमादि की अभिव्यक्ति रूप) सम्यक्त्व के लक्षण के साथ इस लक्षण का विरोध क्यों न माना जाये?**

उत्तर- यह कोई दोष नहीं है क्योंकि शुद्ध और अशुद्ध नय की अपेक्षा से ये दोनों लक्षण कहे गये हैं। अर्थात् पूर्वोक्त लक्षण शुद्ध नय की अपेक्षा से है और यह तत्त्वार्थ श्रद्धान रूप लक्षण अशुद्ध नय की अपेक्षा से है।

अथवा तत्त्वरूचि को सम्यक्त्व कहते हैं। यह लक्षण अशुद्धतर नय की अपेक्षा से जानना चाहिए।

शंका- **क्या निश्चय सम्यक्त्व का कथन भी दो प्रकार से है?**

समाधान- हाँ, देखिये (प.प्र.टी. २/१७/१३२/८)

अत्राह प्रभाकर भट्टः। निजशुद्धात्मैवोपादेय इति रूचि रूपं निश्चय सम्यक्त्वं भवतीति बहुध व्याख्यातं पूर्व भवद्भिः इदानीं पुनः वीतराग चारित्राविनाभूतं निश्चय सम्यक्त्वं व्याख्यातमिति पूर्वापरविरोधः कस्मादिति चेत् निजशुद्धात्मैवोपादेय इति रूचि रूपं निश्चय सम्यक्त्व गृहस्थावस्थायां तीर्थंकर परम देव भरत सगर राम पापण्डवादीनां विद्यतं, न च तेषां वीतराग चारित्रमस्तीति परस्पर विरोधः, अस्ति चेत्तर्हि तेषामसंयतत्वं कथमिति पूर्वपक्षः। तत्र परिहार माह। तेषां शुद्धात्मोपादेय भावना रूपं निश्चय सम्यक्त्वं विद्यते परं किंतु चारित्रमोहोदयेन स्थिरता नास्ति व्रत प्रतिज्ञा भङ्गो भवतीति तेन कारणेनासंयत वा भण्यन्ते।

शुद्धात्म भावना च्यताः सन्तः भरतादयो... शुभराग योगात् सराग सम्यग्दृष्टयो भवन्ति। या पुनस्तेषां सम्यक्त्वस्य निश्चयसम्यक्त्वसंज्ञा- वीतरागचारित्राविनाभूतस्य निश्चयसम्यक्त्वस्य परंपरया साधकत्वादिति। वस्तुवृत्या तु तत्सम्यक्त्वं सराग सम्यक्त्वाख्यं व्यवहार सम्यक्त्वमेवेति भावार्थः।

अर्थ/प्रश्न- यहाँ प्रभाकर भट्टारक पूछता है कि निज शुद्धात्मा ही उपादेय हे ऐसी रूचि रूप निश्चय सम्यक्त्व होता है। ऐसा कई बार पहिले आपने कहा और अब वीतराग चारित्र का अविनाभावी निश्चय सम्यक्त्व है, ऐसा कह रहे हैं। दोनों में पूर्वापर विरोध है। यह ऐसे कि निज शुद्धात्म तत्त्व ही उपादेय है ऐसा रुचि रूप निश्चय सम्यक्त्व गृहस्थ अवस्था में तीर्थंकर परमदेव तथा भरत, सगर, राम, पांडव आदि को रहता है परन्तु उनको वीतराग चारित्र नहीं होता, इसलिए परस्पर विरोध है। यदि होता है ऐसा माने तो उनके असंयतपना कैसे हो सकता है?

उत्तर- उनके शुद्धात्मा के उपादेयता की भावना रूप निश्चय सम्यक्त्व रहता है किन्तु चारित्र मोह के उदय के कारण स्थिरता नहीं है, व्रत की प्रतिज्ञा भंग हो जाती है, इस कारण उनको असंयत कहा है। शुद्धात्म भावना से च्युत होकर शुभ राग के योग से वे सराग सम्यग्दृष्टि होते हैं। उनके सम्यक्त्व को जो निश्चय सम्यक्त्व कहा गया है उसका कारण यह है कि वह वीतराग चारित्र के अविनाभूत निश्चय सम्यक्त्व का परम्परा साधन है। वस्तुतः तो वह सम्यक्त्व भी सराग सम्यक्त्व नाम वाला व्यवहार सम्यक्त्व ही है।

शंका- यहाँ पर चतुर्थ, पंचम गुणस्थानवर्ती को तो निश्चय सम्यग्दर्शन माना है? स्पष्ट उल्लेख है कि-
'निज शुद्धात्मैवोपादेय इति रूचि रूपं निश्चयसम्यक्त्वं गृहसीावस्थायां तीर्थंकरपरमदेवभरतसगरराम-पाण्डवादीनां विद्यते' (प.प्र. २/१७/१३२)

अर्थ- निज शुद्धात्मा ही उपादेय है ऐसी रूचि रूप निश्चय सम्यक्त्व गृहस्थावस्था में तीर्थंकर परमदेव, भरत, सगर, राम पाण्डव आदि को होता है। तो फिर यह कैसे?

समाधान- आपने उक्त ग्रंथ के इस प्रकरण को पढ़ा जरूर, किन्तु अधूरा पढ़ा, पूरा नहीं पढ़ा, अन्यथा प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। क्योंकि आगे कहा है कि-

या पुनस्तेषां सम्यक्त्वस्य निश्चयसम्यक्त्वसंज्ञावीतरागचारित्रविनाभूतस्य निश्चय सम्यक्त्वस्य परंपरया साधकत्वादिति। (प.प्र. २/१७/१३३)

अर्थ- उनके (तीर्थंकर, सगर, रामादि के गृहस्थावस्था में) सम्यक्त्व की जो निश्चय संज्ञा है वह वीतराग चारित्र के अविनाभावी रूप निश्चय सम्यक्त्व का परम्परा से साधक है।

अध्यात्मिक शंका-समाधान कृति से साभार

विराग सेतु

इगवीस-विरागो

(प.पू. राष्ट्र संत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज)

डॉ. उदयचन्द्र जैन

जिन्होंने अल्प वय में ही मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होकर क्षितिज की ऊँचाईयों को प्राप्त किया, घनघोर उपसर्गों में भी समता धारण कर आत्मान्वेषी रहे, ज्ञान की अथाह गहराईयों में डुबकी लगाकर प.पू. आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी के प्राचीन ग्रंथ वारसाणु पेक्खा पर संस्कृत 'सर्वोदय टीका' को लिखकर जिनागम के लिए एक दुर्लभ रत्न प्रदान किया है। ऐसे सिद्धांतरत्न प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज के जीवन दर्शन का सुंदर हृदयस्पर्शी चित्रण करने वाले डॉ. उदयचंद्र जैन उदयपुर के विराग चेतना युक्त नवीन प्राकृत महाकाव्य 'विराग-सेतु' की क्रमिक प्रस्तुति-

सो चूलि-मच्छर-गिरि णिदझाणा-सीलो
आही विवाहि-उवसग्ग-सहंत-माणो।
दुट्ठाण दुट्ठ-पयडिं उवसंतए सो
संबोहदे पवयणे सम-सक्ख-भावं।। १०।।

वे शाहगढ़ के समीप चूलि मछरगिरि की ओर जाते, फिर नित ध्यान शील आधिव्याधि के उपसर्गों को सहन करते हुए वहां स्थित रहते हैं। वे वहाँ दुष्टों की दुष्ट प्रकृति को शान्त करते और लोगों को समभाव एवं मित्र भाव की शिक्षा देते हैं।

णेणागिरि दलपदं बहुभाग-गामं
बंडा बरं बढयागढ-कुंडलं च।
देविंद-पण्ण-णयरं पुर-गाम-आदिं
पत्तेदि सो मुणि विराग सुसंत -सादं।। ११।।

वे विराग सागर मुनि नैनागिरि, दलपतपुर, बंडा, बरा, वटयागढ़, कुंडलपुर, देवेन्द्रनगर, पन्ना आदि के विविध ग्राम को प्राप्त होते हैं। वहाँ वे सुशान्त वातावरण को उपस्थित रहते हैं।

पण्णा-सलेह-छतरो खबरा वि सिंहो
गामाणुगामचरमाण-सदा विरागो।
सिद्धंत-सत्थ-वयणेहि पुणीद-भावं
कुव्वेदि सावग जुवे जुवी स णंदं।। १२।।

वे पन्ना, सलेहा, छतरपुर, खबरा, सिंहपुर आदि ग्राम, अनुग्राम में विचरण करते हुए सिद्धांत शास्त्र के वचनों से श्रावक जनों, युवाओं और युवतियों में पुनीत भाव एवं आनंद को उत्पन्न करते हैं।

सेयंस-वास-चदुमास-अणंददाई
रज्जाहियारि-मणुजा वणचारि-भाऊ।
आगच्छिदूण सयला बहुसेव-जुत्ता
चिट्ठेंति ते मुणि-विराग-सुदंसणत्थं।।

सन् १९९१ का श्रेयांसगिरि का चातुर्मास वर्षावास तो आनंददाई था। इसमें राज्याधिकारी, वनचारी भाई बन्धु आदि सभी सेवा में सहभागी बनते हैं और वे सभी मुनि विरागसागर के दर्शनार्थ उपस्थित रहते हैं।

मज्झे मुणी वि खजुराह-कलाइ ठाणे
गच्छेदि हंस विमलं भरहं च साहुं।
वालाइरीय-भरहो उवझा-विरागो
इच्छेदि आइरिय-वच्छल-मुणिं च एसो।। १४।।

इसी बीच कला संस्कृति के केंद्र खजुराहो में आचार्य विमलसागर और भरतसागर के दर्शन के संदेश आ जाते हैं। आचार्य श्री, भरत सागर को बालाचार्य और विरागसागर उपाध्याय हो यही इच्छा रखते हैं।

सिस्साण दोण्ह-अणुराग जुदो हि सूरी
सम्मेद-सेल-णिवसंत-इमो हि घोसे।
दोण्हिं हि सिस्स पुढ-खेत्त पुढो हि चारे
गिण्हेज्ज आइरिय-सेह पदं विचारे।। १५।।

दोनों शिष्यों के प्रति आचार्य श्री का एक सा अनुराग था, इसलिए उन्होंने सम्मेद शिखर निवास करते हुए घोषणा की दोनों अपने अपने क्षेत्र के आचार्य बने। वे आचार्य पद पूर्वक विचरण करें।

सुत्त-परम-उदहि-गहिर-वदो
णम्म-विमल-मुणिवर-गुणिवरदो।
आण-घर-सिरस-णद-सुदरदो
किं गमण-अणुगमण-चरण-वदो।। १६।।

वे विरागसागर सूत्र रूप परम गम्भीर सागर की अग्रसर नम्र आचार्य विमलसागर के गुणों की उत्कृष्टता को धारण करने के लिए प्रवृत्त हुए। वे उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करने सदैव श्रुतरत होते हैं? वे क्या गमन क्या अनुगमन, इत्यादि पर विचार करते हैं वे चरणों में न होते हैं।

क्रमश.....

बच्चा कहाँ - क्या सीखता है

1. अगर बच्चा आलोचना के माहौल में रहता है तो वह निंदा करना सीखता है।
2. अगर बच्चा प्रशंसा के माहौल में रहता है तो वह प्रशंसा करना सीखता है।
3. अगर बच्चा लड़ने के माहौल में रहता है तो वह झगड़ना सीखताहै।
4. अगर बच्चा सहनशीलता के माहौल में रहता है तो वह धैर्य सीखता है।
5. अगर बच्चा खिल्ली उड़ाने वाले माहौल में रहता है तो वह संकोच करना सीखता है।
6. अगर बच्चा प्रोत्साहन वाले माहौल में रहता है तो वह आत्मविश्वास करना सीखता है।
7. अगर बच्चा शर्मिंदगी के माहौल में रहता है तो वह खुद को दोषी मानना सीखता है।
8. अगर बच्चा सर्मथन करने वाले माहौल में रहता है तो खुद को पसंद करना सीखता है।
9. अगर बच्चा न्यायसंगत माहौल में रहता है तो वह इंसाफ करना सीखता है।
10. अगर बच्चा सुरक्षा के माहौल में रहता है तो वह भरोसा करना सीखता है।
11. अगर बच्चा सहमति और दोस्ती के माहौल में रहता है तो वह दुनियाँ में प्यार ढूढं लेना सीखता है।

फरवरी माह के महोत्सव दिवस

जन्म/दीक्षा/पुण्यतिथि	तारीख	स्थान /नाम
दीक्षा दिवस	१.२.२०००	भिण्ड, श्रमण श्री विश्वशांति सागरजी, श्रमण श्री विश्वधर्म सागर जी, आर्यिका विनतश्री माताजी, आ. विपश्यनाश्री माता जी
जन्म दिवस	१.२.१९५४	परतापुर, मुनि श्री विश्वभद्र सागर जी
जन्म दिवस	३.२.१९३९	ललितपुर, मुनिश्री विश्वविज्ञ सागर जी
पुण्य तिथि	४.२.२००४	नावापारा, श्रमणी आ विमानश्री माता जी
दीक्षा दिवस	८.२.१९९६	द्रोणगिरि, मुनिश्री विश्वजीत सागर जी, मुनिश्री विशद सागर जी, मुनि श्री विश्वकीर्ति सागर जी।
दीक्षा दिवस	८.२.२००६	टोंक (राज.), मुनिश्री विबुद्ध सागर जी
दीक्षा दिवस	१३.२.२००५	श्रमण श्री विशाल सागर जी, क्षु. श्री विबुद्ध सागर जी
दीक्षा दिवस	१३.२.२००६	श्रवण वेलगोला (कर्नाटक) श्रमणश्री विश्वस्त सागर जी, श्रमण श्री विवर्धन सागर जी, श्रमण श्री विशेषसागर जी , श्रमण श्री विश्वविद सागर जी, श्रमण श्री विश्रुत सागर जी, श्रमणी आ. विवक्षा श्री माता जाी, श्रमणी आ. विदक्षाश्री माता जी, श्रमणी आ. विरम्या श्री माताजी, श्रमणी आ. विकाम्या श्री माता जी, श्रमणी आ. विकम्पाश्री माता जी, श्रमणी आ. विप्राश्री माता जी, श्रमणी आ विप्रभाश्री माता जी, ऐलक विश्वविभू सागर जी, ऐ. विदाम्बर सागर जी, ऐलक विभास्वर सागर जी, क्षुल्लक विभंजन सागर जी, क्षुल्लक विरंजनसागर जी, क्षु. विश्व मित्र सागर जी, क्षु. विश्वप्रिय सागर जी, क्षु. मनोज्ञसागर जी, क्षु. प्रशमसागर जी, क्षु. अर्पण सागर जी।
दीक्षा दिवस	१७.२.२००८	गिरार, क्षु. अध्यात्म सागर जी
जन्म दिवस	१८.२.१९७१	रूर (भिण्ड), श्रमणाचार्यश्री विशुद्धसागर जी महाराज
दीक्षा दिवस	२०.२.१९८०	भिण्ड, श्रमणश्री विजयेश सागर जी
जन्म दिवस	२०.२.१९८७	अहमदाबाद, क्षुल्लिका विस्मिताश्री माता जी
जन्म दिवस	२२.२.१९९३	सागर, श्रमणी आ. विविक्तश्री माता जी
पुण्य तिथि	२३.२.२०११	भिण्ड (राज.) श्रमणश्री विश्व ज्योतिसागर जी
दीक्षा दिवस	२३.२.१९९६	देवेन्द्र नगर, ऐलक विभवसागर जी, ऐलक विमर्शसागर जी, ऐलक विहर्षसागर जी, ऐलक विनिश्चय सागरजी, क्षुल्लक विभद्रसागर जी।
जन्म दिवस	६.२.१९९९	देवेन्द्र नगर, मुनिश्री विनिवेश सागर जी
दीक्षा दिवस	७.२.२०१४	कारीटोरन (उ.प्र.)क्षुल्लिक विनिग्रह श्री माता जी

माघ मास के व्रत एवं कल्याणक महोत्सव

२६ जनवरी २०१९	माघकृष्ण ६	श्री पदमप्रभु गर्भ कल्याणक
२८ जनवरी २०१९	माघकृष्ण ८	अष्टमी व्रत
१ फरवरी २०१९	माघकृष्ण १२	श्री शीतलनाथ जी जन्म, तप कल्याणक
३ फरवरी २०१९	माघकृष्ण १४	चतुर्दशी व्रत, श्री ऋषभदेव मोक्ष कल्याणक

४ फरवरी २०१९	माघकृष्ण ३०	श्री श्रेयांसनाथ ज्ञान कल्याणक
६ फरवरी २०१९	माघशुक्ल २	श्री वासुपूज्य जी ज्ञान कल्याणक
९ फरवरी २०१९	माघशुक्ल ४	श्री विमलनाथ जी जन्म, तप कल्याणक एवं पुष्पाजंलि तथा दस लक्षण व्रत प्रारंभ
१० फरवरी २०१९	माघशुक्ल ५	बसन्त पंचमी
११ फरवरी २०१९	माघशुक्ल ६	श्री विमलनाथ जी ज्ञान कल्याणक
१४ फरवरी २०१९	माघशुक्ल ९	पुष्पांजलि व्रत पूर्ण, रोहिणी व्रत
१६ फरवरी २०१९	माघशुक्ल ११	श्री अभिनन्दन नाथ जी, जन्म तप कल्याणक
१७ फरवरी २०१९	माघशुक्ल १२	श्री धर्मनाथ जी जन्म तप कल्याणक
१९ फरवरी २०१९	माघशुक्ल १४	चतुर्दशी व्रत दशलक्षण व्रत समाप्त

श्री सम्मेद शिखर जी मधुवन से हुआ मंगल विहार

शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी मधुवन से दिनांक ३ जनवरी २०१९ को प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की आज्ञा से पांच संघों का विहार हुआ।

१. मुनि श्री विशोक सागर जी महाराज दो पिच्छी।
२. मुनि श्री विरंजन सागर जी महाराज दो पिच्छी।
३. आर्यिका विदुषीश्री माता जी ससंघ आठ पिच्छी।
४. आर्यिका विबोधश्री माता जी ससंघ नौ पिच्छी।
५. आर्यिका विविक्तश्री माता जी ससंघ पांच पिच्छी।
६. दिनांक ४ जनवरी २०१९ को मुनि श्री विशेषसागर जी महाराज के पास जाने हेतु क्षुल्लक श्री विसौम्यसारग जी का विहार हुआ।
७. आर्यिका विजेताश्री माता ससंघ ८ पिच्छी का विहार ८ जनवरी को हुआ।

शाश्वत तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखर श्री में ही विराजमान रहे, मुनिश्री मनोज्ञ सागर जी, मुनिश्री विश्वलोकेश सागर जी, आर्यिका सुमद्रामतीश्री माता जी,आर्यिका विश्वधर्म श्री माता जी, क्षुल्लक श्रुतसागर जी, क्षुल्लिका विरजाश्री माताजी।

क्षुल्लक श्री विदेह सागर जी एवं क्षुल्लक श्री विश्वरक्ष सागर जी का विहार पूर्व में (माह नवम्बर मास में) हुआ।

आज १० जनवरी को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ ४९ पिच्छी का पावन विहार इस शाश्वत तीर्थ क्षेत्र श्री सम्मेद शिखर जी हो रहा है। चतुर्मास एवं उसके बाद का समय कब निकल गया मालूम भी नहीं पड़ा। श्री सम्मेद शिखर जी मधुवन में इतिहास रचा गया जो कि अभी तक नहीं हुआ। पूरा संघ हर समय हर कार्यक्रम में एक मंच पर दिखे। आज विदाई की बेला में भी पूरी मधुवन समाज का बच्चा बच्चा यहां पूज्य गुरुदेव श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ के चरणों में विनयवत उपस्थित है। पूज्य गुरुदेव एवं ससंघ का जो वात्सल्य पूरे मधुवन जैन समाज को प्राप्त हुआ है वह अविस्मणीय है। श्री सम्मेद शिखर जी के पूरे प्रवास के समय में मधुवन समाज, तेरा पंथी कोठी समिति, वीस पंथी कोठी समिति सहित सभी पू. गुरुदेव श्री एवं समस्त संघ से अपनी गलतियों की क्षमा मांगते है।

शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी पर प.पू. राष्ट्रसंत गणा. श्री विरागसागर जी महामुनिराज से व्रत ग्रहण कर्ता

२७.८.२०१८	श्री विनोद कुमार जी जैन, गौतम नगर, भोपाल	७ प्रतिमा
१२.९.२०१८	श्रीमती विद्या फट्टा, सागर	१ प्रतिमा
२३.९.२०१८	श्री भवरलाल जी श्रीमती रानी जैन, (मालपुरा) जयपुर	ब्रह्मचर्य व्रत
२.१०.२०१८	कु. प्रियंका जैन, अजमेर	३ वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत
१०.१०.२०१८	श्री कान्तीलाल नानमल जी खांदू कॉलोनी, बासंवाड़ा	२ प्रतिमा
१७.१०.२०१८	श्री सन्तोष कुमार जी जैन, सतना	२ प्रतिमा
१७.१०.२०१८	श्रीमती शकुन्तला जैन, सतना	२ प्रतिमा
१९.१०.२०१८	श्रीमती शान्ति देवी छावड़ा ईश्वरी	सल्लेखना व्रत एवं ७ प्रतिमा
२४.१०.२०१८	बा.ब्र. सुकुमाल भैया, भिण्ड	३ वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत
२८.१०.२०१८	श्रीमती सोना सिंघई पत्नी श्री मोतीलाल जी सिंघई, सागर	२ प्रतिमा
३०.१०.२०१८	श्रीमती वीणा झांझरी पत्नी श्री नरेन्द्र जी झांझरी, कोड़रमा	२ प्रतिमा
७.११.२०१८	बा.ब्र. प्रदीप भैया, इन्दौर	७ प्रतिमा
१३.११.२०१८	श्रीमती पिंकी जैन पत्नी श्री पवन कुमार जैन मुरैना	२ प्रतिमा
१४.११.२०१८	ब्र. चांद बाई, जयपुर	७ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्रीमती माया जैन,	३ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्री समुन चन्द्र जी जैन विनय नगर ग्वालियर	५ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्रीमती प्रभादेवी पत्नी श्री जमना प्रसाद जी शाहगढ़	२ प्रतिमा
२१.११.२०१८	ब्र. शुभम जैन पिता श्री शैलेन्द्र जैन	२ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्री नरेश चन्द्र जी पिता श्री दयाराम जैन गोरमी	२ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्रीमती सन्तोषरानी जैन, सागर	४ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्री विमल कुमार जैन पिता श्री मूलचन्द जैन लावा मालपुरा	२ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्री सुरेन्द्र कुमार जैन खरगोन	२ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्री पदम चन्द्र जैन पिता स्व. श्री प्रभुदयाल जैन, भिण्ड	२ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्रीमती गुलाब बाई जैन पत्नी स्व. श्री बाबूलाल जैन टीकमकढ़	३ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्रीमती चंदा जैन पत्नी श्री ऋषभ कुमार जैन, सागर	२ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्रीमती विनोद जैन पत्नी श्री नरेन्द्र जैन बमीठा छतरपुर	३ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्रीमती सोना देवी जैन पत्नी स्व. श्री हुकमचन्द्र जैन टीकमगढ़	२ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्री राजकुमार जैन अध्यक्ष कांचमंदिर मधुवन	७ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्रीमती अंजना जैन पत्नी स्व. श्री धनराज जी जैन केकड़ी	२ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्रीमती मुन्नी बाई जैन पत्नी श्री राजकुमार जैन, सागर	२ प्रतिमा
२१.११.२०१८	ब्र.शकुन्तला जैन पत्नी श्री राजेन्द्र कुमार जैन, भोपाल	५ प्रतिमा
२१.११.२०१८	श्रीमती त्रिवेणी जैन पत्नी श्री प्रकाश चन्द्र जैन, सागर	३ प्रतिमा
२१.११.२०१८	ब्र. चंदा बाई जैन पत्नी श्री नरेन्द्र कुमार जैन, देवास	५ प्रतिमा

समाचार

मुनि श्री विश्वरत्न सागर जी महाराज की संल्लेखना समाधि विधि पूर्वक सम्पन्न

प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के सुशिष्य मुनि श्री विश्वरत्न सागर जी महाराज की दिनांक ४ जनवरी २०१९ को संल्लेखना समाधि विधि पूर्वक सम्पन्न हुई। प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज द्वारा आपकी क्षुल्लक दीक्षा दिनांक ३०.१०.२००१ को गया विहार में, ऐलक दीक्षा दिनांक २१.१.२००३ श्रेयांस गिर (म.प्र.) में एवं मुनिदीक्षा दिनांक ८.६.२००३ ललितपुर (उ.प्र.) में हुई। आप निरंतर धर्म साधना एवं प्रभावना में संलग्न थे। इस वर्ष २०१८ का वर्षा योग गुनौर (म.प्र.) में सानन्द सम्पन्न किया। इस वर्ष ७९ वर्ष की उम्र में आपका स्वास्थ क्षीण होता गया। तदानुसार आपने पू. गणाचार्य श्री को अपने गिरते हुए स्वास्थ से अवगत कराया। प.पू. गुरुदेव गणाचार्य श्री ने आपकी सेवार्थ क्षुल्लक श्री विश्वरक्ष सागर जी को दिनांक २९.११.२०१८ को आपके पास भेजा। तथा पू. गुरुदेव आपके स्वास्थ्य तथा निर्विकल्प समाधि हेतु निरंतर आशीष देते रहे। स्वास्थ में सुधार न देख पू. गणाचार्य श्री ने आपको श्रमणाचार्य श्री विनिश्चय सागर जी के पास श्रमणोदय तीर्थ दरगुवां पहंचने का आदेश दिया। तदानुसार आप उनके पास पहुचे एवं पू. गणाचार्य के निर्देशन में सल्लेखना समाधि प्रारंभ की। प्रतिदिन श्रावकों के माध्यम से आप पू. गणाचार्य श्री का आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन लेते रहें। आपने ३ जनवरी २०१९ को सायं काल ७ बजे पू. गणाचार्य श्री के दर्शन करने की भावना प्रकट की तथा तीन प्रकार का आहार का त्याग कर सभी से क्षमा याचना की एवं ४ जनवरी २०१९ को आपने प्रात: काल श्रमणाचार्य विनिश्चय सागर जी के सान्निध्य में पाक्षिक प्रतिक्रमण किया एवं प.पू. गुरुदेव श्री गणाचार्य श्री को नमस्कार किया। पू. गणाचार्य श्री के निर्देशन में तथा श्रमणाचार्य श्री विनिश्चय सागर जी के निर्यापकाचार्यत्व में विधिवत संल्लेखना समाधि दिन के ११.४० बजे णमोकार मंत्र सुनते हुए पूर्ण की।

हम तथा हमारी समाज उनके लिये श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं। इसी प्रकार यहाँ पर प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री विश्वदृष्टा सागर जी को भी समाधि दिनांक १९ दिसम्बर २०१८ को मुनि श्री प्रांजल सागर जी के निर्यापकत्व में हुई थी।

श्रमण संबोधनी संस्कृत टीका का समापन

२१ दिसम्बर २०१८ को आचार्य भगवन प.पू. कुन्दकुन्द देवे ग्रन्थ शील पाहुड पर प.पू. श्रमणशिरोमणी साहित्य राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा लिखी गई संस्कृत टीका श्रमण संबोधनी का समापन शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी के स्वर्ण भद्र कूट पर १००८ भगवन श्री पार्श्वनाथ जी के चरणों में चतुर्विध संघ एवं समाज श्रेष्ठी श्री आर.के. जैन मुम्बई श्री ज्ञानचन्द्र जी झांझरी, भी भंवरलाल जी, राकेश कुमार जी मालपुरा संघपति श्री देवेन्द्र जी जैन मधुवन सहित अनेकों श्रद्धालुओं की गरिमामयी उपस्थिति प्रात: काल १० बजे की शुभ बेला में महोत्सव पूर्वक किया। प.पू. गणाचार्य श्री ने ससंघ २१ दिसम्बर से २४ दिसम्बर तक भीषण सर्दी में पर्वत पर भगवान के चरणों की टोंको की १० वंदनाएँ की तथा शीत लहर टोंको की चट्टानों पर बैठकर समायिक कर शीत परिषह को सहन किया।

देवेन्द्र जैन, मधुवन

प.पू. आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के रजत समाधि वर्ष महोत्सव का हुआ शुभारंभ

२९ दिसम्बर २०१८ को शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी में प.पू. निमित्त ज्ञानी आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के २४ वे समाधि दिवस पर प.पू. स्थविराचार्य श्री संभवसागर जी महाराज एवं आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के परम प्रभावक सुशिष्य श्रमण शिरोमणी, आध्यात्म सूरी विशाल चतुर्विध संघ के संघाधिपति प.पू. राष्ट्रसंत

गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ १०८ पिच्छी के पावन सान्निध्य में रजत समाधि वर्ष महोत्सव के अवसर पर २९ दिसम्बर से २ जनवरी २०१९ तक ५ दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दिनांक २९ दिसम्बर को प्रातः आ. विमलसागर जी की समाधि स्थल पर श्री तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री शिखर चन्द्र जी पहाडिया द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। समाधि स्थल पर आ. श्री विमलसागर जी की भूति एवं चरणों का शान्तिधारा पूर्वक अभिषेक पूजन विधान, सहस्त्रनाम स्तोत्र, जाप, भजन संध्या आदि सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। ३१ दिसम्बर २०१८ को तेरह पंथी कोठी मधुवन विनयांजलि सभा एवं २ जनवरी को समापन के अवसर शोभायात्रा निकाली गई। इस अवसर पर श्री आर.के. जैन मुंबई, श्री चिन्तामणी जी जयपुर श्री शिखर चन्द्र पहाड़िया, श्री ज्ञानचन्द्र जी झाझरी, श्री मनोज जी धनवाद, लाजपत जी आदि अनेक भक्त गणों ने देश के कोने-कोने से आकर प.पू. आचार्य श्री विमलसागर जी के प्रति अपनी आस्था श्रद्धा रूपी विनयांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में आचार्य श्री निरंजन सागर जी, आचार्य श्री तन्मय सागर जी आचार्य श्री धर्मभूषण जी उपस्थित थे।

शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी में श्री विराग सम्यग्ज्ञान पाठशाला की स्थापना

दिनांक ६ जनवरी २०१९ को शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी मधुवन में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में श्री स्याद्वाद युवा क्लव मधुवन द्वारा श्री अणिन्दा पार्श्वनाथ मंदिर में युवाओं ने ५३ वें साप्ताहिक अभिषेक पूजन का आयोजन किया। जिसमें भगवान पार्श्वनाथ के अभिषेक के पश्चात् प.पू. गणाचार्यश्री के श्री मुख से शान्तिधारा का वाचन सम्पन्न हुआ तथा प.पू. गणाचार्य श्री की अष्ट द्रव्य से पूजन की गई। तत्पश्चात सर्वाधिक अभिषेक पूजन में भाग लेने वाले युवाओं का स्याद्वाद युवा क्लव द्वारा सम्मान किया गया।

इस अवसर पर प.पू. गणाचार्य श्री ने अपने अमृतमयी प्रवचन में स्याद्वाद युवा क्लव के द्वारा युवाओं में अभिषेक पूजन के संस्कार दिये जाने के प्रयासें की सराहना करते हुए छोटे बच्चों में भी धार्मिक संस्कारों हेतु पाठशाला प्रारंभ करने की प्रेरणा दी जिसके फल स्वरूप पाठशाला के संचालन हेतु आठ महिलाओं ने स्वेच्छ से अपने नाम दिये। जिन्होंने ६ जनवरी २०१९ की शाम से विधिवत पाठशाला प्रारंभ की। स्याद्वाद युवा क्लव द्वारा श्री विराग सम्यग्ज्ञान पाठशाला के नाम से पाठशाला संचालन की घोषणा की गई।

शाश्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी में प.पू. राष्ट्रसंत गणा. श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज के पावन सान्निध्य में सम्पन्न विधान

२८.७.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	श्री अशोक कुमार भंवरलाल जी, मालपुरा
२८.७.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री महावीर विधान	बा.ब्र. श्री प्रदीप भैया, इन्दौर
९.८ से १६.८.१८	तेहर पंथी कोठी	श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान	श्री राजेन्द्र जी मोदी, परिवार
९.८ से १३.८.१८	तेहर पंथी कोठी	श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान	श्री आर.के. जैन, भोपाल
१७.८.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	श्री राजेश जैन शालीमार गार्डन, देहली
१९.८.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री शान्तिनाथ विधान	श्री सगुनचन्द्र लक्ष्मीनारायण आमोल
२५.८.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री रक्षाबन्धन विधान	चातुर्मास व्यवस्था समिति
३१.८.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री शान्तिनाथ विधान	श्री अशोक कुमार शान्तिदेवी मालपुरा
१.९.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	केकड़ी जैन समाज
२.९.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री विपाषहार विधान	मूडवद्री पं. कृष्णराव जी हेगडे

३.९.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	खण्डवा, देवास, के श्रावकों द्वारा
४.९.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	आसाम गोहाटी के श्रद्धालुओं द्वारा
४.९.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	हिसार (हरियाणा) के श्रावकों द्वारा
४.९.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	टोंक (राज.) के श्रावकों द्वारा
८.९.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	उत्तम नगर दिल्ली समाज द्वारा
१३.९.से २३.९.१८	मध्यलोक	श्री गणधरवलय वृहद विधान	महाराष्ट्र कर्नाटक के श्रावकों द्वारा
२.१०.१८	श्री विमल समाधि	श्री विमलसागर विधान	२० पंथी कोठी प्रबन्धन समिति
२.१०.१८	सिद्धायतन	श्री भक्तामर विधान	सिद्धायतन परिवार
२.१०.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	हीरापुर आदि बुन्देलखण्ड के श्रावकों द्वारा
३.१०.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	सिकन्दरा दौसा जैन समाज
३.१०.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	चलवीर नगर दिल्ली जैन समाज
६.१० से १३.१०.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान	अंकुर कॉलोनी सागर जैन समाज
८.१०.१८	मध्यलोक	श्री सम्मेद शिखर विधान	दिल्ली से ३१८८ श्रावकों द्वारा
१४.१०. से २२.१०.१८	त्रियोग आश्रम	श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान	श्री प्रकाश चन्द्र पाटनी कलकत्ता
१४.१० से २२.१०.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान	वडामल्हरा जैन समाज
१९.१०.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान	कोटा से आये श्रावकों द्वारा
२४.१०.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	रफीगंज जैन समाज
२५.१०.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री सम्मेद शिखर विधान	श्री नरेन्द्र कुमार जैन समाज
२९.१०.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री शान्तिनाथ विधान	श्री संजय आलोक छावड़ा पटना
८.११.१८	तेरह पंथी कोठी	श्री महावीर स्वामी विधान	जयकुमार गंगवाल कोडरमा समाज
१०.११.१८	गुणायतन	श्री भक्ताभर विधान	श्री सनतकुमार सुमित कुमार रायपुर
१५.११. से २३.११.१८	सौरभांचल	श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान	आ. सुवलसागर जी की प्रेरणा से
२०.११.१८	तेरह पंथी कोठी	आचार्य परमेष्ठी विधान	तेरह पंथी कोठी कमेटी द्वारा

अहिंसा विश्व मैत्री कीर्ति स्तम्भ का लोकापर्ण हुआ

९ जनवरी २०१९ को प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में श्रमणी आर्यिका विबोधश्री माता जी की प्रेरणा से पुण्यार्जक श्री सुनील कुमार जैन श्रीमती नेहा जैन, वरायण (म.प्र.) द्वारा निर्मित अहिंसा विश्व मैत्री कीर्ति स्तम्भ श्री दिगम्बर जैन वीस पंथी कोठी के प्रांगण में समाज श्रेष्ठी श्री सुरेश जी, झांझरी कोडरमा द्वारा विधिवत पूजन एवं मत्रोच्चार के साथ आचार्य श्री निरंजन सागर जी आचार्य श्री तन्मय सागर जी, आचार्य श्री धर्म भूषण जी, ऐलाचार्य श्री विशुद्धसागर जी, बालाचार्यश्री मोक्षसागर जी, गणिनी आर्यिका श्रेयांसमती माताजी, आर्यिका सुरत्नमती माता जी की पावन उपस्थिति में भव्य लोकापर्ण किया गया।

इस अहिंसा विश्व कीर्ति स्तंभ की स्थापना प.पू. आचार्य विमल सागर जी महाराज के रजत समाधि वर्ष महोत्सव २०१९ एवं पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के २७वें आचार्य पदारोहण वर्ष पर विश्व में अहिंसा एवं मैत्री के भगवान महावीर के जिओ और जीने दो के अमर संदेश का जन-जन तक पहुंचाने के लिये की गई।

पं. जिनेन्द्र जैन, वीस पंथी कोठी, श्री सम्मेद शिखर जी

भव्यता से हुआ नगर प्रवेश

दिनांक १६ जनवरी २०१९ को प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ६० पिच्छी का भगवान श्री शीतलनाथ जी की जन्म भूमि भद्दलपुर इटखोरी (झारखण्ड) में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। अजैन बाहुल्य नगर में पू. गणाचार्य श्री का पाद प्रक्षालन, जैनेत्तर बन्धुओं ने पुष्पार्चन एवं मंगल आरती कर किया। भद्रकाली महाविद्यालय में आयोजित धर्म सभा में छात्र-छात्राओं एवं उपस्थित जन समुदाय को प.पू. गणाचार्य श्री ने अपनी अमृतमयी वाणी से धर्मोपदेश दिया एवं अण्डा मांस का त्याग, शराब सेवन न करने, अपनी आत्म हत्या न करने एवं स्वच्छता बनाये रखने का संकल्प कराया। महाविद्यालय परिवार द्वारा सभी का आभार माना।

भगवान श्री शीतलनाथ जी की जन्म भूमि पर कमल मंदिर का हुआ भव्य शिलान्यास

१८ जनवरी २०१९ को भद्दलपुर (इटखोरी) में प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ६२ पिच्छी के पावन सान्निध्य में गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माता जी की प्रेरणा से बनने वाले भगवान शीतलनाथ जी की जन्म भूमि पर कमल मंदिर का भव्य शिलान्यास सम्पन्न हुआ। प्रातः ८.३० बजे श्री का अभिषेक शान्तिधारा एवं पू. गणाचार्य श्री का पाद प्रक्षालन प्रथम कलश कर्ता श्री कैलाश चन्द्र जैन हजारीबाग द्वारा पू. गणाचार्य श्री को शास्त्र भेंट एवं मंदिर जी में रजत जिनवाणी श्री सुरेशचन्द्र, नरेन्द्र झांझरी कोडरमल द्वारा एवं ध्वजारोहण श्री कन्हैयालाल जी सेठी औरंगाबाद द्वारा किया गया। मुख्य शिलान्यास कर्ता श्री अनिल जैन अनीता जैन दिल्ली भगवान शीतलनाथ जी की वेदी के शिलान्यास कर्ता श्री सिद्धार्थ श्रीमती निधी झांझरी कोडरमा रहे नवग्रह मंदिर व चौबीसी मंदिर के मुख्य शिलान्यास कर्ता व शिलान्यासकर्ता विभिन्न स्थानों के समाज श्रेष्ठीगण रहे। धर्मसभा में कु. आकांक्षा जैन पथरिया एवं कु. प्रज्ञाजैन द्वारा भक्ति नृत्य किया गया। तारा चन्द्र जी जैन, श्री छीतरमल जी पाटनी, श्री कन्हैयालाल जी सेठी, श्री जय कुमार जी गंगवाल, श्री सुनील जी जैन, श्री विमलजी बडजात्या, श्री सुरेश जी, झांझरी आदि प्रमुख समाज श्रेष्ठियों ने पू. गुरुदेव गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर आर्शीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम के निर्देशक पीठाधीश श्री रवीद्र जी कीर्ति जी ने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर उनके प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। आयोजन समिति द्वारा सभी शिलान्यास कर्ताओं एवं सम्मानीय अतिथियों का प्रशस्तिपत्र भेंट कर सम्मान किया। इस अवसर क्षेत्रिय सांसद श्री सुनील सिंह जी भी कार्यक्रम में उपस्थित हुए जिनके द्वारा अहिंसा विश्व मैत्री कीर्ति स्तंभ के शिलान्यास का अनावरण किया गया। आयोजन समिति द्वारा उनका सम्मान किया गया। सांसद श्री सुनील सिंह जी ने प.पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट किया एवं उनके प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की । रांची, गया, हजारीवन एवं रफी गंज जैन समाज द्वारा पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट किया गया। धर्म सभा को आर्यिका विशिष्टश्री माता जी एवं मुनि श्री विशोक सागर जी ने सम्बोधित किया एवं पू. गुरुदेव के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की। अन्त में पू. गणाचार्य श्री ने क्षेत्र के विकास के लिये मंदिर निर्माण के लिये सभी शिलान्यास कर्ताओं आयोजन समिति सहित उपस्थित जनसमूह को अपना मंगल आशीष प्रदान किया। तथा मांस न खाने, शराब का सेवन न करने भ्रूण हत्या न करने तथा अपने घर मुहल्ले नगर की सफाई एवं स्वच्छ रखने का संकल्प कराया।

मोह स्वयं के प्रयास से जीता जा सकता है
अन्य के प्रयास से नहीं।
कानून से वचना सरल है कर्मों से वचना सरल नहीं।
धर्म खाने वाली दवा है पीने की दवा नहीं।

हजारी बाग में हुई भव्य अगवानी

२२ जनवरी २०१९ को हजारी बाग झारखण्ड में प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ ५८ पिच्छी का प्रथमबार विशाल चतुर्विध संघ का नगरागमन हुआ। सकल जैन समाज ने पू. आचार्य श्री शीतलसागर जी महाराज ससंघ के साथ प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज ससंघ की भव्य अगवानी की।

दिनांक २३ जनवरी को क्षेत्रिय सांसद केन्द्रीय मंत्री श्री जयन्त जी सिन्हा, पू. गणाचार्य श्री के दर्शनार्थ पधारे जिन्होंने श्रीफल भेंटकर पू. गणाचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त किया।

दिनांक २४ जनवरी को पूर्व सांसद श्री यदुनाथ जी पाण्डे धर्मसभा में पू. गणाचार्य श्री के दर्शानार्थ पधारे जिन्होंने पू. गणाचार्य श्री को श्रीफल भेंट कर तथा पाद प्रक्षालन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया तथा अपनी विनयांजलि अर्पित की।

त्रियोग आश्रम में हुआ गुरु भक्ति सभा का आयोजन

१ जनवरी २०१९ को त्रियोग आश्रम श्री सम्मेद शिखर जी मधुवन में प.पू. श्री संभव सागर जी एवं प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के पावन सान्निध्य में आशीर्वाद सभा का आयोजन किया गया। जिसमें महिला मंण्डल कलकता द्वारा मंगलाचरण एवं बालिकाओं द्वारा भक्ति नृत्य की प्रस्तुति की गई। बाहर से आये अनेक समाज श्रेष्ठियों ने श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। आर्यिका पुनीत चैतन्यमती माताजी ने दोनों आचार्यों का पादप्रक्षालन किया। पू. आचार्य संभवसागर जी ने पू. गणाचार्य श्री को शास्त्र प्रदान किया एवं पू. गणाचार्य श्री ने पू. आचार्य श्री संभवसागर जी को शास्त्र भेंट किया। आर्यिका पुनीत चैतन्यमती माताजी ने अपनी कृति 'संस्कृति की अमूल्य धरोहर' आ. संभवसागर पू. गणाचार्य श्री आचार्य धर्मभूषण जी, आर्यिका सुरत्नमती माता जी को भेंट की। श्रीमती सुमन जैन गया द्वारा दोनों आचार्यों के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित की गई। दोनों आचार्यों की अष्ट द्रव्य से भक्ति के साथ पूजन सम्पन्न की गई। आर्यिका पुनीत चैतन्यमती माताजी ने अपने गुरुदेव के प्रति अपनी विनंयाजलि अर्पित कर पू. गणाचार्य श्री के प्रति अपनी विनयांजलि में अपनी दीक्षा महोत्सव में उपस्थिति एवं पूरे वर्षायोग में व अभी तक पू.गणाचार्य श्री का आशीर्वाद एवं समस्त संघ का जो वात्सल्य मिला उसके लिये अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की पू. गणाचार्य श्री ने पू. आचार्य श्री संभव सागर जी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए उनका प्रेम वात्सल्य एवं मार्ग दर्शन को अभी तक प्राप्त हुआ। वह हमेशा इसी तरह प्राप्त होता रहे ऐसी भावना प्रकट की। बालाचार्य श्री मोक्ष सागर जी आर्यिका पुनीत चैतन्यमती माता जी की आज्ञा व समर्पण की भावना की सराहना करते हुए उन्हें अपना मंगल आशीर्वाद दिया। अन्त में पू. आचार्य श्री संभव सागर जी प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज को उनके द्वारा दिये गये बहुमान विनय की प्रशंसा करते हुए ज्ञानवृद्धि एवं संघ वृद्धि का आशीर्वाद दिया प.पू. गणाचार्य श्री के समस्त संघ एवं उपस्थित सभी को अपना अशीर्वाद प्रदान किया। त्रियोग आश्रम द्वारा पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के संघस्थ ब्रह्मचारी भैया बहिनों का सम्मान किया गया।

प.पू. स्थिविराचार्य संभवसागर जी महाराज के मुख कमलोद्भूत उदगार

१. आचार्य आदिसागर जी महाराज सात दिन में एक बार आहार लेते थे, यह पूर्णत: सत्य है।
२. मैं तो अजैन था फिर भी आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज ने मुझे केवल जैन ही नहीं मुनि बनाया और स्थिविर पद दिया।
३. आचार्य विमलसागर जी महाराज ने तो औरंगाबाद में देखते ही मुझसे कहा- कि तुम भविष्य में मुनि बनोंगे व तपस्या करोगे। उसी समय ७ प्रतिमा देकर मुझे महावीर कीर्ति जी महाराज के पास भेज दिया था।
४. आचार्य विमलसागर जी महाराज वात्सल्य की मूर्ति थे। उन्होंने ही मुझे आचार्य पद दिया था।

५. उन्होंने एक बार कहा- आचार्य सन्मतिसागर जी महाराज जैसा तपस्वी मैंने किसी को नहीं देखा।

परम पूज्य स्थविराचार्य संभवसागर जी महाराज को जब परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी गुरुदेव ने माला भेंट की तब उन्होंने कहा- मेरा सल्लेखना व्रत चल रहा है मुझे तो माला का भी त्याग करना है।

आचार्य श्री संभवसागर जी- अष्टमी-चतुर्दशी के दिन मैं नियम से उपवास भी करता हूँ और आत्मस्थ रहने का भी अभ्यास करता हूँ।

आचार्य श्री संभवसागर जी- विरागसागर जी संघ के नायक हैं मैं समाधि का साधक हूँ।

आचार्य श्री संभवसागर जी- मौन रहने में मुझे आनंद आता है।

परम पूज्य स्थविराचार्य संभवसागर जी से किसी ने कहा- आपने अन्न एवं षट्रसों का त्याग क्यों किया? तो उन्होंने कहा- इस जीव ने अनंतकाल से खाया पर पेट नहीं भरा।

परम पूज्य आचार्य संभवसागर जी महाराज ने परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज से कहा- जैसे हम लोग आज यहाँ मिल रहे हैं बाद में स्वर्ग में भी मिलेंगे फिर विदेहक्षेत्र में जन्म लेकर निर्वाण प्राप्त कर सिद्धालय में भी मिलेंगे।

एक बार जब गुरुदेव विरागसागर जी महाराज पूज्य आचार्य संभवसागर जी महाराज की गवासन से आचार्यवंदना कर रहे थे तो पू. आचार्य संभवसागर जी भी गवासन से आचार्य भक्ति पढ़ने लगे और कहा- आप भी तो आचार्य हैं।

एक दिन गणाचार्य श्री विरागसागर जी के संघस्थ किन्हीं महाराज ने उनसे कहा- मुझे आशीर्वाद दीजिये। तो आचार्य संभवसागर जी महाराज बोले- आप मुनि हैं मैं तो प्रतिनमोस्तु करूंगा।

आचार्य श्री संभवसागर जी की खांसी के समय किसी महाराज ने औषधि के विषय में कहा तो उत्तर में उन्होंने कहा- शरीर तो व्याधि मंदिर है यह कभी पूर्ण स्वस्थ नहीं रह सकता लेकिन आत्मा हमेशा स्वस्थ रहती है।

आचार्य श्री संभवसागर जी महाराज के शिष्य बालाचार्य श्री मोक्षसागर जी ने गुरुदेव विरागसागर जी महाराज से कहा- मैं यही चाहता हूँ कि मैं अंतिम समय तक अच्छी तरह से अपने गुरु की सेवा करता रहूँ।

आर्यिका पुनीत चैतन्यमति माता जी (संघस्थ आचार्य संभवसागर जी महाराज) ने पू. गणाचार्य गुरुदेव ससंघ के विहार के अवसर पर अपने प्रवचनों में कहा- आप पुन: सम्मेदशिखर पधारें और प.पू. आ. संभवसागर जी की समाधि के अवसर पर निर्यापकाचार्य बनें। (हों) ऐसी मेरी भावना है।

आयुर्वेदिक व घरेलू उपचार

कफ, खांसी, जुकाम

खांसी- बच और मिश्री चूसना चाहिए।

कफ खांसी- हरड़, पीपल, सोंठ और कालीमिर्च इनका चूर्ण गुड़ में मिलाकर खाने से कफ, खांसी नष्ट होकर अग्नि अत्यन्त प्रदीप्त होती है।

भयंकर खांसी- कालीमिर्च एक तोला, पीपर दो तोला, अनार चार तोला, गुड़ आठ तोला और जवाखार आधा तोला इनका चूर्ण खाना। जिस खांसी में रूधिर की वमन होती हो उसके लिए यह चूर्ण परमोत्म है।

जुकाम- गाय के दूध में जायफल घिसकर नाक पर लगाना इससे जवानी की फुंसियां भी नष्ट होती है।

साभार- आचार्य आदिसागर अंकलीकर परंपरा पुस्तक से

विराग वर्ग पहेली 38

उदाहरण – र वि रा ग नहीं करना चाहिए। (प.पू. गणाचार्य गुरुवर का नाम) जैसे–विराग

क	ल्य	ण	मं	दि	र	प्र	भु
ष्ट	प	ति	त	हा	म	गो	ति
रा	पा	व	पा	न	क्ता	म्टे	श
वी	मै	षा	ती	अ	भ	श	र्वि
ह्व	वि	ग	ए	स्व	पा	क	तु
म	न	रा	की	च	र	स	च
ण	आ	त	भा	प्र	सु	स	न
यो	श	वी	व	र	ण	जी	जि

विराग वर्ग पहेली 37 के उत्तर

(1) महावीर कीर्ति
(2) वीर सागर
(3) सन्मति सागर
(4) शांति सागर
(5) ज्ञान सागर
(6) बाहुबली सागर
(7) भरत सागर
(8) शिव सागर
(9) विमल सागर
(10) आदि सागर

नोट– (1) इसमें आपको कोई १० त्यौहार के नाम दिये है। आपको खोजने हैं।
(2) जहाँ उत्तर मिले वहाँ ☐ डब्बा बनाये व क्रम से नाम लिखें।
(3) उदा.- इसमें नाम आड़े, तिरछे, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर भी हो सकता है।

उत्तर भेजनेवाले का नाम व पता (स्पष्ट तथा शुद्ध)

नाम .....मो. .....

पिता/पति का नाम .....

पता .....